श्रीयुत स्वर्गीय पूज्य पिता

मास्टर पन्नालाल जी की पुण्य स्मृति

— में —

सविनय समर्पित

वीर नि० सं० २४६७ व्यथित हृदय पुत्र:-

फाल्गुण शुक्ल ११ शिखरचन्द, नेमीचंद जैन

रविवार ता० ९-३-४१

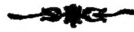
संशोधित व संवर्द्धित

सत्यार्थ यज्ञः

अर्थात्

श्रीमान् कविरत्न मनरंगलालकृत चतुर्विंशति

और वर्द्धमान जिन पूजनसंग्रह



सम्पादकः—

अजितप्रसाद, एम. ए., एल-एल. बी.

एडवोकेट, पूर्वजज हाईकोर्ट बीकानेर



प्रकाशकः—

शिखरचंद्र जैन, शास्त्री, न्यायकाव्यतीर्थ

जवाहरगंज, जबलपुर, सी० पी०



मुद्रकः—

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

साहित्य-प्रेस, जबलपुर



तृतीय संस्करण १००० } श्रीवीरनिर्वाण जैन संवत् २४६५ सन् १९३९ { सजिल्द मूल्य १)

❀ समर्पितम् ❀

❀ श्रीमते जैनधर्मभूषणाय ❀

ब्रह्मचारिणे शीतलप्रसादाय

सविनय-निवेदन



सबसे प्रथम मैं पं० अजितप्रसादजी का आभारी हूँ जिन्होंने आज्ञा देकर इसे प्रकाशित करने का श्रेय लिया। इस पूजा पाठ की अति आवश्यकता देखकर तृतीय संस्करण संशोधित व संवर्द्धित रूप में प्रकाशित किया है। पूजा का चारित्र व भक्ति मार्ग में एक अपूर्व स्थान है, यही सोचकर इस एक ही पुस्तक में नवीन प्राचीन और अनेक असाधारण (अचरी आदि) पाठों का संग्रह भी कर दिया है। दशलक्षण, षोडशकारण, अष्टाह्निका, श्रुतपंचमी रक्षाबंधन आदि अनेक पर्वों में इसी एक पुस्तक से काम चल सकता है। पंचकल्याणक की तिथियां कई जगह अशुद्ध थीं, उनके स्थान पर नीचे ही स्व० ज्ञानचंद्रजी के संशोधित पाठ के अनुसार शुद्ध तिथियों का उल्लेख कर दिया गया है। अतः पूजक पाठकों को इससे अवश्य पुण्य लाभ होगा ऐसी मेरी पूर्ण आशा है। पाठों की शुद्धियों पर विशेष ध्यान रखा गया है तौभी प्रमाद व दृष्टिदोष से अशुद्धियां रह गई हों उनके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। अन्त में श्रीजिनेन्द्रदेव से यही प्रार्थना है कि इस सत्यार्थयज्ञ व पूजासंग्रह का विशेष प्रचार एवं धर्म प्रभावना हो जिससे हमारे विज्ञ पाठकों को सुख शांति का लाभ होता रहे।

द्वि. श्रावणकृष्ण १४
वीर सं. २४६५
सन् १६३६

विनीत प्रार्थी—
शिखरचन्द्र जैन शास्त्री,
जबलपुर।

* सूची *



॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ श्रीमनरङ्गलाल कृत

चतुर्विंशति वर्तमान जिनपूजा

मंगलाचरण दोहा

अलख१ लखत, सब जगतके रखवारे ऋषिनाथ,
नाभिनंद पदपदम छांय, तिनहि नवाऊं माथ।
सिद्धारथ-कुल-गगनके२, पूरण निर्मल चन्द,
त्रिसला प्राची-दिग३ तने, सूरज तिमिर निकन्द४।
अकलंकित अंकित५ धरम, भरम भजावन हार,
परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम क्षयकार।
तुमसे तुमही जगतमें, उपमा काकी देहुं,
ज्ञान-कला दीजै तनक, पदपूजन कर लेहुं।
वर्तमान ये चौबिसों, करुणालय जिन देव,
तिनको पूजन करत हीं, रहत न भवकी टेव।

तत्रादौ नामाष्टोत्तरशतेनस्तुतिः । पद्धरि छन्द

तुम जैनपाल तुम जैन ईश, तुम जैनपती विसवाहि वीश।
तुम जैनपूज्य तुम जैन अंग, तुम जैनात्मा जीतो अनंग६

---

१ जो वस्तु सामान्य पुरुष नहीं देख जान सकते, उनके ज्ञाता। २ आकाश।
३ पूर्व दिशा। ४ अज्ञान व मोह रूपी अन्धकार को नाश करनेवाले।
५ धर्म है अंक, चिन्ह, ध्वजा जिनकी। ६ कामदेव

तुम अक्षजीत[१] तुम जीतकाम, तुम जीतलोभ आनंदधाम।
तुम रागजीत तुम जीतद्वेष, जितशत्रु नाथ निरग्रंथभेष।
विश्वांगी[२]रक्षक तुम दयाल, तुम विश्वनाथ तुम विश्वपाल।
तुम विश्वगतम तुम विश्वबन्धु, तुम विश्वपारगामी अबंध।
तुम जोगि-पूज्य[३] तुम जोग अंग[४], तुम जोगवान तुम मुक्तसंग[५]।
तुम योगीन्द्र: तुम तुमयोगिराट्, तुम योगीश्वर योगी विराट।
तुम जगतमान्य तुम जगतज्येष्ठ, तुम जगतईश तुम जगतश्रेष्ठ।
तुम जगतपिता तुम जगतकांत[६], तुम जगतवीर तुम जगतदांत[७]।
तुम जगतपितामह जगतध्येय, तुम जगतपती तुम करतश्रेय॥
तुम जगतचक्षु तुम जगतसार्थ, तुम जगद्दरशी तुम जगन्नाथ॥
तुम सर्वज्ञ: सर्वावलोक, तुम सर्व-तत्वविद् हतस्सोक[८]॥
तुम सर्वेश: हत सर्व क्लेश, तुम सर्वात्मा पूजत त्रिदेश[९]॥
तुम लोक ईश तुम लोक नाथ, तुमलोकोत्तम तुम रहितसाथ[१०]॥
तुम लोकज्ञात तुम लोकपाल, तुम लोकजयी तुम हतोकाल[११]॥
तुम हो उदार तुम मोक्षगामि, तुम मुक्तिरूपक सकल जामि[१२]॥
तुम प्रतर्क्यात्मा[१३] दिव्यदेह[१४], तुम मनःप्रेय आनन्दगेह[१५]॥
तुम क्षेमी क्षेमंकर वागीश[१६], तुम वाचस्पति तुम हो बुधीश॥

---

१ इन्द्रिय विजयी, २ सब जीवों की रक्षा करनेवाले, ३ योगियों करके पूज्य ४ तपश्चरणमें लीन, ५ परिग्रह रहित, ६ प्रिय, ७ जगतके नाशकरने वाले, ८ शोक रहित, ९ तीनलोक, १० परिग्रह रहित, ११ मृत्युका नाश करके अमर हो गए, १२ सर्वज्ञ, १३ ध्यान में न आने योग्य, ध्येय आत्मा, १४ अलौकिक शरीरी १५ अनन्त सुखस्वरूप १६ दिव्य ध्वनिके धारक।

तुम हेमवरन तुम तेजराश, तुम प्रबल प्रतापी गुणि वाश ॥
तुम निरममत्व निर अहंकार, तुम जगचूड़ामणि निराकार ॥
तुम शांतेश्वर मनहरनहार, तुम पुन्यमूर्ति दीरघविचार ॥
तुम केवलेश अति सूक्ष्मवान. अति सूक्ष्म-दरशी यश-निधान ॥
तुम अति पुण्यात्मा पुण्यशील, तुप श्रीश विरिंची१ जगश्शील२ ॥
तुम पद्मासन चतुरास्य३ श्रेय, तुम श्रेय सकल स्वामी सुध्येय ॥
तुम मौनी सूरा-सार्थ वाह४, तुम अजित देह तुम मुक्तिनाह ॥
इह अष्टोत्तरशत नाममाल, जो पढ़ै सुधी मन धरि त्रिकाल ॥
सो होय सबै बातनि निहाल, इम सत्य कहत मनरंगलाल ॥

दोहा

ये चौवीस जिनेन्द्र के, अष्टोत्तरशत नाय।
जल थल विपम स्थानमें, होत सदैव सहाय॥

इति अष्टोत्तरशतजिननामानि पठित्वा श्रीजिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

——:०:——

समुच्चय जिनपूजा

स्थापना। छन्द

मैं जानत तुम सत्य सिद्धिपति हो सही।
आवागमनहि रहित बात साँची यही॥
तदपि नाथ मैं भक्तिवशी टेरों५ यहां।
आवौ कृपा करेहि देव चौविस महा॥

---

१ ब्रह्मा, २ यशस्वी, ३ चतुर्मुख, ४ ज्ञान के अन्धे (सूर) को मार्ग दिखाने वाले, ५ बुलाऊं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः! अत्रावतरतावतरत संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः! अत्र तिष्ठतिष्ठत ठः ठः (इति स्थापनं)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः! अत्र मम सन्निहिताभवत भवत वषट् (इति सन्निधीकरणं) १

अथाष्टकं अडिल्ल

देवअपगा² को नीर सुसुरभि³ मिलायकै।
क्षीरोदधिको हंसत नाथ गुण गायकै॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करूं।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चित में धरूं॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज⁴ घसि घनसार⁵ चंद्रसम सेतहीं।
कुंकुम अगर मिलाय धरों इक खेतहीं⁶॥ वृषभ आदि०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल तद्रूप अक्षत मनको हरै।
खंडविवर्जित कांति दसौं दिश विस्तरै॥ वृषभ आदि०

---

१ उतरो, तिष्ठो, निकट वरतो, २ देवनदी, गंगा, ३ सुगंध, ४ चन्दन, ५ कपूर, ६ एक ही (क्षेत्र) जगह मिलाकर।

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन के शुभ पहुप बनाऊं चावसौं।
चंप चमेली कमल केवरो भावसौं॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्यजात[१] घृत लोलित अतिशुचिसों बनै।
घेवर बावर फेणि सुलाडु सुहावनै॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीप जगमगै दसौंदिश जोतिसों।
बाती धरि करपूर घीव भरि हूँ तिसों॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारनिवारणाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपदहन सुविशाल धूप जुत लायके।
दहिये आनन्द पाय नाथ गुणगायके॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरुके[२] वरपक्व[३] मधुर फल थार में।
भरि आंखिन को प्रेम घ्रान सुखकार में॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ उसी दिन के बने हुये, २ कल्पवृक्ष, ३ अच्छे पके हुए।

छन्द हरिगीत

लै नीर गंध सुचारु अच्छत सुभगचरु दीया लिया।
वर धूप फल अति मधुर मनरंग अरघ सुंदर यों किया ॥
सो धारि रतनन जड़ित भाजन मांहि प्रभुगुण गायके।
नमि बारबार निहार चरनन तिनहिं देउं चढ़ाय के ॥

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला त्रिभङ्गी छन्द

तुम अलख निरंजन[१] भवभय भंजन शिवतिय रंजन करम दरे।
फिर जाय विराजे शिवसुख साजे भविक निवाजे[२] गुण अगरे॥
गुण ओघ[३] तिहारे वरनत हारे सुरपति जे, मैं रंक कहा।
स्वामी सुन मेरी, शरन सु तेरी, भवकी फेरी मेटु अहा॥

त्रोटक छंद

जय नाभिनन्द कुलचंद नमों, जय देविजया[४] शुभनंद नमों।
जय संभव संभव-भंज[५] नमों, अभिनंदन जय शिव-रंज[६] नमों।
जय सुष्ठुमती[७] सुमतीश नमों, जय पद्मप्रभ धुन-ईश[८] नमों।
जय सप्तम देव सुपार्श्व नमों, जय चंद्रप्रभ गुण-पार्श्व[९] नमों।
जय पुष्पदंत भव पार नमों, जय सीतल सीतलकार नमों।
जय श्रेय हरो भवपीर नमों, विजयासुत जय सुउदीर[१०] नमों।

---

१ कर्ममल रहित, २ भव्य जीवों के कृपापात्र, ३ समूह, ४ विजयादेवी के पुत्र, ५ संसार को पूर्ण नाश करनेवाले, ६ मोक्ष में आनन्दसहित विराजमान ७ केवल ज्ञानी, ८ दिव्य ध्वनि के स्वामी, ९ अनन्त गुणाधारक, १० उत्कृष्ट

जय कंपिलया लिय जन्म नमों, जयऽनंत जिनेशनिकर्म[१] नमों।
जय धर्मजिनं धुर-धर्म[२] नमों, जय शांति हरै सब कर्म्म नमों।
जय कुंथु सुकुंथुअ पाल नमों, जय जय अरहा सुख जाल नमों।
जय मोह वली हत मल्लि नमों, मुनिसुव्रत जय निरसल्य[३] नमों।
जय लोकजयी नमिनाथ नमों, जय नेमि तजो प्रियासाथ नमों।
जय पास हरो भव फांस नमों, महावीर करो सुहुलास नमों।
जय दीनदयाल कृपाल नमों। करु दीनन को सुनिहाल नमों॥
तुम हो सब लायक नाथ नमों। शत इन्द्र नवावत माथ नमों॥

घत्ता

चौबीसौं आला[४] जिनवरवाला तिन गुणमाला कंठ धरै।
सो परम विशाला है छविसाला इह लखि मनरंग पैर परै॥

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ये जिनेन्द्र चौबीसजू, सब पर होंय दयाल।
पातक[५] नासो दीन कू, मनरंग होय निहाल॥ इत्याशीर्वादः

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः (मंत्र-जाप १०८)

——:०:——

१—श्रीऋषभदेवपूजा

गीता छन्द

नगरी अजुध्या नाभिराजा पिता मरुदेवी जने।
इच्वाकुवंश शरीर सुवरण पांचसै धनु सोहने॥

---

१ कर्म रहित, २ धर्मके चलाने वाले, ३ माया, मिथ्या, निदान इन तीनों शल्यों से रहित। ४परम पूज्य। ५ पाप।

पूरब चौरासी लाख आयु[1] चिन्ह बैल गनीजिये।
सर्वार्थ सिद्धि विमानतै चय आदिनाथ कहीजिये॥

दोहा

सो आदीश्वर जगतपति, सब जीवन रक्षपाल।
मुक्ति रमाके कंथवर, आओ इहां विशाल॥

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र। अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणं)

द्रुतविलंबित

परम नीर सुगंध नियोजितं, मधुर वाणिन भौंर सुगंजितं।
कनक भाजन लै भरि हाथमें, करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथमैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन बावन थाम घसो भयो। हिमपरा[2] सुभमिश्रित सो लयो।
कनकपात्र भरौं धरि हाथनमैं। करि त्रिशुद्ध[3] जजौं रिषिनाथ मैं।
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अमल अक्षत राजन भोगके। मुलक[4] लज्जित तज्जित सोकके।
सुभग भाजनमें लै हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
कलप पादपते[5] उपजे भये। परमगंध प्रसारित ते लये।
हरष पूर्वक लीजिये हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ आयु, २ कपूर, ३ मन, वचन, कायकी शुद्धि, ४ मोती, ५ वृक्ष,

चतुर चारु पचावत भावसों। घृत सुपूरित अमृत चावसों।
अमिय मय लडुवा धरि हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषनाथमें॥
ओं ह्रीं वृषभनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रतनदीपक देत उदोत ही। दशदिशा उजियार सो होत ही।
प्रभु तनै लखि धारि सुहाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
उठत धूम घटा चहुं ओर तैं। भ्रमत भूरि[१] अली[२] सब छोरत।
दहन धूप लिये इम हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं वृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मधुरसा रसना सुखदाय जो। क्रमुक[३] श्रीफल[४] सुन्दर लायसो॥
इम फलौघ[५] लिए शुभ हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
करि सु ये इकठीं दरबैं सबै। धरत भाजन मैं अति सो फबैं[६]॥
अरघ सुंदर लेय सो हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

सर्वार्थसिद्ध विमान तजि आषाढ़ वदि द्वितिया दिना।
मरु देविके सो गरभ आये रंजितं[७] सिगरे जना॥
हमहूं इहां अब अरघ ल्याय बजाय तूर सुछंदसों।
गुण गाय गाय सराहि[८] तुम छवि जजौं अतिआनंदसों॥

---

१ बहुत, २ भौंरा, ३ सुपारी, ४ बेलफल, ५ फलों का ढेर, ६ अच्छी लगें, ७ खुश हुए, ८ भला समझते हैं।

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय आषाढकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

मधुमास१ वदि नौमी दिना जनमें भये अति सोहिला ।
पूजे तुम्हें इन्द्रादि ने ले जायके पांडुशिला ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्व०

वदि चैत नौमी स्वयं दीक्षित भये प्रभु शुभ भावसों ।
सुर असुर नरपति सकल तहं पूजे तुमहिं अति चावसों ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं निर्व०

फगुन वदी एकादशी शुभ ज्ञान केवल पाइयो ।
सुर रचित हाटकपीठपै२ धर्मोपदेश सुनाइयो ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चौदस वदी शुभ माघकी कैलाश ऊपर जायके ।
निरवान हूवो करी पूजा इन्द्र ने चित ल्यायके ॥ हमहं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

त्रिभंगी छंद

जय जय गुणधामं, दरशन वामं३, जीतो काम लोभं ते ।
जय जय दुखहारी, सुयश विथारी, करुणाधारी, जैनपते ॥
जय जय नाभि नंदन कलुषनिकंदन भविजनवंदन गुणअगरे ।
जयजय मनरंग भनि, सुजसहि सुनि सुनि अधमतारि पुनि आपतरे ॥

नाराच छंद

दिनेशते अधिक तेजकी महान राशि हो ।
कमोदिनी भवीन के भले सुधानिवास४ हो ॥

---

१ चैत्र; २ स्वर्ण वेदी; समवसरण; ३ आनंद; ४ चंद्र ।

नमो नमो रिषीश तोहि काम के निवार हो ।
कलंक पंक छालने१ सदा घटा२ अकार हो ॥ १॥
प्रवीन हो, प्रतापवान, सर्व के सुजान हो ।
गणी फणी अणीस के सदैव एक ध्यान हो ॥ नमो नमो ॥ २ ॥
अनादि हो अनन्त ज्ञान केवल प्रकाश हो ।
निरक्षरी धुनीश नाथ मोदके निवास हो ॥ नमो नमो ॥ ३ ॥
कृपाल धर्मपाल दीनपाल काल - नाश हो ।
अनेक रिद्धि के धनी महा सुरूपवास हो ॥ नमो नमो ॥ ४ ॥
प्रवीन हो पवित्र हो भवाब्धि ३ पारगामि हो ।
निहालके करनहार ईश सर्व जामि ४ हो ॥ नमो नमो ॥ ५ ॥
अलोक लोक लोकने विशाल चक्षुवान हो ।
महान दीप्तिवान मोह शत्रु को कृपान५ हो ॥ नमो नमो ॥ ६ ॥
गुणौघ ६ रत्नके प्रभू अपार पारवार हो ।
भवाब्धि डूबतें तिन्हें अजान बाहुधार हो ॥ नमो नमो ॥ ७ ॥
सदैव मोक्षधाम के संजोग के सिंगार हो ।
कछूक ऊन ७ देहते सुज्ञान के अकार हो ॥ नमो नमो ॥ ८ ॥
चराचरा ८ जिते कहे तिन्हें दयालु छत्र हो ।
सुमनरंगलाल के सुनेत्र के नक्षत्र हो ॥ नमो नमो ॥ ९ ॥

---

१ हटाने को, २ वर्षा, ३ संसार-सागर, ४ सर्वज्ञ,
५ तलवार, ६ गुणसमूह, ७ कम,
८ त्रस, स्थावर ।

घत्ता

जय जय गुणधारी, मायाहारी, विपति विदारी, जसकरणं ।
जय सुखसंचारी, परमविचारी, अधमउधारी, तुमशरणं ॥१०॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीता छन्द

जो करे मन वचन तन सुपूजा आदिनाथ प्रभू तनी ।
सो इन्द्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री पद्द पावै यों भनी ॥
फिर होय शिवतिय को धनी सुअनन्त सुख को भोगता ॥
जरमरन आवागमन होय न, होय सहज निरोगता ॥

इत्याशीर्वादः ।

" ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय नमः " (अनेनमन्त्रेण जाप्यं दीयते)

——:०:——

२–श्रीअजितनाथ पूजा

स्थापना, गीता छंद

अमरकृत नगरी विनीता१ शत्रुजित राजा तहां ।
विजय नाम विमानतजि विजया तने सुत भे इहां ॥
गज चिन्ह अजित सुवरन तनु धनु चारसै साढ़े गनो ।
सत्तर औ द्वै लख पूर्व आउप वंश इक्ष्वाकै भनो ॥

१अयोध्या ।

दोहा—अजितनाथ जिनदेव को बारबार सिरनाय।
आह्वानन करियत इहाँ, प्रभु गुण रूप सराय॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्र! अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)॥ अत्रममसन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)॥

मालिनी छंद

फटिकमनि समानं, मिष्ट ओदक१ सुआनै।
भरि पुरट२ सुकुंभं देखही प्यास भानै॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन बहाऊं॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लै सुभग रकेबी धारि तामें पटीरं३।
मधुकर है लोभी जे भ्रमैं आय तीरं॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकृत४ जनित मानो चारु५ तंदुल बनाये।
उठत छटा छहरै देखि नयना लुभाये॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कलपरुह६ सुपुष्पं गुंजितं भौंर भारी।
लखत वरन नाना घ्रान नयना सुखारी॥ अजित०

---

१ जल, २ सुवर्ण, ३ चंदन, ४ पुण्य से उत्पन्न, ५ अच्छे, ६ कल्पवृक्ष।

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षटरस परिपूर्ण वेश व्यंजन बनाये ।
अधिक सुरभि सर्पी १ भूख विन सो सुहाये ।। अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि के शुभ दीये दोय हाथान लीये ।
वहु करत उदोतं अन्धकारं विलीये२ ।। अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

करम दहन अर्थं ल्याय धूपं सुगन्धं ।
लखि गंध दुरेफा३ देत दच्छिना सुछंदं ।। अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल ललित सुहाने पक्व मीठे सुजाने ।
तजि सकल अजाने ४ दिव्य भावान आने ।। अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष-फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलचन्दन सुअक्षत पुष्प नैवेद्य दीयो ।
वरधूप फलौघा अर्घ सौंदर्य्य कीयो ।। अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

जेठ अमावस के दिना गर्भस्थित जगदीस ।
तास चरणको अर्घसे जजूं नाय निज शीस ।।

---

१ सुगन्ध फैलानेवाले (सुगन्धदार) २ नाश किये, ३ भौंरा, ४ बिना जाने फल ।

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णामावास्यायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

माघ वदी दसमी दिना, महिमंडल पर जात[1] ।
अरघ लेय शुभ हाथसों, पूजत पातिक जात ॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं ।
(यहां माघ सुदी १० पाठ शुद्ध चाहिये)

माघ वदी दसमी कही, ता दिन दीक्षा लेत ।
अजितप्रभूको अर्घ ले, पूजूं भावसमेत ॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णादशम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।
(यहां माघ सुदी नवमी पाठ होना चाहिये)

पूष सुदी एकादशी, ता दिन केवल पाय ।
जगतपूज्य के चरनयुग, पूजूं अर्घ बनाय ॥

ओं ह्री श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय पौषशुक्लैकादश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चैत्रसुदी पाचैं दिना, सम्मेदशिखरतें वीर ।
अव्ययपद प्रापति भये, मैं पूजूं धर धीर ॥

ओं ह्री श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

त्रिभङ्गी छन्द

जय जिनवर दूजा सुरपति पूजा[2] तो सम दूजा और नहीं,
जय घट घट प्रघट[3] दिगकीन्हे पट[4] निपटकठिनपट[5] धरत सही।

---

१ पृथ्वी पर जन्म लिया, २ जिसकी इन्द्र ने पूजा की, ३ सर्व द्रव्य को केवल ज्ञान से प्रकाशित किया, ४ दश दिशाही को वस्त्र बनाया दिगंबर, ५ पट, घरो तप किया,

जय शिवतिय किय बस लेत अधरस्म प्रसरित१ भूजस किमकहिये२
जय जय गुणसीमा३ बड़ी महीमा दरसन हीमा दुःख दहिये४।

चौपाई

जय जय अजित धरम-धुरधारी५। बिनकारन जग बंधव भारी॥
जय मदमोचन६ लोचन ज्ञाना७। देखत लोकालोक महाना॥
कामपंक नासन८ भगवाना। प्रलयकाल के मेघ समाना॥
देखत तुम पातिक नसजाई। गरुड़लखे ज्यों व्याल पराई९॥
चिन्तामनी कहा तुम आगे। परसुखदाई आप अभागे१०॥
आपु तरे तुम औरन तारे। इह उपमा तुम कहत पुकारे॥
कहत कल्पतरु तुम सम कोई। तुम आगे सो कछु नहिं होई॥
वह थावर अरु काष्ठ विचारा। तुम अनन्त महिमा गुणधारा॥
सूर चँद जे कहे अनेका। तुम पटतर११ नहिं है में एका॥

---

१ जिनका यश तीन लोक में फैल रहा है, २ हम कहां तक वर्णन करें, ३ गुणों की सीमा, हद, अनन्त-गुण-धारक, ४ जिन के दर्शन ही से दुःख का नाश हो जाता है, ५ धर्म की धुरा को धरने वाले, धर्म को चलाने वाले, ६ मद, मान को त्यागने वाले, ७ ज्ञान चक्षु के धारी केवल ज्ञानी, ८ काम की कीच को नाश करने के लिये प्रलयकाल के मेघ के समान ९ जैसे गरुड़ को देखकर सांप भाग जाते हैं, १० चिंतामणि रत्न दूसरे को मनवांछित वस्तु देता है किंतु आप तो अभागा, पाषाण है, उसकी तुमसे क्या उपमा दी जाय, तुम तो अपने और सारे संसार के कल्याण के कर्ता हो, ११ बराबर।

ज्ञानसूर[1] आनन[2] तुम चन्दा । अहिनिश रहत सदैव अमंन्दा ॥
कँटक सहित कमलदल सारे । पद तुम दोष कँट है न्यारे[3] ॥
यातैं कमल कछू नहिं कहिये । तुम पद आगे कहा सरहिये ॥
तुम पद तट[4] लोटत शिवनारी । करत आलिंगन भुजा पसारी ॥
तिनको धोक देत जो कोई । मुकति रमनिको भरता होई ॥
पारस पत्थर कंचन करै । वो क्या अधिक बातको धरै ॥
तुम पद भेंटत दीन दयाला । तुम सम सो होवै ततकाला ॥
करम चक्रपर चढ़ि यह जीवा । भ्रमत चहुँगति माहि सदीवा ॥
ताहि उतारन तुम ही देवा । समरथ जानि करौं पद सेवा ॥
यातैं नमो नमो जिनराई । नमो नमो मम होउ सहाई ॥
इह विनती कर जोरै करौं । भवसागर अबके नहिं परौं ॥

घत्ता

इह वर जयमाला अजित प्रभूकी कंठमांहिं जो नर धरसी ।
करसी सो अति सुख मेट सकल दुख भवसागर फिर नहिं परसी ।
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीड़ित छंद

जो या श्रीअजितेशपाद जजि है कृत्कारितानुमोदना ।
सो धान्यादिक पुत्र मित्र वनिता पावै सदा पावना ॥

---

१ तुम ज्ञानरूपी सूर्य हो २ तुम्हारा मुख, चन्द्रमा जैसा शोभायमान है । चांद सूर्य तो दिन और रात को छिप जाते हैं परन्तु आप सदा प्रकाशमान रहते हैं ३ कमल में तो कांटा है परन्तु आपके चरण निर्दोष हैं । ४ चरणों के पास ।

आयू हो विपुला[1] अरोगतनुता[2] आवैनश्रीपार्श्वतैं[3]
पाछे तैं शिव धाम जाय शुभके संगै सूख सास्वतैं ॥
(इत्याशीर्वादः)

"ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं ॥

—:o:—

३ श्रीसम्भवनाथ पूजा

गीता छन्द

नगरी सावित्रि पितु जितारि सुसैन माताके घरे ।
ग्रैवेकतैं संभव सु हूवे तन सु कनक प्रभा धरे ॥
उन्नतधनुष कहि चारि शत इक्ष्वाकुवंश शिरोमणी ।
लखपूर्वसाठि विशाल आउष बाज४ चिन्ह तपोधनी ॥

दोहा

सो संभव भव भ्रमन हर मुकति तिया गलहार ।
इहां विराजो आनि तनि सो पै ह्वै किरपार ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)

अष्टक त्रिभङ्गी छन्द

लै घनरस चोखा, गंध न दोषा, अमल अदोषा मुनि मन सो ।
कंचनके घट भरि, बहु१ विनय धरि, कमलपत्रकरि छादित सो ॥

---

१ दीर्घ आयु २ शरीर में रोग न हो ३ लक्ष्मी कभी उनके पास से न जावे,
४ घोड़ा,

संभव ढिग ल्याऊं, बहु गुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं, हरषि हिये।
जासों शिवडेरा, क्रम निवेरा, होय सवेरा आश किये॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति।

तिलपरण१घसाऊं, कुंकुम ल्याऊं, ताहि मिलाऊं शुभ चितसे।
भरि रतन कटोरा, दहदिशि छोरा, गुंजत भौंरा अति हितसे॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वर जान्हवी२ तोयं३, सिंचितहोयं. तंदुल सोयं बहु उजले।
तिन उज्जलताई, चन्द्र न पाई, क्षीरउदधि को हंसत भले॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

सुमनादिक सुमना, चुन अति नीके, कहे शास्त्र मधि लावन सो।
कंचन के भाजन, भर शुभ भावन, महा सुहावन पावन सो॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेंद्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खासे से पूवे, गोघृत हूबे, पत्री हूवे मधुर बड़े।
तिनकी मधुराई, वरनि न आई, सुधा लजाई निज मनहे।
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रींश्री संभवनाथजिनेंद्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ चंदन, २ गंगा, ३ जल,

दीपक कर धरिके, घृत भरिके, बातिक करके अति अरती।
घटपट दरसावत, तिमिर नशावत, जोति जगावत सुख करता।
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश अंगी धूपं, अति शुचिरूपं, ल्याय अनूपं भावकरें।
धूपंदह मांही, दहन कराहीं, दिग महकाहीं धूपकरें॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जालीफल१ एला २ फल ले केला, नालीकेला आदि घनें।
शुभगुंब पियाला, अवर रसाला३, भरि२ थाला कनक तने॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संबर४ भद्रम्बर, शाली५ सितसर, सारंगप्रिय६ अरविंजनलै।
वसु७ सारंग वासा, धूप सुवासा, फल इम अरघ सुहावनलै॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकर छन्द

फागुन असित पक्ष अष्टमीको गर्भस्थिति नाथ।
श्री आदि षट्कुलवासिनी अरु रुचिकवासिनि साथ॥

---

१ जायफल २ बड़ी इलायची ३ चटनी मोठी ४ जल ५ अक्षत ६ भौरे को प्रिय ऐसा पुष्प ७ दीप किरण।

करि प्रश्न उत्तर देत माता सुगरभ तुम परताप।
हम अरघ ल्याय सुपाद पूजत हरौ मो सिग पाप ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

(यहां फाल्गुन सुदी अष्टमी शुद्ध पाठ है)

कातिक सुदी शुभ पूर्णमासी जनम होत महान।
मिथ्यात तमके हरनको जनु प्रगट भूपर भान ॥
रचि नीद्माया मातको लेलीन शचि निजअंक[१]।
मैं अरघ सों तुम जजौं जुगपद करहु मोहि निसंक[२] ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कार्तिकशुक्लापूर्णिमास्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

अगहन महीना पूर्णमासी के दिना भगवन्त।
चढ़ पालकी पर जाय वन कच लोच करत महन्त ॥
सब डार जगको भारि भारहि[३] होत नगन शरीर।
मैं अरघ ले पद कँज पूजों हरो संभव पीर ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अगहनशुक्लापूर्णिमास्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं।

कातिकवदी शुभ चौथके दिन ज्ञान उपजत जानि।
समवशरन विशाल अनुपम रचत धनपति आनि ॥
तहां बैठि आनन चारि सोहत है सुदंदुभिवाज।
वह रूप मन वच सुमिरके लै अर्घ पूजत आज ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्रायकार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं।

माघशुक्ल षष्ठी समेदतैं लियो सिद्धथानक जाय।
तहँ अंगवर्जित अलखमूरति ज्ञानमय शुभपाय ॥

---

१ गोद। २ शंका रहित। ३ भाड़ में

नहिं होत आवागमन तहं तें रहैं सुख में पूर।
जिन चरनको ले अरघ पूजौं होव संकट दूर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं।

जयमाला—झूलना छन्द

अष्टमदमत्त-गजजेहरतसुखजलज १ तोरि तिन दन्त तुम करलसूने।
धन्य भुजदंड धरप्रवर २ परचंड-वरध्यान मयखड्ग गहिकरमलूने ३ ॥
सिद्धि अतिदुग्ग ४ थलजीति हूवै अचल अन्तकी देहतें कछुक ऊने।
अरज मनरंगकी नाथ सुनिये तनक होय तव भक्तिमो भाव दूने ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द

नमो जय नमो जय सुसैना के नन्दा।
सु आसा हमारी चकोरी के चन्दा ॥
करो नाथ दाया कहौं हूँ सुटेरी।
प्रभू मेंटिये दीनता आज मेरी ॥ १ ॥
न देखे तिहारे भले पाद-पद्मा।
महामोह के मूल आनन्द सद्मा ५ ॥
सुयाते भई मोहि संसार फेरी। प्रभू ॥ २ ॥
बसो हूँ चिरंकाल नीगोद माहीं।
धरे भौ जु अन्तार माहूर्त माहीं ॥
छ तीनैक ६ तीनैं छ छ अङ्क हेरी। प्रभू ॥ ३ ॥

---

१ कमल, आठ मदरूपी जो दिग्गज सुखरूपी कमल को नाश करते हैं, उनके दांत तुमने तोड़ डाले, अर्थात् अष्टमद का नाश किया २ कठिन ३ नाश किये ४ कोट, किला, ५ घर ६-६६३३६, भव अन्तर्मुहूर्त में धरे।

अनंतेहि भागै कहे भाखरा के।
कह्यो ज्ञान एतोहि ताके विपाके १ ॥
कह्यो हू तही आति बावार केरी ।प्रभू॥ ४॥
तहां पंचधा भेद मैं दुःख भारी।
सहे जो कही जात नाहीं सम्हारी ॥
भयो दीन यों पाप की संचि ढेरी। प्रभू॥ ५॥
भयो संख आदी गिड़ोवा द्विइन्द्री।
पुनः खान-खज्जूर हूवो तिइन्द्री ॥
द्विरेफादि द्वै चारि इन्द्रीय हेरी ।प्रभू॥ ६॥
महामच्छ की आदि पर्य्याय पाई।
करी भूर हिंसा कही नाहिं जाई ॥
मर्‍यो नर्क में जाय कीन्हीं न देरी ।प्रभू॥ ७॥
तहां छेदना भेदना ताड़नाई।
तपायो गयो शूल सेज्या पड़ाई ॥
इन्हैं आदि दे कष्ट पाये घनेरी ।प्रभू॥ ८॥
बसो गर्भ में आयके मैं कहूँ क्या।
बँधे अंग सारे मुख औंधा करूँ क्या ॥
रहयो भूलि ह्यां कर्म के जाल घेरी। प्रभू॥ ९॥
भयो, यंत्रिका सों मनो तार काढ्यो।
तहां मोहि ऐसा बड़ो दुःख बाढ्यो॥

---

१ असंख्य ज्ञान कला अक्षर के अनंतवें भाग होती है।

भई बालअवस्था मनोग्या १ न नेरी । प्रभू ॥१० ॥
युवा वय भई कामकी चाह बाढ़ी ।
वियोगी भयो सोगकी रीति काढ़ी ॥
न देखे तुम्हें हाँ भले चित्तसेरी । प्रभू ॥ ११ ॥
जरा-रोगने घेरके मोहि कीन्हो ।
महाराज रोगी भलो दाव लीन्हो ॥
झड़यो ज्यों पको पान कालानिलेरी २ । प्रभू ॥ १२ ॥
कोई पुण्य से देवको पद्द लीनो ।
वहाँ जायकै मैं भयो देव हीनो ॥
लह्यो दुःख मत्सर ३ न भाषे बनेरी । प्रभू ॥ १३ ॥
भ्रम्यो चारिहूँ ओर साता न पाई ।
तिहारे बिना और को मो सहाई ॥
यही आनिके काटि दे कर्म-बेरी । प्रभू ॥ १४ ॥

घत्ता

संभव जयमाला, नासत काला, आनन्द जाला कंठधरे ।
सोविद्याभूषण, नासै दूषण, सिवतियसँग नित भोगकरे ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा— संभवनाथ प्रसाद तें, होउ सकल सुख भोग ।
पुत्र पौत्र परताप जस, सुरगश्री संजोग ॥ इत्याशीर्वादः

"ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ॥

---

१ समझ २ जैसे पत्ता हवा से गिरे वैसे काल निमित्त से शरीर त्याग किया
३ ईर्षा का दुःख

४ श्री अभिनन्दननाथ पूजा

स्थापना, गीता छंद

अवधि[१] नगरी नृपति संवर सिद्धिअर्था है त्रिया।
कपि चिन्ह वंश इक्ष्वाकु अभिनंदन सुजा के सुत प्रिया॥
वपु[२] वरन सुवरन धनु उंचाई तीनसो साढ़े कही।
तजि विजय नाम विमाण लख पंचास पूर्वायु लही॥

सोरठा

तजि सब जंगत समाज, भये लोक चूड़ामणी।
अभिनन्दन महाराज, करि करुणा यहां आव अब॥

ओं ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्र अत्रावतरावतर सम्वौषट् (इत्याह्वाननं)।

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनं)।

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधी करण)॥

अथाष्टकं गीता छन्द

जल पद्म हृदको[३] ल्याय उज्जल कनक घट भरवाय के।
दे धार तुम पद-पद्म को अति मन अनन्द बढ़ाय के॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिव[illegible]
संसार पण[४] विधि हमभिनन्दन नाशिये [illegible] जई॥

ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगा[illegible]

१ अजुध्या २ शरीर ३ तालाब ४ पाँच

गोशीर[1] कृष्णा-अगरु घसिके केसर[2] ल्यावहूँ ।
घसवाय करि कनककटोरी नाथ पदहि चढ़ावहूँ ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तंदुल प्रक्षाले नीर प्रासुक खरे भरिके थाल में ।
चंद्रकान्ति समान तिनसों करौं पूजा सार मैं ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंद चंपक राय वेला कुंज और कदंबके ।
ले फूल नाना भांति तिनसों जजौं पद अभिनंद के ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोछीर तंदुल सरकराजुत फेनि शतछिद्रा[3] घनी ।
छवि क्षुधारोग नसात तिनसों पूजहूँ जगके धनी ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनकदीपो सुरभिसर्पि[5] कपूरबाती बारिके ।
सब दिशा करत उद्योत तासों जजौं पद हितधारिके ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

वर धूपदहमें धूप धरि बहु धूमकरि सुदिशावली[4] ।
भरपूर महकत जजौं प्रभुपद जले मोहमहाबली ॥ अघद्रव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ कमल की समान गंधवाला चंदन २ केसर ३ घेवर ४ दिशाओं में ५ घी ।

दाखफल अरु केमगी वर रक्तकुसुम दशांगुली १ ।
भरिलेविशाल सुथाल मुनिपद जजौं जोरि करांगुलीश॥ अवद्रूव्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल गंध अक्षत फूल चरुवर दीप धूप फलौघ लै।
शुभअरघसों पदकमल पूजत करमगणजासों जरे॥ अनर्घ्य ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद

गरभस्थिति महराजा वैसाखसित अष्टमी दिना कैसे।
जिमि सीपी मधि मुक्ता राजै अभिनंदनप्रभू वैसे॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्रायवैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं
(यहां वैशाखसुदी ६ शुद्ध पाठ चाहिये)
माघसुदी चौदसि द्वो उग्यो अखंड प्रतापधीर सूर।
जगमिथ्या तम सारो निज किरनतैं कीयोदूर॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय माघशुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।
माघशुक्ल द्वादश दिन द्वादश भावन भाय प्रभू मनमें॥
योगाभ्यास सम्हारा तज गृह जाय बसे बनमें॥
ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथजिनेंद्राय माघशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं।
पोषसुदी भूतादिन ३ केवलपद लहि है महाज्ञानी।
चतुरानन मनभावन जगपावन४ करत सुखखानी॥

---

१ जायफल २ हाथों की दशों अंगुलियां जोड़ कर नमस्कार ३ चतुर्दशी, ४ पवित्र,

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय पौषशुक्लाचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वैसाख सुदी षष्ठी ज्ञानावरनादि कर्म विरमुक्तं ।
सिद्धपतिपद लीन्हो सम्यक्तादि अष्टगुनयुक्तं ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्राय वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

अथ जयमाला—छंद चौपैया ।

स्वामी अभिनन्दन के अति सुन्दर पद सरोज सम सोहै ।
है भौंरा भविजन तिन ऊपर लहि आनन्द सुखिया होहै ॥
तनक पराग१ धरे तिन तरकी सिर पावन कर जग मांहै ।
ते निसिदौस बसौ मेरे घट फिरि देखो मद अरि२ कोहै ॥

छंद सृग्विणी

जय अभिनन्द संसार को आसना ।
खूब कीन्हीं तिहूँ लोक में वासना ॥
नेक हेरो हमारी तनै हाखिमा ।
दूर हो जाय मो भाव की कालिमा ॥ १
काम जीत्यो भली भांति के देव तैं
थान लीन्हो महाध्यानके भेव तैं ॥ नेक हेरो २
क्रोध को मान को लोभ को मोह की ।
टेव राखी न माया तनी छोह की ॥ नेक हेरो ३
ध्यानमय दण्ड लै पाप फोरे सभी ।
चौथ औतार भू मांहि हूओ सही ॥ नेक हेरो ४

---

१ फूलों पर जो सुगंधित रज होती है उसे पराग कहते हैं, २ अष्ट मदों को नाश करनेवाला, अर्थात मुक्त हो जाऊँगा ।

अब्धिमंडूकिकी१ आस मो है रही।
वाहि तू स्वाति को बूंद आछोसही॥ नेक हेरो ५
अष्टकर्माटवीने२ महामित्र हो।
झूंठ कीलाल३ सूखावने मित्र४ हो॥ नेक हेरो ६
पन्च इन्द्री महाकुभ५ को केहरो६।
शक्र७ लोटै सदा आयतो देहरी॥ नेक हेरो ७
लोक में एक तू पुण्यकी है ध्वजा।
लेय जो आसरो सो करे है मजा॥ नेक हेरो॥ ८॥
झांझरी नावमो बोझ गरुवा भरी।
वायु वाहै महा अब्धि माही परी॥ नेक हेरो॥ ९॥
अन्ध को लाकड़ी ज्यां मुझे नाम ता।
डूबते धार आलम्बकै पावतो॥ नेक हेरो॥ १०॥
भो महाअब्धि के पारगामी सुनो।
कान लगाय के व्याधि मेरीलुनो८॥ नेक हेरो॥ ११॥
दीन के काज को कीजिये देर ना।
नाथ कीजे मुकति अब कहा हेरना॥ नेक हेरो॥ १२॥

घत्ता, छंद मरहटा।

अभिनन्दन स्वामी अन्तरजामी की पूरी जयमाल।
जो पढ़े पढ़ावे मनवचतनकरि सो पावे शिव हाल॥

---

१ समुद्रकी सीपी २ अष्ट कर्मरूपी ३. जल ४ सूर्य ५ हाथी ६ सिंह ७ इन्द्र ८ काटो,

तहँ बसै निरन्तर काल अनन्ते आरून अचल कहो जु।
फिरि जनम न पावे मरन न आवे जग गुण गावेरोजु१२

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा।

अभिनन्दन भगवँत, तो प्रसादते जगतजन।
सुखिया होय महन्त ईति१ भीति२ सब छांड़िके॥इत्याशीर्वादः॥

"ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

———:०:———

५ श्रीसुमतिनाथ पूजा।

स्थापना छँद गीता

कौसिला नगरी मेघप्रभु पितु मँगला माता कही।
शुभ वैजयँत विमान तज हुवे सुमति जिन सुतसही॥
पग चकव अंक इक्ष्वाकु वंश चालीस लख पूर्वायु है।
जिनकाय हाटक३ वरन धनु सौतीन को सु उचाउ है॥

सोरठा

सुमतिनाथ भगवान, सुमति देओ मो दीन लखि।
भव जल तारन जान, आय इहां तिष्ठो प्रभू॥

---

१ सात प्रकारकी आपत्ति, निजसेना, परसेना, ऊँदर, टीडीदल, शुक, अति वृष्टि, अनावृष्टि २ सात प्रकार का भय—हाथी, सिंह, सर्प, अग्नि, गद, जल, सँग्राम ३ सुवर्ण।

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)।।

छंद नाराच।

महान गंध धार नीर ल्याइये सुछीरसों।
पवित्र कुम्भ हेमके[1] भराइये गहीरसों।।
पदाब्जद्व[2] सुबुद्धिनाथके सुबुद्धि देत ही।
जजौं अनन्त दर्श ज्ञान सौख्य वीर्य हेतही।।

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

हिमोचरा सुगंध सारकैं घसी मयोवरम्।
लियाय सीतकार सा महान तप्ततापहरम्।।पदाब्ज

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् नि०।।

कहे अखंड अच्छतं पवित्र स्वेत भावही।
भरे महान थार ल्याय कुन्दको लजावही।।पदाब्ज.

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।।

गुलाब बन्धु द्वैपदा सुसेवती चुनाय के।
हजार पत्र को सुकंज[3] हेमको बनायके।।पदाब्ज

ओं ह्रींश्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् नि०।।

पचाय अन्न चारुचारु[4] थार में भरायके।
सुहाथ माहिं लेय शुद्ध भाव को लगायके।।पदाब्ज

---

(१) सुवर्ण, (२) चरण कमल (३) कमल. (४) उत्तम २

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

कपूर बाति दीप में बड़ो उदोत त्यागती ।
कहूँ न लेश धूम को महान् ज्योति जागती ॥ पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि० ।

करूं मंगाय धूपसार अग्नि के सुसन्मुखा ।
सुखारि होय आयकै सुवास लें शिलीमुखा[१] ॥ पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् नि० -

लवंग मालतो सुत शुकप्रिया[२] सुद्राखड़ी ।
निकोचकं[३] सुगोस्तनी[४] भराय थालिका बड़ी ॥पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम् नि० ।

सुवारि गंध अक्षतं प्रसूनले चरु वरं ।
सुदीपधूप औ फलं बनाय अर्घ सुन्दरम् ॥पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

सोरठा

श्रावन सित पख जान, द्वैत महादिन जान शुभ ।
रहे गर्भ में आनि पूजौं तिन पद अर्घ सों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

चैत सुदी परवान, रुद्र[५] संख्य तिथि के दिना ।
जन्म लीन भगवान, सुमति प्रभु भव भीति हरि ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लैकादश्यांजन्मकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

---

(१) भौंरा (२) अमरूद (३) पिस्ता (४) अंगूर, मुनक्का (५) रुद्र

जानि सुदी वैसाख, नौमी दिन तप ग्रहण किय।
छांडि संकल मन मास[१], जजौं अर्घ लै तिन चरण ॥
ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय वैशाखशुक्लनवम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

केवल ज्ञान प्रकाश, एकादशि सुदि चैत की।
इन्द्र रहत पद पास, मैं पूजत शुभ अर्घ सों ॥
ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं ।

चैत सुदी गण लेहु, एकादशि सम्मेद तैं।
जगत जलांजलि देय. परम निरंजन होत भे ॥
ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लैकादश्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं ।

अथ जयमाल – छन्द त्रिभङ्गी

जय दुरमति खंडन विपति विहंडन पातिक दण्डन सुमतिपती।
जय शिव सुखमंडन भव भ्रम छण्डन, जय परमेश्वर परमजती ॥
जय तुम मुख चन्दा लखि भव फंदा, लहत अनन्दा त्रिगिरिमिता[?]
जय गुण रत्नाकर शचिपति चाकर रहत निशाकर गुणकथिता ॥

छंद तोटक।

नहीं खेद नहीं मल रंच कहो, शुभ शोणित[३] क्षीर समान लहो।
बज्रवृषभनाराच सहननम्, सम चौसंस्थान भलौगननम् ॥ १
अति सुन्दर रूप सुहावत है, सहजै तन गन्ध सुभावत है।
दशसौ अरु आठ सुलक्षणते, सब विञ्जन सें सब अच्छन[४] हे ॥२
प्रभु के नहिं वीरज केरि मिता[५], प्रियवैन भले निकसै उचिता।

---

१ मनसे विकल्पत्याग करके, २ बेहद, ३ रुधिर, ४ आंख से देखनेकी विञ्जन आदि हो, ५ हद।

जनमें तब के दश जे अतिशय, अब केवल के कहिये अतिसै ॥३
बसुते कहि कोस सुभिक्ष महा, चलिवो शुभ अम्बरकोर सुमहा।
बध जीव भयो न कवौ सुनिये, न अहार कह्यो मनमें गुनिये ॥४
उपसर्ग न केवल ज्ञान भये, शुभ आनन सोहत चार लये।
सब ईश्वरता विद्यापन की, कहुं छांह न लेश परे तनकी ॥५
कल्ला २ चिकुरा३ नहिं वृद्धि कदा, पलके न लगें कहु नेकु सदा।
इम केवल ज्ञान तनो दश है अमरान करी शुभ चौदश हैं ॥६
शुभवाणि खिरे अर्ध मागधिया, तजिदें हैं सबे तहं वेर जिया।
फल फूलत वृक्ष छहों ऋतु के, जन पावत चैन सबे हितके ॥७
चले मंद बयारि ४ सुगंधमई, शुभ आरसि जेम सुभूमि भई।
और गंध मिली जलकी बरषा, तहं होत लखौ जिय मो हरखा ॥८
बिन कँटक आदिक भूमि कही, कमलों परि है मनि देव सही।
फल भार नमें सब धान्य जहां, मल वर्जित कीन्ह अकाश महा ॥९
सुर चारि प्रकार आह्वान५ करें, अतिही चितमें सुअनंद धरें।
अर शासन चक्र अगारि चले, वसु मंगल द्रव्य सुहाव भले ॥१०
प्रभुके अतिशय वर देव कृता, अपनी मति माफिक मैं उकता।
कहिये प्रतिहारज नाथ तने, सुनतेहि नसै जग फँद घने ॥११
तहँ राजत शोक अशोक द्रुमी, तसु ऊपर गुँजत भूरि अली।
बरषै सुमना सुख ऊपर के, अरु हेठ६ कह्यो सो रहै तरका ॥१२
ध्वनि दिव्य खिरे सुरि नीसरिता, इक योजन घोष मिला धरिता।
चतुषष्टि७ कहे वरचामर ही, लिय ढारत ठाढ़ि सुखावर८ ही ॥१३

(१) आहार (२) नाखून (३) बाल (४) पवन (५) शब्द करें (६) नीचे (७) ६४ (८) यक्ष

छवि आसनकी गिरी ते सुथरो, द्युतिमंडल सोभत सप्त घरी।
सुर दुंदुभि बारह कोटि बजैं, अघकोटि अधिक्क महामरजैं ॥१४
त्रयछत्र सुधाकर१ ज्यों उकता, उडुर२ से जनु सेव्य रहे मुकता।
प्र तहसज अष्टविभूति रही, तिंहधारि भये अरिहन्त सही ॥१५
करि चारिय घातिय घात जबै, लहि नंत चतुष्टय पट्ट तबै।
दर्शन अरु ज्ञान सुसौख्य बलं इन चारहु ते तुव देव अलं ॥१६
व्यवहार कहे गुण छालीस जे, निहचै नयते गुण नन्त सजे।
सुसुरेश नरेश गणेश लिजे असुरेश कहे धनईश तिते ॥१७
तुम पावन पार न एक रती, भगवान बड़े तुम हो सुमती।
विनती सुनले अपने जनकी, अब मेटु विथा६ सुगराधनकी ॥१८
धर्मान रीति कही जुग्म वाहन४ की, जग बूड़त ताहि निवाहन का।
प्रभु तो प्रभुता कवलौं कहियें, लखिके छवितो चुप ह्वै रहियें४ ॥१९

घत्ता

जिन सुमति विशाला! जगमें वाला तिन जयमाला यह सुथरी।
जो कठी करि है, आनन्द धरि है नहिं मरिहै तिहि काल अरी॥२०
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ॥

सोरठा

सुमतिनाथ सुखकार, घनद्रव७ गरजनि८ करि सहित।
वर्षो आनंद धार, भविजन खेती ऊगरै ॥इत्याशीर्वादः॥
"ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यंदीयते।

---

(१) चंद्र (२) ताराগण भरपूर (३) दुख (४) तीर्थंकरजहाज (५) ध्यान में मग्न हो जाइये (६) शत्रु (७) बादल (८) दिव्यध्वनि का शब्द

६–श्रीपद्मप्रभजिनपूजा

छन्द गीता

नगरी कुसंबी पिता धारन हैं सुसीमा मायसो ।
जिन पद्मप्रभ धरि पद्म अङ्क सुवरण तनु तुव ठाइसौ ॥
ग्रैवेयक ऊपर लौं तजो तेवीस लखि पूर्वाऊ सो ।
शुभवंश भूषित करि इक्ष्वाकु गये शिवालय१ चाउसो२ ॥

सोरठा

सोई पद्म जिनेश, धरे अङ्क पद पद्म छवि ।
आयवसो लवलेश३, प्राणन के प्यारे यहाँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्) ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्) ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्) ।

अथाष्टक छन्द चामरा

नीर ल्याय सीयरो४ महानमिष्ट सारसों ।
आनि शुद्ध गंध मेलि वेश५ तीन धारसों ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद आनि के ।
पंच भाव हेत मैं जजौं आनन्द ठानि के ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत चन्दनम् कपूर सो मिलाय धारतो ।
पात्र मों धमाय ल्याय गन्ध को पसार६तो ॥ पद्मनाथ०

---

१ मोक्ष, २ आनन्द, ३ थोड़ी देर के लिये, ४ ठंडा, ५ अच्छी, ६ फैलता हुआ।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुलम् भले सुपांडु[१] वर्ण खंडवर्जितम् ।
हेम थार में धराय चंद्रकांति लज्जितम्[२] ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच वर्ण के प्रसून गन्धता बड़ी बढ़ै ।
पाय पाय गन्ध भूरि[३] मत्तता अली गहै ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षीर मोदकादि वृन्द स्वच्छपात्र[४] में धरौं ।
भाव को लगाय पाय चैन पाप को हरौं ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूम को न लेश शुद्ध वत्तिका कपूर की ।
रत्न दीप में धराय अन्धकार दूर की ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप गन्धसार औ कपूर को मिलायके ।
धूप दाह मांहि खेय धूम को बढ़ायके ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोच[५] दन्तबीज[६] वातशत्रु[७] ल्याय के घने ।
कामबल्लभादि[८] जे फलौघ मिष्टता घने ॥ पद्मनाथ०

---

१ सफेद २शरमाती ३ घनो ४ साफ ५ केला ६ दाड़म ७ नीबू ८ आम

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय१ गंध अक्षत२ प्रसून सूप औ दिया।
धूप ले फलालिसार३ अर्घ शुद्ध यों किया॥ पद्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द शिखरिणी

वदी षष्ठी जानो शुभतर कहो माघ महिना।
बसेमाता कुक्ष्या रतन बरषे कहा कहिना॥
जजौं मैं ले अर्घं पद्मप्रभ के द्वन्द चरणा।
वसो मेरे ही मो सतत४ अबके लेहुं शरणा॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

मति श्रुतिम अवधि लसत शुभ ज्ञानं अलक्षको।
भली त्रयोदश्यां कार्तिक महीना प्राकपक्षको५॥
प्रभू जात भू पै दिनपति मनो कोटि उदितम्।
लखे जाके नित्यं भविकजलजा६ होत मुदितम्७॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

वदी त्रयोदश्यां कातिक महिना पक्ष पहिला।
तजी माया सारी बनमधि वसे छांडि महिला८॥
करे सेवा देवाधिप९ सकल९ आनंद मनसों।
जजौं मैं ले अर्घं मन वचन और शुद्ध तनसों॥

---

१ जल, २ नैवेद्यम्, ३ उमदा, ४ निरन्तर, ५ वदी, ६ भव्यजीवरूप कमल, ७ हर्षित, ८ महल, मकान, ९ इन्द्र।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

कही पूनो आछी मधुमहिनमा केरि जुदिना ।
हने घाती चारों महत शुभ ले ज्ञान सुजिना ॥
महामिथ्या रूपी तम हरण को भानु प्रगटा ।
नसें जाके देखे दुखन[1] कलुष की अविघटा ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लापूर्णमास्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदी सातैं जानौं सुभग महिना फागुन कहा ।
वड़ी संयोगम् शुभ मुक्ति रमणी सो तिन लहा ॥
करी पूजा भारी शिखर पर निर्वाणपद की ।
यहां मैं ले अर्घं जजन करिये पद्मपद की ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्यांनिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं ।

(यहां फाल्गुनवदी४ शुद्ध पाठ होना चाहिये)

छंद दंडिका

जय तन छवि छज्जै[2] रविद्युति लज्जै शरदसमय शशि इवसुखदोरु
लखि भयसिग भज्जै भविगण गज्जै[4] अनन्त चतुष्टय मय सुखतो ॥
चउ घाती चूरे गुणगण पूरे क्षपक श्रेणि चढ़ि ज्ञान लहो ।
इन्द्रादिक ध्यावत शीश नवावत सुयश फैलि तिहं लोक रहो ॥

छंद मुक्तादाम

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु जिनेश, न राखत हो तुम लेश कलेश ।
रखावनको जनकी सब लाज, धड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ २ ॥

---

१ राग द्वेष दोनों मैल, २ छाय रही हैं, ३ सुखदायक ४ आनन्दित हैं ।

न शत्रु न मित्र समान समस्त, करे कर्मादिक शत्रु निरस्त१
लियौ सब करिकै आतम काज, बड़ो प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥३॥

छः द्रव्य पंच सति काय प्रशस्त, दिखावन सूर२ सदैव न अस्त
बतावन कौ सिग तत्व समाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥४॥

पदार्थ त्रिकाल जनावन दक्ष, मनावन को शुभ आनि प्रतक्ष।
भजावन संशय संकट गाज३ बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥५॥

छः काय कही तिनके तुम रक्ष, बनाय दही४ दुखदा पन अक्ष५।
नसावन को तृष्णा अति खाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥६॥

कियो कृतपाप दूरकर अस्त, स्वरूप सम्हार भये तुम मस्त६।
सिंहासन पै अन्तरिक्ष विराज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥७॥

सुशील कृपाण लियो निजहस्त कियोपण७ सायक८ लस्तपलस्त।
लही विजगीपु९ कहों सुकहाल, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥८॥

प्रभु तुम हो अवलम्बन हस्त, निकास कियो भगवान उरस्त१०।
भवाब्धि परे जिनको महाराज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥९॥

मनीमनकी११ लखिके मनथंभ, बनी न रहे कित कोउक दंभ।

---

१ नाश, २ सूरज, ३ हाथी ४ जलाई, ५ पांच इन्द्री, ६ ध्यान में लवलीन, ७ पांच ८ कामके बाण ९ आपने जो लक्षण[illegible] उनकी महिमा कहां तक कहूं, १० दिलमें रहनेवाला, ११ मानी[illegible]—आपके समवशरण के मानस्तम्भ को देखकर मानी का मान बाकी नही रहा।

प्रताप लिहार कही सिरताज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥ १०

न होट न तालु लगै कहं रंच, धुनी निकले नहिं अक्षर संच१ ।
गणी२ परखें हरखें दुख त्याज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ ११

तजी लक्ष्मी की सबै तुम आस, सुआय रही इकठी पद पास ।
पुनीन पनेकी सुपाय गनाज३ बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १२

सुकीरत फैलरही चहुं ओर, लजावहि चंदहि कुन्दहि जोर४ ।
हराय मने मिथ्यातम आज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १३

पलोटत पाय सदा शिव तीय, कहा कथनी दिवि भांति तनीय५ ।
करो बस में मन चंचलबाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १४

न होय मुझे जब लौं शिव सिद्धि, लहौं तबलौं पदभक्ति समृद्धि६ ।
यही तनि मो सुनि लेहु अवाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १५

घत्ता

यह मुक्ति निसानी सब जगजानी आनंददा जयमाल पढे ।
सो होय अजाची मनरंग सांची फेरि न जाचक पन पकड़े ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि: ।

---

१ अनक्षरी, २ गणधर, ३ अनाजे या सुगन्ध, ४ चन्द्रमा और कुमुदिनी, ५ मुक्ति स्त्री आपके चरणों में तो स्वर्ग लक्ष्मी की क्या बात ६ ऐश्वर्य ।

सोरठा

पद्मनाथवर वीर, तुम पावन परतापते।
जग प्राणिनकी पीर रहे न जो भवभव तनी ॥

इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ॥

———:०:———

७ श्रीसुपार्श्वनाथपूजा

गीताछंद।

है पुर बनारस नृप प्रतिष्ठित माय पृथवि सुहावनी।
चय मध्य ग्रैवेक ते सुपारस देह हरित[१] प्रभा बनी ॥
धनु दो शत उन्नत काय आयुष पूर्व लख बीसी भनी।
शुभ चिन्ह सथिया लसत वंश सबनि शिरोमनी[२] ॥१॥

दोहरा।

सो सुपार्श्व शिव तिय तने चंवत अधर विशाल।
सतत हरत दुख दीन के आवो यहां कृपाल ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओं ह्रीं अत्र तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्) ओं ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधीकरणम्)

इन्द्रवज्रा

पानी अमीनान[३] लियाय मिष्ट शुद्धं भरौ कंचन पात्र शिष्टं।
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करूं होय आनंद ढेरी ॥

(१) हरा रंग (२) श्रेष्ठ (३) अमृत के समान

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा,

धू न कही सो सुरभि मंगाई, चन्दा लजै जानि जाकी सिराई, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा.

ल्याऊं महा अक्षतैं पाय साता, खंडं बिना ग्वेंड भले चदाता१, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा.

लेके खरे फूल सुगंधकारी, मीठी अली लेय पराग२ भारी, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा.

पूवा पुरी खज्जक ल्याय फेणी, लाड्डू महासुख बतास फेणी, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

दीयो कल धौत ३ जराय बाती, लायो प्रभुपास अन्धेरघाती, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा.

धूआं उठै तापर भौर सावा, गुंजै करै धूप इह भांति ल्यावा, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा.

पिस्ता सुबादाम नवीन हरे, थारा भराऊँ कलधौत केरे, दोनों.

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

पा च अ फू न दी धू फ४ गनाऊँ, आठों मिलै अर्घ महाबनाऊँ,
दोनों सुपार्श्वप्रभु पाद केरा, पूजा करौं होय आनँद ढेरी ।७।

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

---

१ सफेद, २ सुगंधरज, ३ सुवर्ण, ४ पा—पानी, च—चन्दन, अ—अक्षत, फू—फूल, न—नैवेद्य, दी—दीप, धू—धूप, फ—फल

छन्द दोधक

भाद्रव शुक्ल छठी तिथि जानो, गरभ धरे पृथवी महारानी,
तासम आनंदकार न दूजा, अर्घ बनाय करों पद पूजा।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्।
जेठ सुदी जो द्वादशि जानी, जन्म लियो भुवि पै सुखदानी,
मैं युग पाद सरोज निहारी, पूजत हौं धार अर्घ सिधारी।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्।
द्वादशि जेठ तनो उजियारी, तादिन होत दिगंबर भारी,
पादसरोज जजौं जिनजीके, जाकरि कर्म शत्रु अति फीके[1]।
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यम्।
फाल्गुणकी छठि जानि अन्धेरी, केवल पट्ट लहो गुण ढेरी,
पूजत इन्द्र सभाकर मांही, पूजत मैं कर अर्घ कराही।
ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्।
सप्तमि फाल्गुण कृष्ण विचारी, जाय समेद महाहितकारी,
लीन शिवालय थान विशाला, अर्घ बनाय जजौं तिरकाला।
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्।

मनहरण—भूप सुप्रतिष्ठित के वंश सर[2] माहि जात[3],
देखे चित्त ना अघात आनन्द बढ़े रहैं।
प्यारे मकरन्द वही दशों दिशा फैलि रही,
आय भवि भौंरा, नित्य ऊपर मढ़े रहैं[4]।

---

१ कर्म शत्रु निर्बल होते है, फीके पड़जाते है, २ तालाब, ३ पैदा, ४ भव्य जीव रूपी भौंरे एकत्रित हो।

तीन लोक इन्दिरा[१] सुवास[२] पाय हरषात,
कर्णिका सुनख जोति[३] तासों उमड़े रहैं।
तेरे युग चरण सरोज देखि देखिके,
कमल बिचारे एक पायन खड़े रहैं।

छन्द चौपाई.

जय आनँद घन सुकृत[४] निवासा, पुजवत[५]सब जगजनकी आसा,
जय सुपार्श्व देवनके देवा, हुतभुक[६] लयनकरत पद सेवा ॥
जो पद नख पर द्युति उमड़ाही, तापर कोटि काम लजिजाही,
जय दरिद्र चूरन भगवाना, पूरन छवि सागर गुणखाना ॥ जय.
भरम हरण जय सरम[७] निकेता, कायोत्सर्ग धारि शिव लेता ॥ जय.
जयपण[८] ऊण शतक गण ईशा, सुनसुन गिरा[९] नवावतशीसा। जय.
जय बिन भूषण भूषित देहा, बिना वसन आनँद के गेहा ॥ जय.
तुम प्रताप विष अमृत सिरसा[१०] रङ्क होय निहचै करि हरिसा[११] ॥ जय.
जलथल होय विषम सम नीके, पन्नग[१२] होय हार छवि हीके ॥ जय.
प्रभुप्रताप पावक सियराई[१३] दुश्मन[१४] महा पीतम[१५] हो जाई ॥ जय

१ लक्ष्मी २ सुगंध, ३ आपके नाखून की चमक कमल की कर्णिका के समान है और इस कारण भव्य जीव रूप भौंरा घेरे हैं, ४ पुण्य, ५ पूरी करते हो, ६ देवता, ७ सुख का स्थान, ८ - ९५ गणधर, ९ वाणी, १० समान, ११ इन्द्र के समान, १२ सांप, १३ ठण्डी हो जाती है, १४ दुश्मन, १५ मित्र ।

बन शुभ नगर अचल१ महरूपा, मृगपति मृग सो होय अनूपा॥ जय.
तुम प्रताप बिल होय पतालार, तुम प्रताप हो आल३ शृगाला ॥ जय.
शस्त्र होय अम्बुज दल माना, वज्र गात सिर छत्र समाना ॥ जय.
सहस्त्र जीभ करि तो प्रभुताई, कथन करै तो पार न पाई ॥ जय.
मैं नर हीन बुद्धि कहँ पाऊं, जो प्रभु तो महान गुणगाऊं ॥ जय.
भक्ति सहाय करूं जयमाला, दुखी जानि प्रभु करहु निहाला ॥ १५
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा ॥

घत्ता

इह दारिद हरणी संकट टरनी जयमाला सुख की करनी,
जो पढ़े निरन्तर मन वच तन करि सो पावे अष्टम धरनी।
ओंह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ।

शार्दूल विक्रीड़ितम्

जो या शुद्ध सुपार्श्वनाथ प्रभु की पूजा करै कारिता,
अनुमोदै मन बचन काय सततं संसार सो हारिता।
पावै ईश पनो महा विभु पनो लोके अलौके लखै,
पूजैं देवपती त्रिकाल चरणा आनंद पावे चखै। इत्याशीर्वादः
'ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।

——:o:——

१ पर्वत, २ गड्ढा बराबर हो जाय, ३ शेर,

८—श्रीचंद्रप्रभपूजा



छंद गीता (स्थापना)

शुभ चन्द्रपुर नृप महासेन सुलक्षणा माता जने,
सो चन्द्रप्रभ वपु१ चन्द्र सम पद चन्द्र अङ्क सुहावने ।
तजि वैजयन्त विमान वंश इक्ष्वाकु नभ के भानु मे,
आऊष दश लख वर्ष उन्नति डेढ़ से धनुमान मे ।

सोरठा

कुमुदचन्द्र भगवान, भविकफुलां२ प्रफुलित करन,
अमिय३ करावत पान, अत्र आय तिष्ठो प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्)

जोगी रासा

रतनन जड़ित कनकमय भाजन तामधि गंगा पानी,
फटिक समान मिलाय अरगजा गंध बहै मनमानी ।
चन्द्रप्रभ के पद नख ऊपर कोटि चन्द्र दुति लाजै,
दरवित भावित भाव शुद्ध करि जजौं सप्त भय भाजै ।

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीतिस्वाहा ।

---

१ मुख, २ भव्य रूपी फूल, ३ अमृत ।

मलयागिर घसि चन्दन नीको भलो सितावर[1] मिलाऊं,
अग्नि सिखा[2] मिश्रित करि आछो कनक कटोरा ल्याऊं ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल धवल प्रछालि मनोहर मिष्ट अमी समतूला[3],
चुने खंड वर्जित अति दीरघ लखें मिटत छुध शूला ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

वरमचकुन्द कुन्द कुन्दन के पुष्प[4] सम्हारि बनाये,
नसत काम की विथा चढ़ावत पावत सुखमन भाये ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूपकार[5] कृत पटरस पूरित व्यंजन नाना भाँती,
पुष्टि करत हरि लेत दीनता छुधा रोग को घाती ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निश्चल ज्योति महा दीपक की प्रभु चरनन के तीरा,
ल्याय धरौं हितपाय आपनो हतै न ताहि समीरा[6] ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन जड़ित धूप को आयन[7] जा मधि धूप जराऊं,
उठत धूम्र मिस करम जनौं वसु फेरि न जग में आऊं ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ कपूर, २ केसर, ३ जो मिठाई में अमृत की बराबरी कर रहा है, ४ एक किस्म का फूल, ५ रसोईदार, ६ हवा, ७ बर्तन ।

वृन्दारक१ कुसुमाकर द्राक्षा२ क्रमुक३ रसाल४ घनेरे,
इन्हैं आदि फल नानाविधि के कंचन थार भरेरे। चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जल गंध अक्षत वर कुसुमा चरु दीपक मणि केरा,
धूप महाफल अरघ बनाऊं पद पूजन की बेरा। चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द शिखरिणी—कही पांचे आछी असित पखकी चैत्र महीना,
महाप्यारी रानीभल सुलखना नाम कहिना।
बसे रात्रि स्वामी सुभग दिन जाके उदरमा,
जजौं लेके अर्घ मिलत जिहिसो धाम परमा।
ओंह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

जने माता भूपै शुभ इकदशी पूस वदि की,
बजे घंटा आदि भेसव अपुनसों क्षोभ अधिकी।
वहां पूजा कीन्ही अमरपति ने जन्म दिनकी,
यहां मैं ले अर्घ जजत करिये चन्द्र जिनकी।
ओंह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

कपाली५ संख्याकी तिथि वदि कही पूष पख में,
धरी दीक्षा स्वामी विभव तजिआरण्य६ थल में।

---

१ सुन्दर फूल, देवताओं के फूल, २ किशमिश, ३ सुपारी, ४ आम, ५ ग्यारह,
६ जंगल।

हरे शत्रु सारे कलमष कहे आदि जितने,
लिये अर्घम् भारी चरण युग पूजौं तुम तने।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय पौषकृष्णैकादश्यांतपकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

भये ज्ञानी स्वामी नवमि कहिये फाल्गुन वदी,
निवारे चौघाती जगत जन तारे सुजलदी।
करें पूजा थारी सुरनर कहे आद सबते,
इहाँ मैं ले अर्घम् पूजहु मन लगी आस कबते।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

(यहां फाल्गुन वदी ७ शुद्ध पाठ है)

सुदी सातें जानी सुभग महिला फाल्गुन कहा,
भये स्वामी सो तादिन शिखरते सिद्धपर[१] महा।
बजे बाजे भारी सुर नर कृत आनन्द बरतें,
करौं पूजा थारी शुभ अरघ ले आज करतें।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय फाल्गुणशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं ।

(यहां फाल्गुन वदी ७ शुद्ध पाठ चाहिये)

झूलना—महासेन कुलचन्द गुणकला के वृन्द,
नहिं निकट आवे कदा[२] मोह मंथी[३]।
देखि तुव कांति अति शांतिता की सुगति[४],
लाजि निजमन स्वपद रहत मंथी[५]।
बढ़ी छवि छटाधर[६] असित तो तिमिर,
हर अहर्निश मंदता[७] लेश नाहीं।

---

१ सिद्ध स्थान को प्राप्त करते हुए, २ कभी, ३ काम, ४ खूबी, ५ कामदेव अपने ही स्थान पर रहा आगे नहीं बढ़ सका, ६ सुन्दरता की झलक लिए हुए, ७ रात दिन मंद नहीं ।

कहत 'मनरंग' नित करे मन रंग,

जो धरे मन प्रभू तो चरण मांही।

भुजंग प्रयात

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनंदा, निवारे भली भांति के कर्म फन्दा।
सुचन्द्र प्रभुनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।१
लखे दर्श तेरी महा दर्श पावे, जो पूजें तुम्हें आपही सो पुजावे,
सुचन्द्र प्रभु नाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।२
जो ध्यावे तुम्हें आपने चित्त माँही, तिसे लोक ध्यावें कछू फेर नाहीं,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ३
गहे पंथ तो सो सुपंथी कहावे, महा पन्थ सो शुद्ध आपे चलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ४
जो गावे तुम्हें ताहि गावे मुनीशा, जो पावें तुम्हें ताहि पावें गणीशा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ५
प्रभू पाद मांही भयो जो अनुरागी, महा पद्द ताको मिले वीतरागी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ६
प्रभू जो तुम्हें नृत्य करकर रिझावे, रिझावे तिसे शक्र गोदी खिलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।७
धरे पादकी रेणु माथे विहारी, न लागे तिसे मोह दृष्टिर भारी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।८
लहे पक्ष तो जो वो है पक्षधारी, कहावे सदा सिद्धि को सो विहारी

१नजर।

सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ६
नमावे तुम्हें सीस जो भाव सेरी, नमें तासुको लोक के जीव हेरी[1],
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा १०
तिहारो लखे रूप ज्यों दीसदेवा[2] लगें भोर के चांद से जे कुदेवा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा, ११
भली भांति जानी तिहारी सुरीती, भई मेरे जीमें बड़ी सो प्रतीती,
सुचन्द्रप्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १२
भयौ सौख्यजोमां कह्यौ नाहिं जाई, जनौ आजही सिद्धिकीऋद्धिपाई।
सुचन्द्रप्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १३
करूं वीनती मैं दोऊ हाथ जोरी, बड़ाई करूं सो सबै नाथ थोरी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पाद की जासु पूजा। १४
थके जो गणी चारि हू ज्ञान धारें, कहा और को पार पावें विचारे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १५

घत्ता—चन्द्रप्रभु नामा गुण की दामा[3] पदेभिरामा भरि मनहीं,
अन्तक[4] परछाही परिहै नाहीं तापर कबहूं झूठ नहीं।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यम् नि०।

दोहा—पन्थी[5] प्रभु मन्थी मथन[6] कथन तुम्हार अपार,
करो दया सब पै प्रभो जामें पावें पार॥ इत्याशीर्वादः॥
" ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः " अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।



---

१ देखकर, २ सूर्य्य, ३ माला, ४ मौत, ५ रहनुमा, ६ काम जीतनेवाले,।

९–श्रीपुष्पदंतजिन पूजा

छंद गीता

काकन्द नगरी पितु सुग्रीवक रमा माता जासु की,
इक्ष्वाकु वंश सुपेद देह उदाव धनु शत तासु की।
स्वर्ग आर्णव तजि द्विपूरव लख सुआयु धरी भली,
पग तरे चिह्न सु मगर सोहत पुष्पदंत महाबली॥ १॥
आवो यहां कृपाल कृपा करो तनि अब आयके,
मैं करूं पूजन अष्टविधि मन वचन सीस नवायके।
जो सरें मेरे काज अटके करम ठग घेरे खड़े,
तो बिना निवरण१ होत नाहीं महाभ्रम झगड़े पड़े॥२॥

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)।

उपेन्द्रवज्रा

निर्मल जहां श्रीद्रह२ को सुनीरं, लेकर भरे कुम्भ महा गहीरं३,
सुपुष्पदन्त प्रभुपाद पद्मं, पूजूं मिले जो निर्वाण सद्मं।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ बचाव, २ श्रीनदी, ३ गंभीर।

तनमन घसौं चन्दन कासमीरा, आगे न जो अन्तक[२] की समीरा[३]
सुपुष्पदंत० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

सुतन्दुलं लज्जितमार[४] गोती, लिये महा तेज अभेद[१] मोती,
सुपुष्पदंत० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

भले भले फूल चुनाय लीन्हे, स्वअञ्जली में इकठे सु कीन्हे,
सुपुष्पदन्त० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् ।

सचिक्कणफेणी सुरमा सुताजे, भरे महाथार आनन्द साजे।
सुपुष्पदन्त० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

दीया जरे ज्योति महा प्रकासो, फटे महा जो तम की उदासी[५] ।
सुपुष्पदन्त० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

कही महाधूप सुगंधकारी, दसौं दिशा आसु सुगन्ध[६] जारी ।
सुपुष्पदन्त० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

दशांगुली[७] दाख बादाम गोला, भरे माथार महाअमोला ।
सुपुष्पदन्त० ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

अडिल्ल छन्द

हर्षिहर्षि जियभूरि सुतूर बजायके, आठौं अङ्ग नवाय बड़ा हित पायके
महा सु अरघबनाय अनेगुण उच्चरौं, तेरे शुभयुगपदब सरोजन पै धरौं
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं ।

---

१ तीन सम्यग्दर्शनादि, २ मौत, ३ हवा, ४ मरकत मणि की सफेद किरणें जिनके सामने शरमाती हैं, ५ अंधेरे की बेचैनी, ६ फैली, ७ आविश्री ।

सोरठा— नौमी वदी महान, फागुन की शुभ आ दिना,
गरभ रहे भगवान, जजौं अर्घ सो चरन युग।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

जनमे प्रभु गुण खान, अगहन सुदि एकम दिना,
नमो जोरि युगपाणि, जजौं अरघ सो चरण युग।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

सुदि एकम अगहान, तप लीन्हों घरबार तजि,
धरत महाशुभ ध्यान, जजौं अर्घ सो चरनयुग।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला प्रतिपदि तपकल्याणकाय अर्घ्यं।

उपजो केवल ज्ञान कातिक सुदि द्वितीया दिना,
भये सयोगि भगवान, जजौं अरघ सों चरणयुग।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं।

सुदि अष्टमि परवान, भादों मास समेद ते,
शिवपद लियो महान, जजौं अरघ सो चरणयुग।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय भाद्रपदशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्।

जयमाल छन्द काव्य

जय कुल कमल दिनेश, चन्द्र[1] भवि कुमुद प्रकासी,
जय अघहरन प्रताप करन, सुख सिद्ध निवासी।
जय नवीन वर ज्ञान-मित्र[2] के शुभ उदयाचल,
जय अडिमा[3] धरि ध्यान सुमनरद[4] लहत परमफल[5]।

---

१ भव्यजीव, २ सूर्य, ३ अचल, ४ कामदेव को रद करने, ५ मोक्ष।

पद्धरि छंद

जय जन्म मरण रुज[१] के हकीम, परमेश्वर परतापी सुसीम[२]:
जग जीव उधारण को महन्त, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त ।
जय खलक[३] जपत तेरो स्वरूप, सो अलख महा आनन्दरूप । जग.
हो लाभ महा रिपु को कुखेम[४] सब जीवन पै राखत सुखेम । जग.
जय आदि अन्त वर्जित सदैव, आनादि निधन हो महादेव । जग.
संशय बन दाहन को कृशानु[५] जय मिथ्या तम नाशन सुभानु। जग.
जय लोक अलोकहि लखत येम[६] धात्री फल[७] लीन्हे हस्त जेम । जग.
जय ज्ञान महालोचन अपार, सब दरशी भे सर्वज्ञ सार । जग.
गुण पर्यय द्रव्य कहे त्रिकाल, प्रभु वर्तमान सम लखत हाल । जग.
जय परम हंस सम्यक्त सार, परमावगाढ़ के धरनहार । जग.
निज परणतिमें भे परम लीन, प्रभु पर परणति लखि त्याग कीन्ह । जग
जय दुराराध्य[८] दुख हरन शांति, तन फटिक समान महा कांति । जग
जय दीन बन्धु तुम गुण अपार, सुर गुरु कथि पावत नाहिं पार । जग
याते प्रभु अब करुणा करेहु, जन जानि आपनो सुक्ख देउ । जग.

छंद काव्य—पुष्पदंत भगवंत तनी यह वर जयमाला,
पढ़े पढ़ावे कंठ करे सो सब में वाला[९] ।

---

१ रोग, २ बड़े दरजे के प्रतापी, ३ जहान, ४ नाश करनेवाले, ५ आग,
६ इस तरह, ७ आंवला, ८ परमेश्वर, जिसकी आराधना मुश्किल है, ९ ऊंचा ।

होय महागुण वृन्द१ त्रास२ सुपने नहिं पावे,
लेय सिद्धि पद अचल फेरि नहिं लोक मंझावे.

ॐह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ।

सोरठा—पुष्पदंत भगवान, तुम चरणन परतापते,
बरतो सकल जहान पुत्र पौत्र परसाय सुख ।इत्याशीर्वादः

"ॐह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यंदीयते.

——:o:——

१० श्रीशीतलनाथ पूजा



गीताछंद ।

है नगर भद्दिल भूप दृढ़रथ सुष्टुनंदा ता त्रिया,
तजिअच्युत दिविः३ अभीराम४ शीतलनाथ सुत ताके प्रिया.
इक्ष्वाकु वंशी अंक५ श्रीतरु हेम वरण शरीर है,
धनु नवे उन्नति पूर्व लखइक आयु सुभग६ परी रहे.

सोरठा—सो शीतल सुखकंद, तजि परिग्रह शिव लोक गे,
छूट गयो जग धंद, करिय तसो७ अह्वान अब.

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट (इत्याह्वाननम्)

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिसंस्थापनम्)

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

---

२ समूह, २ भय, ३ स्वर्ग, ४ सुंदर, ५ चिन्ह ६ सुंदर ७ इसलिए

अष्टक छंद गीता ।

नित[1] तृषा[2] पीड़ा करत अधिकी दाव अबके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन जड़ित गंगा नीर भरि ले आइयो.
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवकी तापसों,
मैं जजौं युगपद[3] जोरि करि[4] मो काज सरसी आपसों.

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

जाकी महक सों नीम आदिक होत चन्दन जानिये,
सो सूक्ष्म घसिके मिले केसर भरि कटोरा आनिये, तुम०

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

मैं जीव संसारी भयो अरु मरयो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे अक्षय पदके कारना ।तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलजिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

इन मदन मोरि सकति थोरि रह्यो सब जग छायके,
ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनायके ।तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा ।

क्षुधा रोग मेरे पिंड लागो देत मागेना[5] घरी,
ताके नसावन काज स्वामी लूपले[6] आगेधरी ।तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ हमेशा, २ प्यास, ३ दोनों चरण, ४ हाथ जोड़कर, ५ क्षुधा मेटने के अर्थ सारे समय लगा रहता है, कोई घड़ी भी नहीं बचती, ६ नैवेद्य

अज्ञान तिमिर महान अन्धाकार करि राखो सबै,
तिस पर सुभेद विज्ञान कारण दीप ल्यायो हूँ अबै।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जे अष्ट कर्म महान अतिबल घेरि मो चेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले धूप प्रभु ढिंग खेपियो।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे रहत कबकी नाथजू,
फलमिष्ट नाना भांति सुथरे ल्याइयो निज हाथ जू।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल गंध अक्षत फूल चरु दीपक सुधूप कही महा,
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हो दोष सो वर्जित कहा।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक गाथा

चैत वदी दिन आठैं, गर्भावतार लेत भये स्वामी
सुर नर असुरन जानी, जजहूँ शीतल प्रभू नामी.
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्रायचैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भ कल्याणकाय अर्घ्यम्

माघ वदी द्वादशि को. जन्मे भगवान् सकल सुखकारी,
मति श्रुति अवधि विराजे, पूजों जिन चरण हितधारी.
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्
द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि बन बसे जाई,
पूजत तहां सुरासुर, हम यहां पूजत गुण गाई.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा द्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्.

चौदशि पूस वदी में, जग गुरु केवल पाय भये ज्ञानी,
सो मूरति मनमानी, मैं पूजों जिन चरण सुखखानी.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णा चतुर्दश्यां ज्ञानकल्याण अर्घ्यम्.

आश्विन सुदी अष्टमदिन, मुक्ति पधारे समेद गिरिसेती,
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगत की जेती.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्.

अथ जयमाल ।। छंदत्रिभंगी ।।

जय शीतल जिनवर परम धरमधर छविके[1] मन्दिर शिव भरता[2] .
जय पुत्र सुनन्दा के गुण वृन्दा[3] सुखी के कंदा[4] दुख हरता,
जय नासा दृष्टी हो परमेष्टी तुमपदनेष्टो[5] अलख[6] भये,
जय तपो चरनमा रहत चरनमा सुआचरणमा कलुषगये.

छन्द सृग्विणी

जय सुनंदाके नंदा तिहारी कथा, भापि को पार पावे कहावे यथा,
नाथ मेरे कभी होय भव रोग[7] ना इष्ट वियोग अनिष्टसंयोगना।।१
अग्नि के कुण्ड में बल्लभा रामकी-नामतेरे बची सो सती कामकी
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना, इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना।।२
द्रोपदी चीर बाढ़ो तिहारी सही, देव जानी सबों में सुलज्जा रही

---

१ शोभा के स्थान, २ मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी, ३ गुण का समूहकारी, ४ मूल,
५ चरण में लीन, चरण भक्त, ६ परमात्मा, निराकार, ७ जन्म मरण संसार,

कुष्ठ राखो न श्रीपालको जो महा, अग्नि ते काढ़ लीनो सिताको तहां ।
अंजनाकाटिफांसीगिरोजोहतो, औसहाईतहांतो विनाकोहतो ।नाथ
शैल फूलो गिरो अंजनीपूत१के, चोट ताके लगी ना तिहारे तके ।नाथ
कूदियो शीघ्र ही नाम तो गाय के,कृष्णकालीनथोकुण्डमेंजाय के ।नाथ
पांडवा जे घिरे थे लखागार२ में राह दीन्हीतिन्हेंतेमहाप्यारमें ।नाथ
सेठ को शूलिका पै धरो देख केकीन्हसिंहासनंआपनो लेखके ।नाथ
जो गनाये इन्हें आदि देके सबेपाय परसाद ते भे सुखारी३सबै ।नाथ
बार मेरी प्रभू देर कीन्ही कहा कीजिये दृष्टिदायाकीमोपेअहा ।नाथ
धन्य तू धन्य तू धन्य तूमैनहा जो महा पंचमोज्ञाननीकेलहा ।नाथ
कोटि तीरत्थ हैं तेरे पदों केतलेरोजध्यावैंमुनीसोबतावें भले ।नाथ
जानि के यौंभलीभांतिध्याऊं तुम्हेंभक्तिपाऊं यहीदेवदीजेमुझे ।नाथ

गाथा—आपद सब दीजे भार झोंकि यह पढ़त सुनत जयमाल,
होत पुनीत करण अरु जिह्वा बरते आनंद जाल,
पहुंचे जहं कबहूं पहुंच नहीं नहिं पाई पावे हाल,
नहीं भयो कभी सो होय सवेरे, भाषत मनरंगलाल.

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि०, ।

सोरठा—भो शीतल भगवान, तो पद पक्षी जगत में,
हैं जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी, इत्याशीर्वादः ॥

---

१ हनुमान, २ लाख के महल में, ३ दुख भोगनेवाले, ४ काम को नष्ट करने वाला,

११-श्रीश्रेयांसनाथपूजा



स्थापना-छंद गीता

सिंहपुर राजा विमल जाके त्रिया विमलाभली,
तजि पुहुप उत्तर श्रेयांस सुत भये हेम वरण महाबली।
धनु असी उन्नत चिह्न गैंडा महत वंश इक्ष्वाकु है,
शुभ वरष लषचउ असी आयुष पुण्यको सुविपाक है। १
तजि राज्यभूति१ धरी दिक्षा तप करो अति घोर ही,
बल शुक्ल श्रेणी क्षपक चढ़ि लहि ज्ञान पंचम जोर ही।
करि करि विहार उतारि अधमनि भव उदधि ते तुम प्रभू,
पुनि आप हू शिवनाथ लिय सो यहां नित आवो विभू। २

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छंद मालिनी—घनरस२ भरि चोखा रत्नथारी मंझारी,
मिलय हरि सुधारी दीर्घ सौगंध कारी,
लयमन भरि पूजूं पाद श्रेयांस के रे,
नसत असत३ कर्म ज्ञान वर्णादि मेरे। १

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ विभूति २ मेघजल ३ बुरे।

सुमन सुरभितामें मेलिह के जो कपूरे,
अति निकट सुजाके भौंर गुञ्जार पूरे। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम्।

अक्षत अक्षत नीके श्वेत मीठे सुभारी,
जल करि परछाले खंड वर्जे हकारी। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

सुमन ग्रथित माला पंचवा वर्ण वाला[1],
लखत लगें नीके प्राण होवे खुशाला[2]। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम्।

सुरभि घृत पचाई शुद्ध नैवेद्य ताजी,
कनक जड़ित थारा मांह नीके सुसाजी। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।

परम बरत बाती धूम जामें न होई,
तिमिर कटत जासों दीप ऐसी संजोई। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।

जलत ज्वलन मांही धूप गंधै छटासो,
उड़त मगन भौंरा पाय धूआं घटासो। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।

मधुर मधुर पाके आम्र निम्बू नरङ्गी,
रस चलित सो नाहीं कीजिये जानि अङ्गी। लयमन०
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।

---

१ अच्छा, २ सुखी।

अब करियत अर्घ मे लहू के द्रव्य आठों,

मन वच तन लीन्हें हाथ उचारि पाठों। तयमन०

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम् ।

छंद चाली—वदि जेठ तनी छठि जानी, जिन गरभ रहे सुखखानी,

जह पूजत सुरपति आई, हम पूजत, अर्घ बनाई.

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णषष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्.

फाल्गुण वदि ग्यारसि नीकी, जननी विमला जिनजीकी,

जनि पुत्र भइ खुशहाला, पूजों जिन पद सुखजाला.

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि फाल्गुन ग्यारसि भाई, भावन द्वादशि जु कहाई,

प्रभु होत भये बनवासी, तुम पाद जजों गुणरासी.

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि माघ अमावस गाई, ऋद्धि केवल की शुभ पाई,

प्रभु नाशत कष्ट घनेरे, ले अर्घ जजों पद तेरे.

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय माघकृष्ण मावास्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

श्रावण की पूरन मासी सम्मेद शिखर ते पासी,

शिव रमणी परणी जाई, तुम चरण जजों शिरनाई.

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय श्रावणशुक्ला पूर्णमास्यांमोक्षकल्याणकायअर्घ्यम्

छंद त्रिभंगी—जय पद सर तेरे तीक्षण टेरे कहरी घनेरे गरम हरी,

जय तिन गति सूधी धरत न मूंदी बात न मूंदी यह सुखरी.

जय काल निशाने देखत भाजे चूक न आने निश्चु मनसों,
जय होत तीर मो हरतपीर मो हिय तु तीर मो तनि निवसोः२

छंद पद्धरिका

जय विमल तन्य तुम पद सरोजमन वच तन करियत तिन्हें दोक,
भव भ्रे य करो अ यांसनाथ, मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ(१)
मेरे नाहिं एको और आस, नित रहत सतत तो चरण पास प्रश्रे य
तुम राज्य रमा सब त्याग दीन,आनन्द सहित वनवास कीन्ह।जय
व्रतमहा समिति पञ्च गुप्ति तीन, इसतेरह विधि चरित्र कीन।जय
तप द्वादश अन्तर बाह्यभेद,युत तपत तपस्या नीति अभेद।जय
उत्तम क्षम आदिक कहत धर्म, तिनको तुम धारक हो सुधर्म।जय
द्वादश भावन भाई महान, अघव को आदिक भेद जान।जय
धरि तीन रतन उरमें विशाल है आपु अजाची करत हाल।जय
संयम पञ्च इन्द्री दमन रूप, धरि होत भये तिहु लोक भूप।जय
पर कारज कारी तुम दयाल, तो समदूजो नहिं लोक पाल।जय
घट घट के अन्तर लीन देव, जन कहत विचक्षण सकल एव।जय
पग धरत होत तीरथ महान, सो परसत पावत अचल थान।जय
जाके घन तेरे चरण दोय, ता गेह कमी कबहू न होय।जय

(१) हे भगवान तुम्हारे चरण जयवंत हो, बहुत लोग उच्च स्वर से आपको गर्भ हरी अर्थात् मुक्त कहतेहैं, उनकी गति सीधी है वक्र नहीं यह बात खुली है छिपी नहीं। काल अर्थात् यमराज की सेना आपको देखकर भागती है इसमें मन में कुछ संदेह नहीं, आपके समीप होने से मेरा कष्ट दूर होता है इसलिए मेरे हृदय में निकट विराजमान हो

तुम चरण तनी परसादपाय, चिन्तामणिचिन्तामणिमिलतआय,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ, मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।
बलिहारी इन चरण की जाऊं, नहिं फेर धराऊं कबहुनाऊँ । अब
घत्ता—श्रेयनाथ भगवन्त तनी यह वर जय माला,
मन बच तनय लगाय पढ़े जो सुनहिं त्रिकाला ।
सिद्धि ऋद्धि भरपूर रहै ता गृह के मांही,
मंगल वृद्धि महान होय नहिं घटै कदाही ।
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ।
सोरठा—श्रेयनाथ भगवान, श्रेय करण को प्रण भले,
लियो कहत मतिवान, सो करिये सब जग विषे ।इत्याशीर्वादः
"ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

१२ श्रीवासुपूज्यपूजा

छन्द गीता

शुभ पुरी चम्पा नृपति जहँ वसु पूज्य विजया ता त्रिया,
तजि महाशुक्र विमान ता घर वासुपूज्य भये प्रिया ।
सिह बरन उचाव सत्तरि चाप वंश इक्ष्वाकु हैं,
सत्तरि औ द्वै लख वर्ष आउष अंक महिष भला कहैं ।
सोरठा—वासुपूज्य जिनदेव, तजि आपद जिन पद लयौ,
करत इन्द्र पद सेव, मैं टेरत इह थाप अब ।
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्)

भरि सलिल महा शुचि झारी, दे तीन धार सुखकारी,
पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई।
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा,
घसि पावन चन्दन लाऊं, नाना विधि गन्ध मिलाऊं। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा
अक्षत ले दीर्घ अखंडे, अति मिष्ट महाद्युति मंडे। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षतपदप्राप्तये अक्षयान् निर्वपामीति स्वाहा
मन्दार कलक के फूला, बहुल्याय धरों सुखमूला। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा
मधुरा पक्वान्न घनेरा, ले मादक लाडू पेरा। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा
करि रत्न तनो शुभ दीयो, निज हाथन पै धरि लीयो। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा
कृष्णागरु धूप मिलाई, दहिये शुभ ज्वाल मंगाई। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा
फल आम नरंगी केरा, बादाम छुहार घनेरा। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा
ले आठों द्रव्य सुहाई, जल आदिक जे सुभताई। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

आसाढ़वदी छठि गाई, जिन गर्भ रहे सुखदाई,
हम गरभ दिना लख सारा[१] ले अरघ जजों हितकारा।

---

१ शुभ

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय आषाढकृष्णाषष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदि फाल्गुन चावदशि जानी, विजयाने जने सुखखानी,
वह मूरत मो मन भाई, जजिये पद अर्घ बनाई ।

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदि फागुन चौदशि दीक्षा, लीन्हों अपनी शुभ इच्छा,
तप देवन जय जय कीन्हीं, हम पूजत हैं गुण चीन्हीं ।

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

दिन माघ सुदी दुतिया के, अपरान्ह[1] समय सुखआके,
उपजो केवल पद केरा, पद पूज लहौ शिव डेरा ।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय माघशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चंपापुर ते सुखदानी, भादों सुदि चौदशि मानी,
अविनाशी जाय कहाये ले अर्घ जजों गुण गाये ।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

छन्द जयमाल

जय जय विजयासुत सकल जगत नुत अष्टकर्म च्युत जित मयना[2]
गुण सिंधु निहारे चरण निहारे, सफल हमारे भे नयना ।
जो हता[3] कालिमा कुगुरु लखनकी भाजि गई सो छक[4] पलमा,
पाई, मैं साता[5] नासि असाता शान्ति परी मो अन्तर मा[6] ।

---

१ तीसरे पहर, २ काम, ३ थी, ४ एक पलमें, ५ सुख, ६ मेरे मन में शान्ति हुई ।

छन्द—जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र देवजू,
पुलोमजापती करे पदारविंद सेवजू।
दीन बंधु दीन के सम्हारि काज कीजिये,
मो कबै[1] निहारि आपमें मिलाय लीजिये।
राग दोष नासिके भये सुवीतराग जू,
मुक्ति वल्लभा वनो जगो महान भाग जू। दीनबंधु०
भूख प्यास जन्म रोग जरा मृत्यु शोगना,
खेद स्वेद भीति भाव हू अचंभ खोग ना। दीनबंधु०
नींद मोह आर्ति लाभ आदि दे नहीं मदा,
वर्जित अरत्ति है अचिंत भाव वो सदा। दीनबंधु०
दोष नासि के अदोष देव तू प्रमान है,
दोष लीन देव जो कुदेव के समान है। दीनबंधु०
पाय के कुदेव साथ नाथ मैं महा भ्रमो,
लख चारि औ असीति योनि माँझ ही गमो[2]। दीनबंधु०
देख तो पदारविंद नाथ सूधि मो भई,
जानि के कुदेव त्याग रूप बुद्धि परनई। दीनबंधु०
जो पदारविन्द नाथ शीस पे नहीं धरै,
बूड़ते समुद्र यान छांड़ि पाहने गहै[3]। दीनबंधु०
जो विवेक न देय जीव मोक्ष राह पावही,
तो विवेक आप और को न आवही। दीनबंधु०

---

१ मेरी तरफ नजर करके, २ भ्रमण किया ८४ लाख योनि में, २ जो आपके चरण कमल सिर पर नहीं रखता वह उस पुरुष के समान है जो डूबते हुए नौका को छोड़ के पत्थर का सहारा ले।

मान त्याग भाव तो चरण में लगावही,
सो अमान१ पूज्यमान सिद्धि ठाम आवही ॥
दीनबंधु दीन के सम्हारि काज कीजिए०
तो प्रसाद नाथ पंगुला चढ़े पहाड़ पै,
जो चढ़े अचंभ नाहिं जीत लेय मार पै२ ॥ दीनबंधु ॥
मूक बोल बैन मिष्ट इष्टता धरे महा,
तो प्रभाव सिद्धिनाथ होय ना कहा कहा ॥ दीनबंधु ॥
रेणुका पदारविंद की महा पुनीत सो,
सीस पै धरे सुधार होत है अभीत सो ॥ दीनबंधु ॥
भे भवाब्धि पार जे निहारि रूप तो तनो,
मक्षरंगलाल को सदा सहाय तू बनो ॥ दीनबंधु ॥

घत्ता—वासुपूज्य जिनराज प्रभू की शुभ जयमाला,
करम तनो ऋण हरण काज वरनी सुखशाला।
पढ़त सुनत बुधि बढ़त कढ़त दारिद्र दुखदाई,
जस चमकत दश दिशा धरम सो होत मिताई।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि० ।

सोरठा—वासुपूज्य महाराज, तुव पद नख अति चन्द्र दुति,
निज निज साधो काज, जासु चन्द्रिका में सकल३ । इत्याशीर्वादः।

'ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ।

---

१ मान रहित पुरुष, २ कामदेव को जीतले, ३ आपके चरण कमल रूप चाँद की चाँदनी में सब जीव अपने-अपने काम सिद्ध करो ।

१३-श्रीविमलनाथजिनपूजा

छंद गीता

कंपिला नगरी सुकृतवर्मा पिता श्यामा मात के,
सुत विमल वंश इक्ष्वाकु अङ्क वराह शुभ जगतात के।
साठ धनु उन्नत सुकंचन वर्ण देह विराजही,
सहस्रारतें[१] चय साठ लख वर्ष सुआऊषा लही।
प्रभु विमल मति कर विमल मति मो विमलनाथ सुहावने,
गुण कन्द चन्द अमंद आनन जगत फन्द मिटावने।
अब लगी मो मन की सुआसा पाद पूजन की भली,
तनि करो किरपा धरो पग इह आयजो पाऊं रली[२]।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्रममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

मैं ल्याय सुभग कबन्ध[३] चन्दन मंद मंद घसाय के,
मिलवाय त्रिषा निकंद कारन झारिका भरवायके।
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड सुहावने,
पद अर्जों सिद्धि समृद्धि दायक सिद्धि नायक तो तने।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

घसवाय चन्दन अरगजा[४] कर्पूर वासव वल्लभा[५],
धरि रतन जड़ित सुवर्ण भाजन मांहि जाकी अति प्रभा। प्रभु०

---

१ स्वर्ग का नाम, २ सुख, ३ जल, ४ अगर, ५ केसर, इन्द्र की प्यारी।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अति दीर्घ तंदुल धवल क्षालें पुंज साजे थार में,
घनसार लज्जित शरद ऋतु के कुन्द सकुचे हृदय१ में। प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

बहु अमल कमल अनूप अनुपम सहस दल विकसे कहे,
सो धारि कर पर देखि शुभतर भाव कर वर ते ठये२ ।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

शतछिद्रफेनी धवल३ चन्द्र समान कांति धरे घनी,
वर खीर मोदक शालि ओदन मिले खांडा सोहनी४ ।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

मणि दीप दीपति जोति दश दिशि झोंक लगे न पौन की५,
ना बुझत धरि कंचन रकेवी कांति प्रसरित जौन की ।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा

ले धूप गंध मिलाय बहु विधि धूमकी घुघटा लिये,
सो खेय धूपायन विषय६ सब कर्मजाल प्रजालिये ।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ धोए हुए और खुशबूदार ऐसे हैं कि चांद और फूल शरमाते हैं, २ हजार दल के खिले हुए कमल अच्छे देखकर हाथ में लिए, ३ फेनी एक मिठाई है- सुराखदार, ४ अच्छी खांड़ मिलाके, ५ हवा, ६ धूपदान

ले क्रमुक१ पिस्ता लांगली२ अरु दाख बादाने घनी,
शुभ आम्र कदलीफल३ अनूपम देवकुसुम४ सोहनी प्रभु०
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा
शुभ जिवन५ चंदन अक्षत सुमना प्रवर६ चरु७ ले दिवा८
और धूप फल इकठे सुकरि के अरघ सुन्दर मैं किया९ प्रभु०
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

छन्द मालती.

जेठ वदीदसमी गनिये प्रभु गर्भावतार लियो दिन आछे,
इन्द्र महोत्सव कर सुसुरी बहु९ राखि गयो जननी ढिग पाछे,
देविकरैं जननीकी तहा बहु सेव अभेव१० अनंदही आसे११ ।
मैं अब अर्घ बनाय जजों पद मो मन औरभिलाष न राखे।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्
माघ वदी गनि द्वादशि के दिन सुकृतवर्म घरे सुतिया१२ के,
निर्मलनाथ प्रसूत भये जग भूषण हैं वर मुक्तिप्रिया के,
जौ लग केवल की पदवी नहिं लेत अहार निहार न जाके,
पूजत इन्द्र शची मिलि के सब मैं पद पूजत हों युग ताके ।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्
(यहां शुद्ध पाठ माघ शुक्ल ४ होना चाहिये)

१सुपारी, २ नारियल, ३ केला, ४ देव वृक्षके फूल, पारिजात मंदार संतान कल्प वृक्ष, हरिचन्दन, ५ शुद्ध जल, ६ उत्तम, ७ क्षीर, ८ दीपक ९ सुंदर देविया,
१० निरन्तर, ११ में है, १२ सुकृत वर्म राजा की सुन्दर रानी के

माघ वदी शुभ चौथ कहावत छोड़त यावत राजविभूती,
वास कियो वनमें मनमें लख जानि सबै जग की करतूती,
केश उपारि सुखारि भये शिव आस लगी सुखकी सुप्रसूती[१]
मैं पदकंज सिधारि[२] जजू अब मोहि खिलाहु सो अमरूती[३]

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा चतुर्थ्यां तप कल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां भी माघ शुक्ला ४ होना चाहिये)

केवल घातक जो प्रकृती सो तिरेसठ घात करी तुम नीके,
माघ वदी छठि में उपजो पद केवल भे प्रभु दीन दुनी के,
दे उपदेश उतारि भवोदधि काज सिधारि दिये सबही के,
पूजत मैं पद अर्घ बनायके तो लखि देव लगे सब फीके,

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां माघ सुदी ६ होना चाहिये)

छांड़ि सयोग[४] सुथानलियोसुअयोग[५]कहोजिहिकीथितिमानी[६]
पंचहि ह्रस्व समय तिहि भूरि[७] कहे अवसान समय युगमानी[८]
ज्ञानि पचासी अघातिय की प्रकृति तिनमें सुबहत्तरि मानी[९]
अन्त समय करि तेरह चूरन सिद्ध भये पद पूजहु जानी[१०]

---

१ सुख के पैदा करने वाली, २ सिर पर धार, ३ अमृत, ४ सयोग केवली नामा तेरहवां गुण स्थान, ५ चौदहवां गुण स्थान, ६ तिस अन्तिम गुण स्थान की नियत स्थिति कहते हैं, ७ सो कुल इतनी है जितना काल अ, इ, उ, ऋ, ऌ, इन पांच स्वरों के उच्चारणमें लगता है, ८ अन्त के दो समय में, ९ अघातिया ८५ प्रकृति में से बहत्तर का नाश किया, १० अन्त समय में बाकी १३ कामी नाश करके मोक्ष गये

दोहा—शुभ आषाढ़ कृष्णाष्टमी, विमल भये मल दूर,
पूरि रहे शिवगण विषे[1] जजहु अरघ ले भूरि ।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय आषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

अथ जयमाला-छंद त्रिभङ्गी

जय सुकृत वरमा के शुभ घर मा पूरन करमा[2] भे परमा,
जय करत सुधरमा, रहित अधरमा रहत जगन्मा पदतरमा[3] ।
जोगुणतोतरमा[4] नहिं गणधरमा बसतअकरमा[5] शिवसरमा[6],
आवा तजिशरमा[7] जोतुअ घरमा[8] फेरि न भरमा दर दरमा ।

भुजंग प्रयात—गुणावास[9] श्यामा भली जासु अम्बा,
भये पुत्र जाके दिखाये अचंभा,
रहे जासु के द्वार पै देव देवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा ॥ १
लखी चाल मैं नाथ तेरी अनूठी,
बिना अस्त्र बांधे करे शत्रु मूठी[10],
लई जय तिहूं लोक मैं जीत एवा । नमो जय ॥ २
पड़ी कण्ठ में नाथ के मुक्ति माला,
विराजे सदा एकही रूप शाला[11],

---

१ सिद्धों के बीच में जा विराजे, २ कृत कृत्य, ३ जिनके चरण कमल में लक्ष्मी निवास करती है, ४ आपमें जो गुण हैं, ५ जिनके कर्म समाप्त होगए हैं, ६ हे सर्व कल्याण मूर्ति, ७ शरम, लाज, ८ जिनके मंदिर, देवालय, ९ गुण - निधान, १० दुश्मन को मुट्ठी में करे, ११ रूप मन्दिर ।

सचमशाल तेरे लगी देन जेवा[1],
नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा ॥ ३
लखे रूप तेरो करे शुद्धताई,
न लागे कभी ताहि कर्मादि काई,
महा शान्तता सुक्ख ही में धरेवा । नमो जय ॥ ४
प्रभू नाम रूपो दीवा जीभ द्वारे[2],
धरे वारि[3] सो बाह्याभ्यंतर निहारे,
पिछाने भली भांति सो आतम भेवा[4] । नमो जय ॥ ५
न देखा कभी सो लखे मुक्तिधामा,
तहां जायके बेश[5] पावे अरामा,
विराजे तिहुं लोक में जो मथेवा[6] । नमो जय ॥ ६
नमावे तुम्हें लोक में माथ जेते,
करें पाद पूजा भली भांति ते ते,
तिन्हों की सदा त्रास भव की कटेवा । नमो जय ॥ ७
अतः[7] देव तुभ्य नमस्कार कीजे,
बड़ाई तिहुं लोक में पाय लीजे,
सबै जन्म की कालिमा जो मिटेवा । नमो जय ॥ ८
महा लोभ रूपी घटा को हवाजू[8],
बलीमान शुण्डाल[9] कण्ठीरवा[10] तू,

---

१ आपके पास बसे में नेत्र अथवा देवे लगी, २ जिव्हा, ३ जवाहर, ४ भेद, ५ अनंत, ६ तीन लोक के शिखर पर अर्थात् मस्तक पर विराजमान है, ७ इस कारण, ८ वायु, ९ हाथी, १० शेर।

न राखी कवी ढील की आनि ठेवा। नमो जय॥ ९
कुतृष्णा महामीन को मीनकेतू तू[1],
मिटावन्न को व्याधि एके कहा तू,
न दूजा कोऊ और तोसो कहैया। नमो जय॥ १०

नहीं शर्ण कोऊ बिना तुम हमारो,
तिहुं लोक में देखिही देखि हारो,
न पायो प्रभू सो कोऊ सुद्धि लेवा। नमो जय॥ ११

जगत काल को है चबेना बनाई,
कछू गोद लीन्हे कछू ले चबाई,
गहे पाद में जानि रक्षा कि टेवा। नमो जय॥ १२

भलो वा बुरो जो कछू हों तिहारो,
जगन्नाथ दे माथ मो पै निहारो,
बिना साथ तेरे न पक्की बनेवा। नमो जय॥ १३

चले काल ब्यारी[2] भरे झूठ पानी,
नवैया[3] हमारी महाक्षोभ यानी,
करैया तुही नाथ मो पार खेवा। नमो जय॥ १४

घत्ता—भरतिमाणिक हम करी गहत यह विमलनाथ प्रभुकी जयमाल,
पढ़त सुनत मन वच तन नीके नशत दोष दुख ताके हाल[4]।
सुमति बढ़त नित घटत कुमति मनदुरत[5] रहत दुरामनओकाल,

---

१ मीन नायक, २ हवा, तुफान, ३ नौका, ४ जल्दी, तत्काल, ५ छिपा रहता है

भरमनाशि शुभ शर्म[1] दिखावत करम न पावत जाकी चाल।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ॥

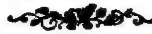
सोरठा—विमलनाथ जगदीश, हरहु दुष्टता जगत की,

तुम पद तर सुखदीश[2], सो करिये सब जगत पै। इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यंदीयते।

——:o:——

१४–श्रीअनन्तनाथजिनपूजा



गीता छंद—अवध नगरी बसत सुन्दरधराधिप हरिसेन हैं,

ता त्रिया सुरजा सुत सुजाके नन्त प्रभु सुख देन हैं।

तजि पुष्प उत्तर धनुष अधशत[3] वपु उचाई स्वर्ण में,

इक्ष्वाकु वंशी अङ्क सेही आउ तिस लख वर्ष में।

सोरठा—सो अनन्त भगवन्त, तजि सब जग शिवतिय लई,

भजत सदा सब सन्त, आय यहां तिष्ठो प्रभो।

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

हिमवन द्रह को नीर ल्याय मन मोहनो,

पय समान अति निर्मल दीसत सोहनो।

प्रभु अनन्त युगपाद सरोज निहारि के,

जपहु अटल पद हेत हर्ष उर धारि के॥

---

१ कल्याण, २ जो सुख आपके चरणों में दिखलाई देता है, ३ पचास धनुष।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

मलयज घसौं मिलाय शुद्ध कर्पूर ही,
गंध आसु प्रति प्रसरित दश दिश पूरही।
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज निहारि के।।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्रायभवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल विशाल बड़े मन भावने,
उठत छटा छवि तिन अति दीखत पावने। प्रभु अनन्त।।

ॐह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

सुमन मनोहर चंप चमेली देखिये,
प्रफुलित कमल गुलाब मालती के लिये। प्रभु अनन्त।।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हरत क्षुधा अति करत पुष्टता मिष्टते,
व्यञ्जन नाना भांति थार भर इष्टते। प्रभु अनन्त।।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जोति जगाय गाय गुण नाथ के,
जिज पर देखन काज ल्याय निज हाथ में। प्रभु अनन्त।।

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

खेवूं धूप मंगाय धूप दह में भली,
आसु गंधकरि होत सु मतवारे अली। प्रभु अनन्त।।

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर वर्ण शुभ नाना फल भरि थार में,
ल्याय चरण ढिग धरहुं बड़े सतकार में। प्रभु अनन्त।।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन वर तंदुल सुमन सु चरु ले,
दीप धूप फल अर्घ महा सुख कूप[१] ले। प्रभु अनंत

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नृप सौध[२] ऊपर हरपि चित अति गज[३] गुण अमसाल,
षट् मास आगे रतन बरषा करत देव महान।
कातिक वदी एकम कहावत गर्भ आये नाथ,
हम चरण पूजत अरघ ले मन वचन नाऊं माथ।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण प्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्,

शुभ जेठ महीना वदी द्वादशि के दिना जिनराज,
जन्मे भये सुख जगत के वदि नगर सहित समाज।
शचिनाथ आय सुभाव पूजा जनम दिन की कीन,
मैं जजत युगपद अरघ सो प्रभु करहु संकट छीन।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि जेठ द्वादश जाय वन में केश लुञ्चत धीर,
तजि बाह्याभ्यन्तर सकल परिग्रह ध्यान धरत गंभीर।
मैं दास तुम पद इह[४] पूजत शुद्ध अरघ बनाय,
तहँ जजत इन्द्रादिक सकल गुणगाय चित्त हरषाय।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं

अम्मावसी वदि चैत की लहि ज्ञान केवल सार,
करि नाम सार्थक प्रभु अनंत चतुष्ट लहत अपार।

---

१ सुख का भंडार, २ राज भवन, ३ हाथी, ४ यहां

करुणा निधान निधान सुख के भव उदधि के पोत,
मैं जजत तुम पद कमल निरमल बढ़त आनन्द सोत।

ओंह्रीं श्रीमनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्णामावस्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं।

बदो पंचदश कहि चैत को करुणा निधान महान,
सम्मेद पर्वत ते जगत गुरु होत भये निर्वान।
तह देव चतुरनि काय विधि करि चरण पूजे सार,
मैं यहां पूजत अर्घ लीन्हे पद सरोज निहार।

ओंह्रीं श्रीमनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकाय अर्घं।

जयमाला - छंद त्रिभङ्गी

जय जिन अनन्त वर गुण महंत तर परम शान्ति कर दुख न दरे,
निज कारज कारी जन हितकारी अधम उधारी शर्म धरे,
जय जय परमेश्वर कहत वचन फुर१ रहत सदा सुर पग पकरे,
प्रभु करहु निवेरा पातक घेरा मनरंग चेरा नमत खरे।

पद्धरि छंद

जय जय अनंत भगवंत संत, जग गावत पद महिमा महंत,
ते पावत जावत सिद्ध राज, जाके मारग में दिवि समाज२।
प्रभु मूरत भय भंजन विशेष, भविजन सुखपावत देखि देखि,
रंजन भविनीरज३ वन दिनेश, निरअञ्जन अञ्जन बिनु विशेष।
घट आवत जाके तुम दयाल, सो घट घट की जानत त्रिकाल,
भटकत नहिं जो संसार माहिं, नहिं अटकत कोई काज ताहि।

---

१ सत्य, २ मोक्ष के रस्ते में स्वर्ग भोग पड़ते हैं, ३ भव्य जीव रूपी कमलों के वन को प्रफुल्लित करने में सूर्य के समान है।

फटकत नहिं जाकी ओर मोह, पटकत सो चौपट मांझ द्रोह[१]
लटकत नित जाकी कुत[२] पताक, भटकत माया बेली झटाक।
सटकत लखि जाको रूप मान, बच ताके गटकत सिगजहान[३]
छटकत चहुँ गिरदा सुजस जासु, खटकतनहिं दृगमधि[४] छविसुतासु
तुम धन्य धन्य किरपा निधान, जो करत जानि जन निज समान
इह खूबो का पर कहिय जाय, जय जय जग जीवन के सहाय।

जय जय अपार पारा न वार, गुण कथि हारे जिह्वा हजार।
मथि डारो तुम वैरी मनोज, बलिहारी जैयत[५] रोज-रोज।
जय अशरण को तुम शरण एक, सब लायक दायक शुभ विवेक
जग नायक मन भायक सरूप, जय नमो नमो आनन्द कूप।

जय सुख वारिध वेला[५] निशेप, नहिं राखत आरति जानिलेश।
दुति ऊपर वारो कोटि भानु, प्रभु नासत मिथ्या तम महानु।
तुम नाम लेत करूणा निधान, टूटत गाढ़े बन्धन महान।

पवनाशन[६] पग तल चांप लेत, त्रिपम स्थल जाको नित सुखेत।
ऐरावत सम अति क्रोधवान, सनमुख आवत दन्तो महान।
वस होय तिहारे नाम लेत, जय-जय शुभ अतिशय के निकेत[७]
तुम नाम लक्ष जाके निधान, नहिं अग्नि करै दग्धायमान।
पावे ठग वटमारो न कोय, इह प्रभुता जानत सकल लोय[८]।

---

१ द्वेष, २ कीर्ति की ध्वजा, ३ सनस्त संसार, ४ जाऊं, ५ ज्वारमाटा अर्थात् निराकुल सुख, ६ सर्प, ७ स्थान, ८ लोक।

करुणा कटाक्ष तनि करौ हाल, जासो हूँ१ होउ अति विहाल।
वसु कर्म विगोऊं निमष मात्र, जाऊं निज पद तजि सकल गात्र२।

घत्ता— इह अनन्त भगवन्त तनी सुन्दर जयमाला,
पढ़ि जाने जो कोय होय गुण गण की माला।
सुनत धुनत अति क्रोध, बोध पावे सुखकारी,
जाय पढ़े ते मिलत सिद्धि तिय जो अति प्यारी।

सोरठा— हे अनन्त जिनराज, कलुष काट करिये जलद,
पूरण पुण्य समाज, जो सुख पावे जगतजन। इत्याशीर्वाद:

'ओंह्री श्रीअनन्तनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

—:o:—

१५-श्री धर्मनाथ पूजा



छन्द गीता [स्थापना]

पुर रतन राजा भानु जाके सुव्रता रानी महा,
सुत भये ताके धर्मनायक वज्र३ अंक भला कहा।
इक्ष्वाकुवंशी हेम सा तनु बरष दस लख आयु है,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि पैताल४ धनुष उचाव है।

ओंह्री श्रीधर्मनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्री श्रीधर्मनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्री श्रीधर्मनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

दोहा— सो वृषनाथ जहाज सम, तारण को जगजीव,
करुणा करि आवो यहां, दुखरोधन५ शिवपीव६।

---

१ मैं, २ शरीर परिग्रह, ३ आयुध विशेष, ४ पैंतालीस, ५ दुखनाशक, ६ सुखप्रिया,।

ले अति मिष्ट अमल गंगाजल नाना गंध मिलाये,
पुरट[१] कुम्भ शुभ जटित रतन सो जतन समेत भराये।
धर्मनाथ जिन धर्म धुरंधर तिन पद जलरुह[२] केरी॥
अजन आत्म अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी,
ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा
हुतभुकलयनप्रिया[३] युत चंदन नाम अरगजा जाको।
मिले कपूर सुगंध उठावत ल्याय कटोरा ताको। धर्मनाथ॥
ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
शालि महाअवदात[४] मधुर अति दीरघ कांति घनेरी,
भरि कलधौत[५] तने शुभथारा सुन्दर पुञ्ज अनेरी। धर्मनाथ॥
ॐह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
सुमन सुमन वच तनसों चुनि चुनि चम्प चमेली केरे,
ललित गुलाब तामरस[६] फूले औरहु फूल घनेरे। धर्मनाथ॥
ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
शुद्ध अन्न घृत माहिं पक्व करि व्यञ्जन अधिक बनाऊं,
भरि थारा चित चाव बढ़ावत लो प्रभु आगे ल्याऊं। धर्मनाथ॥
ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जोति जगाय पाय चित साथा घातित मोह अन्धेरा,
रतनन जड़ित कनक मय दीपक कर पर धरहु सवेरा। धर्मनाथ॥
ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ सोना, २ कमल, ३ अग्नि के मुख के समान लाल एवं प्रिय अर्थात केसर,
४ सफेद, ५ सोना, ६ कमल।

महकत दिगावली जा खेये ऐसी धूप भली सो,
दाहि धूपदह में प्रभु आगे लेत सुवास अली सो।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

चिरमट१ अम्रपनस२ दाड़िम३ ले दाख करित्थ४बिजौरे५
भरि भरि थार सदा फल नीके करि करि भाव सुधीरे६।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

धरि धरि चाव भाव दोऊ शुभ अन्तर बाहर केरे,
करि करि अर्घ बनाय गाय नित कहै सगुण बहु तेरे।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय सर्व सुखप्राप्तये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

अड़िल्ल—मात सुब्रता उर में जिनवर आनियो,
तेरसि सुदि वैसाखवनी शुभ जानियो।
गर्भ महोत्सव इन्द्र भली विधि सों कियो,
मैं पूजत हों अघ जिए हुलसे हियो।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल त्रयोदश्यां गर्भ कल्याणकाय अर्घ्यम्

माघ महीना तेरसि उजियारी कही,
जगत उधारण दीन बन्धु प्रगटे मही।
भविक चकोरा देखि देखि आनन्द हिये,
लिये अर्घ मैं पूजत शिव आशा किये।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म कल्याणकाय अर्घ्यम्

---

१ फूट, २ कटहल, ३ अनार, ४ कैथ, ५ एक प्रकार का नींबू, ६ सुंदर, ७ परिजन बंधु

विषय भोग सब विष के सम जाने मने,
राजपाट धन धान्य पुत्र दारा जने १।
माघ श्वेत त्रयोदश के दिन छांड़ि के,
संजम ले वन बसे जजहु पद जानिके।

ओं ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ला त्रयोदश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

पूस पूर्णिमा के दिन केवल होत ही,
भयो जगत मधि क्षोभ और उद्योत ही।
निज-निज वाहन चढ़ि इन्द्रादिक आयके,
जजत भये हित पाय जजहुं मैं भायके।

ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय पौष पूर्णिम्याम् ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम्।

निज कारज पर कारज करि जिन धर्म जू,
जेठ सनी सित चौथ हने वसु कर्म जू।
मुक्ति कन्या का वरी सिखर सम्मेद से,
मैं पूजत युग चरण बड़ी उम्मेद से।

ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थ्याम् मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्

त्रिभंगी.

जय धरमनाथ वर धरम धराधर आतम धरम हर टेक धरी,
तजि सकल अनातम लहि अध्यातम रात मिथ्यातम नाशकरी।
जय तुम पद पक्षी[२] पावत अक्षी[३] जो शिव लक्ष्मी प्रगट पने,
मन बच तन ध्यावे मनरंग गावे कष्ट न पावे सो सुपने।

स्रग्विणी.

जय मुदा[४] रूप तेरे क्षुधा रोग ना, ना तृषा ना मृषा लस्यना शोकना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोक में आवना।

---

१ परिजन बन्धु, २ आपके भक्त, ३ मोक्ष को देखने वाले ज्ञान-चक्षु,
४ आनन्द स्वरूप.

तात ना मातना मित्र ना शत्रु नापुत्र दारादि एको कहे कुत्र ना।पूरिये
वर्णना गंध ना ना रस स्पर्श ना भेद ना खेदना स्वेद ना दर्शना। पू०
कर्म ना भर्म ना और नोकर्म ना पंच इन्द्री भई रंच हू सर्मना१।पू०
रागना रोष ना मानना मोहना पापवा पुण्यना बंधना छोह२ ना।पू०
मार्गणा ना गुणस्थान संस्थान ना जीवसमासनाक्लेशस्थानना।पू०
मक्खि छ्पादि ना शंख कंखादिना लिंगना विंगना ज्ञान मर्यादना३।पू०
ना उदय कोऊना वर्गणा वर्गना४ शीततप्तादिकोऊईउपसर्गना।पू०
आदिना अन्त ना वृद्धना बालना, ना कलंकादि एको कहो कालना।पू०
गर्जना हर्जना ना कर्ज ना दर्ज ना श्लेष्मऔवातपित्तादिकामर्जना५
धार ना पार ना नाहिं आकारना, पारना वारना कोई संस्कार ना।पू०
नहिं बिहार अहार नीहारना तोहि योगी बतावें तरंतारना ।पू०
योगना काम संयोग को हेतु ना, एक राजै सदा ज्ञान में चेतना पू०
देव यातें नमो तोहि है फेरना, कीजिये काज मेरो करो देरना ।पू०

घत्ता, छंद मालती ।

जो जिन धर्म तनी जयमाल धरे निज कंठ महा सुख पावे.
होय न लोक तिसे निहचे जनमादि बड़े दुख ताहि मिटावे ।
पाय सो काल सुलब्धि भया फिरि जायके सिद्धि इते नहिं आवे,
लोक अलोक लखे सुख सो वह ताहि सबै जग सीस नवावे ।

---

१ इन्द्रिय सुख कम न हुआ, २ निर्जरा, ३ मक्खी, भौरा, सँख, कान खजूरा, अँगहीन, अल्पज्ञता, ४ जाति पर्याय ५ फारसी–मतलब, नुकसान, उधार देना, लेखा रोग.

छंद-ऐसो स्वामी धर्म देवाधि देवा, पूजे ध्यावे तोहि इन्द्रादि एवा,
जेते प्राणी लोक में तिष्टमाना, ते ते पावो तोदये१ सुक्ख नाना।

इत्याशीर्वादः

"ओंह्री श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।

१६-श्रीशांतिनाथपूजा



छंद गीता

शुभ हस्तिनापुर नृपति जहं हैं विश्व सेन महावली,
पितु मातु ऐरा शांति सुत भये कनक छवि देही भली।
कुरु वंश आयुष वरष लख चालीस धनु ऊँचे खरे,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि मृग चिन्ह धरि इह अवतरे।
जो होय चक्री रतिपति अरु तीर्थ करता सोहने,
करि काज सब विधि सबन के फिरि भये शिव तिय मोहने।

दोहा-सो हरो पातक करा किरपा धरो चरण यहाँ तनी,
मैं करूं पूजा होउ जासों, शुद्ध पातक को हनी।

ओंह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

लेके नीको नीर गंगा नदी को, जीते नीके मान छीरोदधीको,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी, जासों नासे कालिमाकाल केरी।

---

१ आपकी दया से।

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

जाकी आछी गंध ते भौर माते, ऐसी गंध चंदनादि सुताते,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेंद्रायभवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

गंगा पानी सीचि हुए ऽयदाता. शाली सोने पात्र मौ धारि साता
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ॐह्री श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

नाना रंग के स्वर्ग माहीं ऽयेजे, तेले आने पुष्प सुरभी लयेजे
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्टं तिष्टं शुद्ध पक्वान्न कीने, जिव्हा काजे सौख्यदाजानिलीन्हे
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीयो लियो द्योततो[१] सो बनाई[२] नासे जासों मोहअंधेरताई,
कीजे पूजा शांति स्वामीसुतेरी०

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊं धूपं शुद्ध ज्वाला प्रजाली, फैले धुँआ छादित अंशुमाली,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

लीजे पिस्ता दाख बादाम नीके, नीके नीके रत्न थारा भरीके,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

---

१ चमक रहा है, २ खूब ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्निर्वपामीति स्वाहा।

आठो द्रव्य कीजिए एक ठाहीं, लेके अर्घ भाव के नाथ मांहीं[1]
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी, जासों नासे कालिमा काल केरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम्निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द शिखरिणी– महा ऐरादेवी कमलनयनी चन्द्रवदना,
सुकेशीचम्पा-भा वपु लख शची होत अदना[2]
वसे जाके स्वामी गर्भ सतमी भाद्र सितना,
जजौं मैं ले अर्घम् नमत भव है पाप कितना.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदी जाने जो चौदशि सुभग है जेठ महिना,
जने माता भूपै हुवो खलक[3] को भाग दहिना[4]
महा शोभा भारी शचिपति करी जन्म दिन की,
करौं पूजा मैं इहां शुभ अरघ ले शांति जिनकी

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

तिथि भूता[5] नीकी सुभग महिना जेठ वदि मा,
तजो बाधा सारो मगन हूवे साता उदधि मा.
तहां देवाधीशं चरण युग पूजे अघ हरे,
यहां मैं ले पूजों अरघ शुभ ते पाद सुथरे.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

---

१ नाथ भगवान में भाव धरके, २ नीची, ३ दुनिया, ४ किस्मत जागी, शुभ भाग का उदय हुआ, ५ चतुर्दशी।

सदाशिव१ संख्या की तिथि शुभ कही पूस शुक्ला,
हने घाती चारों जादिन धरके ध्यान शुक्ला,
विराजे सो आछे समवसृत में ईश जगके,
जजों मैं ले अरघम् कलुष नशि जावें कुमग के.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

(यहाँ पाठ पौष सुदी १० होना चाहिये)

किते पापी तारे जग भ्रमण ते क्यों सरहिये२,
भलो जानो भूतादिन महिनमो जेठ कहिये।
लियो नीके स्वामी सिखर पर ते सिद्धि थलको,
जजों आछो अर्घम् ले चरण भूलूं न पल को।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

त्रिभङ्गी

जय जय गुणगणधर धर्म-चक्र-धर मुकति-वधू-वर रटत मुनी,
जय त्याग सुदर्शन लहत सुदर्शन३ चित अति परसन परमधुनी।
जय जय अघ टारन कुमति निवारन तुम पद तारन तरन सदा,
जय जो तुम ध्यावत कष्ट न पावत करम तनौ ऋण होत अदा४.

नाराच छन्द

पदारविंद शुद्ध जानि देत जाति चारिके,
नमें सदा आनंद पाय मंदता प्रजारिके।
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये।

---

१ एकादशी, ११ रुद्र, २ कहाँ तक किस प्रकार गुणगान करूं, ३ सुदर्शन चक्र छोड़कर सम्यक दर्शन को ग्रहण किया है, ४ चुकजाता।

लखे पवित्र होत नैन चैन चित्त में बढ़े,
महामिथ्यात् अन्धकार तात काल में कटे,
जिनेन्द शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनंत काल जीजिये । २ ।
नशाय जाय कोटि जन्म के अरिष्ट देखते,
भले सु वीतराग भाव होय रूप पेखते ।। जिनेन्द्र ।। ३ ।।
निशाप[१] सो मुखारविंद देखि पाकशासना[२]
चकोर के अधीन रूप और की चितास[३] ना ।। जिनेन्द्र ।।४।।
विनाशनीय चक्रवर्ती की विभूति त्याग के,
भये सुधर्म चक्रवर्ती आत्म पंथ लागि के ।। जिनेन्द्र ।।५।।
नमो नमो सदा आनंद कँद तोहि ध्यावही,
गणाधिपादि जे अनन्त मोक्ष पन्थ पावही ।। जिनेन्द्र ।।६।।
अनङ्ग रूप धारि मार[४] मर्दि गर्दि[५] कर दियें;
निरस्त के कुभाव भाव शुद्ध आपमें कियो ।। जिनेन्द्र ।।७।।
महान भानु ज्ञान सो उदोत होत नाथ जू,
विवेक नेत्रवान आप जानि भये सनाथ जू ।।जिनेन्द्र ।।८।।
खगेस[६] बाल पाद तो सहाय होय जासु को,
कहा करे महान काल व्याल कृष्णतासु को ।।जिनेन्द्र ।।९।।
अनादि कर्म काष्ट जालि बालि होत भये महा,
प्रकाशवान लोक में न दूसरो कहो कहा ।। जिनेन्द्र ।।१०।।

---

१ चन्द्रमा, २ इन्द्र, ३ इच्छा, ४ काम, ५ नाश ६ गरुड़ ।

अनेक देव देखिया न देव तो समान को,
लखा न मैं कभी कहूँ अनन्त ज्ञानवान को। जिनेन्द्र॥११॥
रहूं विहाय नाथ पाद कौन ठौर जायके,
कृपाल दीन जानिके दयाल हो बनाय के। जिनेन्द्र॥१२॥

घत्ता— जो पढ़े अहनिश शुद्ध इह जयमाल शांति जिनेशकी,
ताके न धन की होय कमती हास्य करे धनेशकी,
पद पास लोटे रोज रानी रति अवर की क्या चली,
पुनि भोगि दिवि के भोग सुन्दर वरे शिव रामा भली।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं म् नि० ॥

शार्दूल विक्रीडित

स्वामी शांति जिनेन्द्र के पद भले जो पूजसी भावके,
सो पासी अमलान पट्ट सतत बैकुण्ठ में चावके,।
सौमत्तादिक अष्ट शुद्धगुणको धारी भली भांति सौं,
होसी लोकपती सहाय सबको जोगी भणें शांतेसौं। इत्याशीर्वादः

'ओंह्री श्रीअनन्तनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मत्रेण जाप्यं दीयते

——:०:——

१७ श्रीकुन्थुनाथ पूजा



स्थापना छंद गीता।

शुभ नागपुर जहां सूर राजा पट्ट रानी श्रीमती,
जिन-कुन्थु जिन घर पुत्र हुये सरवार्थसिधि ते आगतो,
बपु कनक छवि धरि धनुष पैंतिस आग १चिन्ह विराजही,
आयुष पंचानु सहस२ की वंश कुरु मधि छाजही।

---

१ बकरी २—९५०००

मालती

सो जिन राज गरीब निवाज निवाजहु १ मोहि यहाँ पग धारो,
पूजूं जो मन ल्याय भली विधि आज गरीबन को हित पारो।
काल अनादि तनो दुविधा मुझ सो अब के दुविधा पद टारो,
मैं भव कूप परा जिनजी जन आपन जानि सिताब निकारो।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

द्रुति विलंबित

अमल नीर मुभिक्षुक २ चित्त सो, परम ३ कुम्भ भरे लब४नित्यसो
जजन कुन्थु जिनेश्वर की करों जिमि न जाचक की पदवी धरों

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

अधिक शीतल चन्दन ल्याय के अधिक सो कपूर मिलाय के। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

सदक उज्जल खंड विहाय के, सुभक मंद प्रक्षालित भायके। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

कनक के शुभ पहुप बनावहू विधि अनेकन के शुभ ल्यावहू। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नशत रोग क्षुधातिह देखते, इमि सु व्यंजन लेप प्रलेपते। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ कृपा करो, २ मुनि, ३ बड़े, ४ मुंह तक पूर्ण ।

ज्वलित दीपक जोति प्रकाशही, दशदिशा उजियार सुभासही। जजन

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दहन कीजे धूप मंगायके, अगनि में प्रभु सन्मुख आयके। जजन

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रमुक दाख बदाम निकोतना, सरस ले और लै कम होतना। जजन

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहरा—जल चन्दन अक्षत पहुप, चरू वर दीपक आनि,
धूप और फल मेलि के, अर्घ चढ़ाऊं जानि।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चाली

सावन दशमी अंधियारी, जिन गर्भ रहे हितकारी,
प्रभु कुन्थु तने युग चरणा, ले अरघ जजों दुख हरणा।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्।

पडिवा वैसाख सुदी की, लक्ष्मीमति माता नीकी
जिन कुन्थु जने सुख पायो, हम ह यहां अर्घ चढ़ायो।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

करि दूरि परिग्रह ताको, वैसाख सुदी पडिवा को,
सिर के जिन केश उपारे, मै पूजों अरघ सिधारे।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय वैसाखशुक्लाप्रतिपदायां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि चैत तृतीया ज्ञानी, हूवे प्रभु मुक्ति निशानी,[१]
तहं देव अदेवन आनी[२] पूजें हम पूजें जानी।

---

१ दर्शानेवाले, २ सर्वजीव,।

ओं ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा तृतीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां चैत्र सुदी ३ पाठ चाहिये)

तिथि शुभ वैशाख उजेरी, पड़िवा समेद गिरि सेरी,
करुणा निधि शिव तिय पाई. पूजों मैं अर्घ बनाई.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय वैसाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणकायअर्घ्यंम्

त्रिभँगी—जय चक्रीवीरा काम[१] शरीरा नाशत पीरा जग जन की,
जय गणपति नायक हो सुखदायक शोभालायक[२] छवितनकी
जय कुन्थ पियारे जग उजियारे, सब सुख धारे अलख गती
जय शिव पुर धरिये[३] आनंद भरिये जल्दी करिये विपुल मती।

छन्द त्रोटक

जय सूर तनय[४] तव मूरति मा, तप तेज तनी जनु पूरतिमा,
जय-शक्र शत क्रतु[५] सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा[६]
धरि काम सभी रति नार[७] तिमा, चित राखत ना कहु आरति मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा।
षट खंड तनी राज्य रमा, निज आतम भूति करी करमा[८]
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
हनि मुष्टिक काल तने सिरमा, घर त्यागि वसे शिव मंदिर मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

---

१ काम जैसे सुन्दर, २ सुन्दर, ३ परमात्मपद दीजिये, ४ सूर राजा के पुत्र, ५ इन्द्र, ६ दूर, ७ सब काम भाव रति में छोड़कर आप काम रहित हुए, ८ हाथ में, कब्जे में

धरि जीव उधारन को तुकमा१ जग जीत लियो यह कौतुक मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
करि शांति सुभाव हि जोर दमा२, मन आतम घायकचोर दमा३
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
भट मोह अरी पर मारनमा, नहिं चूक प्रभू तिहि मारन मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव अदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
दुखदा छल चोरि दिया नद मा, चिद रूप विराजत आनंद मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
लहि ज्ञान दिवाकर लोक तमा, हनि होत भये प्रभु शुक्ल तमा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
गृह त्याग रहे जन तो घरमा४ तिन को न विक्रोध५ तनी घरमा६
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
तुम पादन राज हिये कलि मा७, धरि सूर कहावत सो कलिमा८
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
प्रभु नाम रहे जिन तुण्डन९ मा, हैं पावन१० वे सब तुण्डनमा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
तुम नाम सहाय हमें कलिमा, नहिं दूसर देखि परे कलिमा११
जय शक्र शतक्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

---

१ पदक, २ वश, ३ दमन करके, ४ जिन मंदिरमें, ५ विशेष क्रोध, ६ गरमी, ७ फूल, ८ कलिकाल, पंचमकाल, ९ मुख, १० पवित्र, ११ मंत्र

कछु न कमती प्रभु तो बलमा, जय हो जय हो सब के बलमा,
जय शक्र शत-ऋतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

घत्ता छंद मालती।

कुन्थ तनी वर या जयमाल भवाब्धि तनी तरनी जग गावे,
जो जन आस तजे जग की चढ़ि या पर सो शिव लोक समावे,
पावे चैन अनँत तहां मनरँग अनंग की रीति गमावे,
को कवि भू पर सिद्ध इसो, जह के सुख की कथनी कथि पावे,

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ॥

सोरठा— कुन्थु नाथ भगवान, जे भव बाधा में पड़े,
तिन सबको बलवान, करो आपनी ओर लखि ॥ इत्याशीर्वादः

'ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

—:※:—

१८—श्रीअरनाथ पूजा

छन्द गीता [स्थापना]

शुभ नागपुर में नृप सुदरशन वँश कुरु मित्रात्रिया,
ता गेह अपराजित विमान हि त्याग अरह भये भिया
पाठान१ लक्षण धनुष त्रिंशति कनक वर्ण प्रभा धरी,
चौरासि सहस प्रमाण वरषन की सु आऊश परी,
दोहरा- सो करुणानिधि विमल चित सहस छानवे बाल२,
तजि शिव कामिनि वाज भये३ इहा धरो पग ताज४

१ मछली, २ बाल-रानी, ३ मोक्ष स्त्री के पति हुए, ४ चरण के नखूने।

ओंह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द वसंततिलका- पानी महान भरि शीतल झारिका में,

धारा प्रमाण भव लोचन गन्ध आमै,

पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,

नासें कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ,

ओंह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा

काश्मीर पूरित कपूर सु चन्दनादी,

नीके घसो मधुप[१] लुब्धत शब्द वादी ॥ पूजूं सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

चन्दा समान अवदात अखण्ड शाली,

नीके प्रक्षालित अनेक भराय थाली ॥ पूजो सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

चम्पा कदंब सरसीरुह[२] कुन्द केरी,

माला बनाय निज नैंन बनाय हेरी ॥ पूजूं सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नाना प्रकार पकवान क्षुधापहारी,

मेवा अनेकन मिलाय सु-मिष्ट भारी, ॥

पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,

नासें कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ,

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा

---

१ भौंरे मोहित हुए गुंजार कर रहे हैं, २ कमल, ।

दीपावली ज्वलित जोर कपूर वाती,
धारूं जिनाधिप पदाग्र जुडाय१ छाती । पूजूँ सदा ।

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपमीति स्वाहा॥

धूपादि चन्दन मिलाय कपूर नाना,
एकाग्र चित्त कर खे ऊं छांडि माना । पूजूँ सदा ।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

मीठे रसाल कदली फल नालिकेरा,
पिसता बदाम अखरोट लिये घनेरा । पूजूँ सदा ।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल चंदनवर अक्षत पुहुप सिधारिकै
नाना विधि चरु दीपक धूप प्रजारिकै,
फलसु मिष्ट लै सुन्दर अरघ बनाइये,
अरहनाथ पद ऊपर नित्य चढाइये ।

ॐह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम्निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द माधवी तेईसा

है गुण शील तनी सरिता अरनाथ तनी जननी सुख खानी,
भाग सराहत लोक सबै धनि दीरघ भागवती महारानी,
जा सम और न दूजी तिय महिमंडल मांझ कहू पहिचानी,
फागुण की सित तीज दिना तसु कोखि बसे जिन पूजहूं जानी,

ओंह्रींश्रीअरनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

चौदशि सेतकाहि अगहान तनी अरह जादिन जन्म लियो है,
तादिनकी प्रभुता सुनिके भवि जीवन केर जुडात हियो है२,

१ जो ठण्डक पड़े, २ मन प्रसन्न होना है ।

इन्द्र शची मिलके सब देवन आवके जन्म उत्साह कियो है,
सो दिन जानि बिचारि सभी वह आनन्द सो हम अर्घ दियो है

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अगहन शुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

सुन्दर हैं अगहान सुदी दशमी शुभ सो गनियो तिथि भारी,
सोचत तादिन एम प्रभू जगजाल सदा जियको दुखकारी,
लेत दिगंबर भेश भलो तृण जीरण के सम त्यागत नारी,
सो दिन देव सहाय हमें नित होउ चढावत अर्घ सिधारी.

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला दशम्याम् तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

कातिक बारसि सेत दिना लहि केवल ज्ञान महान अनूठा,
इन्द्र रचौ समवसृत सुन्दर योजन एक गनावत हूठा।
बैठत देव सिहासन ऊपर अन्तरीछ जहां भरि मूठा,
पूजत अर्घ बनाय तुम्हें फिरि चूमहिगो कहकाल अंगूठा।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ला द्वादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

चैत्र अमावस को जगदीश्वर छांडि दियो गुण चौदम ठाणा।
एक समय मधि सिद्ध पती जिन देव भये सुरनायक जाना॥
ले निज साथ प्रिया पृतिना१ करि मोद सनेद पहार पिछाना।
कर निरवान तना विधि ठान इहां हम पूजत पाद महाना॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा अमावस्यायां मोक्ष कल्याणकायअर्घ्यम्

छंद काव्य—जय जय अरह जिनेन्द्र देवाधिदेववर।
जय जय मिथ्या निशा हरण को महत दिवाकर॥

---

१ सेना।

जय अकलंक स्वरूप दोष मोचन अति सोहै ।
जय तिय लोक मझार दीनपति तो सम को है ॥

छंद पद्धरि

जय मिश्रा देवी के सुनन्द, मुख शोभित तुम अकलंक चन्द ।
जय दुरित तिमिर नाशन पतंग, माया वेली भंजन मतंग ।१।
जय चक्र किंकिणी छत्र दंड, चूड़ामणि चरम१ अरु असिप्रचंड।
ये सात अचेतन मणि महान, प्रभु छांडिदीन तिनके२ समान ।२।
रति राणी सेनानी मतंग, प्रोहित शिल्पी गृहपति तुरंग ।
सातौ चेतन मणिमन विचारि, लखि अथिर हृदय संवेग धारि।३
जो नाना पुस्तक देत दान, सो तजी काल निधि सहित ज्ञान ।
असि मसि साधन जो महतकाल, तासों निस्प्रेही भये कृपाल ।४।
हाटक भाजन मणि जटितसार, नैसर्प देत नाना प्रकार ।
तसु त्यागत छिन में व्है प्रबुद्ध, निज अंजुल भोजन करत शुद्ध।५
चौथी पांडुक निधि नाम होय, अर्पित सब रसमय धान्य सोय ।
तातें संवर करि जगतपाल, जग जीवनकौ कीन्हे निहाल ।६।
जो अप्पत पाटंबर३ विशाल, तसु नाम पद्मनिधि कहत हाल ।
तिहि त्याग कीन्ह दिगवसन नाथ, जय कीजे स्वामी अब सनाथ।७
निधि मानव नाना शस्त्र देत, ताऊपर रंच न करत हेत ।
भये शान्त स्वभावी तीन लोक, जीते प्रभु ने हुवे अशोक ।८।
पिंगला देत भूषण अनेक, तसु आस छांडि किय नगन भेक ।

---

१ ढाल, २ तृणके समान, ३ पीताम्बर

इह प्रभु की प्रभुताई मनोग, कर इन्द्री वश शुभ धरत योग। ६
निधि संख कहावत जो प्रधान, वाजित्र देव सो वेपमान।
सो छांडी जस पटहा१ बजाव, जय धन्य धन्य स्वामी सहाय।१०
निधि सर्वरत्न नामा मनोग, बहु रत्नन देवे को सुयोग।
तिहि कांच खंडवत् त्याग दीन, निज हिय में धारत रतन तीन।११
इन आदि अनेकन राज्य अँग है तिनसौ विरकत भये निसङ्क।
अध ऊर्ध मध्य परताप जास, छिटको रवि ते अधिकी प्रकास।१२।
जय जय साताकारी जिनन्द, छवि ऊपर वारों कोटि चन्द।
जय चिंतित अर्थादिक सुदेत, चिंतामणि इव करुणा समेत।१३।
जय पाप प्रहारी अगम पंथ, जय शिव तिय के आछे सुकन्थ,
जय गुण निधान कल्याण रूप, जय तीन लोक के भले भूप।१४।
हे चतुरानन प्रणमों सुतोहि, करिये प्रभु साता रूप मोहि,
यह अचरज हमारो मान लेहु, मो तनि तुम अपनी दृष्टि देहु।१५

छँद अडिल्ल— अरह जिनेन्द्र तनी शुभ जय माला बनी,
जो धारत निज कँठ होय शोभा घनी,
शिव रमणी तसु आय अलिंगे आपुही,
मनरँग स्वर्ग श्रियाकी का कथनी कही।

ॐ ह्री श्री अरनाथजिनेंद्राय जयमालार्घ्यं नि०

दोहरा— जामनीश२ भगवान मुख, पद कुवलय३ युत मोद४।
लखि लखि भविक चकोर अलि, सुखलीजो भरि गोद॥ इत्याशीर्वादः
“ॐ ह्री श्री अरनाथजिनेंद्राय नमः”॥

---

१ ताली चुटकी बजाने में, २ चन्द्रमा, ३ कमल, ४ हर्ष सहित।

१९ श्रीमल्लिनाथ पूजा

छंद गीतका

नृप कुंभ मिथला पुरी अद्भुत मात नाम प्रजावती
ता पुत्र अपराजित विमान हि त्यागि मल्लि भये जती।
पचीस धनुष उचाय लक्षन कुंभ कनक प्रभा बनी
आऊष पचपन सहस वरष इक्ष्वाकु वंश शिरोमणी।

दोहा—कुंभ चिन्ह धारी प्रभो, कुम्भ नृपति सुत आज,
आप चरन धारौ इहां, जो सुधरै मम काज,

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छंद वसन्ततिलका—आछो प्रवाह गंगा जल नीर तासौं,
मारी भराय शुभ रुक्मतनीय१ जासौं,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौं सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी।

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

श्री चन्दनादि बहु गंध मिलाय धारी,
गुंजै दुरेफ तसु ऊपर पुंज भारी,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी,

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

---

१ सोने की झारी।

जो चन्द्रमण्डल लजावत शुद्ध शाली,

खंड बिना विमल दीर्घ सु साजि थाली ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

चम्पा कदंब मचकुन्द सुकुन्द केरे,

लीये सुगन्धित प्रफुल्लित फूल हेरे ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी सुमोदक अनेक प्रकार नीके,

मीठे अमान १ करि शुद्ध विहायफीके ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

माणिक्य दीपक महान तमोपहारी,

दिक्चक्र २ सम्यक प्रकाशित तेजधारी ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

भूचक्र पूरित सुगन्ध सुधूप आनी,

दाहूँ जिनाधिप प्रदाग्र महान जानी ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्राक्षा बदाम शुभ आम्र कपित्थ लीये,

नाना प्रकार भरि थार सुभाव कीये ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पानी सुगंध वर अक्षत पुष्प माला,

नैवेद्य दीप अरु धूप फलौघ आला ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

---

१ खूब, २ सर्व दिशा ।

बर्षावत शुभ रत्न इन्द्र शोभा करी,
मैं पूजत ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

वदी वैसाखमहीना दशमी रोजही,
आनन्द कंद जिनेंद्र चंद्र प्रगटे मही।
जन्म महोत्सव विधिपूर्वक कीन्हो हरी,
मैं पूजन ले अर्घ धन्य सुख को घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यंम्

दशमी वदि वैशाख तपस्या काज जू,
वसे लोचकरि बनमें तज सब राज जू।
सोकिरपा कर धन्य सुमति दीजे खरी,
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैसाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यंम्

नौमो वदि वैसाख मांहि लहि ज्ञानको,
पतित उधारे केते गए निर्वान को।
तीनों लोक मंझार सो कीरति विस्तरी,
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यंम्

वदि फाल्गुन की द्वादशि तिथि नीकी कही,
गिरि समेद ते लीन्ही अष्टक जो मही।
तिन्हें अष्ट मद मोचि शोचि पद्वो खरी
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णाद्वादश्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यंम्

जयमाला—छंद त्रिभंगी

जय जय मुनिसुव्रत, धरत महाव्रत, कर निरमल चित्तपरम[१] भये
देवन के देवा सब सुख देवा शचिपति सेवा साहि[२] ठये ॥
जय जय गुणसागर जगत उजागर हो नर नागर दोष हरे ।
तेरी अद्भुत गति लखत न गणपति मनरंग नित प्रति पैर परै ॥

छंद स्रग्विणी—जय कृपा कन्द अनन्द रूपी सदा,
हेरिहारचो बिडौजा[३] न तृष्णा कदा,
देव थारी शविह[४] छवी मारकी[५] मारणी[६],
रोग सोग व्यथा भव[७] व्यथा[८] आस्नी,
मोहवी[९] मुक्ति वामा तनी रोहनी,
सोहनी तीन भू की महामोहनी । देव थारी० ॥२
चंद्रकी चंद्रिका को तिरस्कारणी,
सूरकी जोति सोभा अनन्ती वणी । देव थारी० ॥३
पुद्गलाणु जेती लोक में थी भली,
त्याय धाता रची. एक भामंडली । देव थारी० ॥४
कर्मनासा शिवासा दुरासा[१०] नहीं ।
दृष्टिनासाधरे नाहि गासा[११] कही । देवथारी० ॥५
क्षुत्पिपासा दे ह्यक्षिरा पीरा हरी,

---

१ महान् पूज्य. २, श्रेष्ठ, ३ इन्द्र, ४ मूर्ति, ५ काम, ६ नाशक, ७ संसार, ८ दुःख, ९ मोक्षकी उमेद देनेवाली, १० निराशा, ११ येह ।

छंद घत्ता—भवि जनमन प्यारे तारे दुखी बहु का कहु,
कथि कवि-जन हारे ना रे लगी गणना तहु।
तिह कर जय माला आला महा गल जो धरै,
निज करि शिव-आला १ बाला २ बनै भव सो हरै।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

सोरठा—अहो मल्लि जिन देव, करिये करुणा जगत पै।
जो सुख पावें एव, तो चिनि सुख कहु रैंचना ॥इत्याशीर्वादः॥

"ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

:—※—:—※—:

२० श्रीमुनिसुव्रतनाथपूजा



स्थापना—नृपसदन ३ नगरी कहत ताको भूप नामसुमन्त है।
श्यामा सुराणी जासु सुत मुनिसुव्रत नाम महंत है ॥
तनु श्याम ऊंचे बीस धनु हरि वंश कच्छप अंक है।
तजि स्वर्ग प्राणत तीस सहस सुवर्ष आयु निशंक है ॥

दोहा— हेमुनि सुव्रतनाथ, जगत कष्ट दारुण हरण।
मो पर धरिये हाथ, इहां चरण धारो प्रभो ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

---

१ मोक्ष लक्ष्मी को अपनी कर लेता है, २ उत्कृष्ट पद ले, ३ राजगृह।

चौपाई—शीतल नीर कपूर मिलाय, हाटक तने कलश भरवाय।
पूजूँ श्री मुनिसुव्रत पाय, पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं नि० स्वाहा
केसर मलयागिर कर्पूर, मिलै कटोरा भरि भरिपूर। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् नि० स्वाहा
मुक्ताफल समान अति प्यारे, अक्षत धवल सम्हारि सिधारे। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा
नाना वरण तने ले फूल, निकसत तिनते गंध सुथूल। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा
व्यंजन नाना भांति बनाय, मिष्ट मिष्ट देखत मन भाय। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा
घृत पूरित दीपक ले आनौं, प्रज्वलित जाकरि तिमिर पलानौं। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।
धूपायन कंचन का लेय, तामे धूप दशांगी खेय। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.
मातुलिंग कदली फल भरे, थार ल्याय कंचन मणि जरे। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा
नीर आदि वसु द्रव्य मिलाय, शुभ भावन सो अर्घ बनाय। पूजौं०
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

छंद अडिल्ल—श्रावनवदि दुतिया मुनि सुव्रतनाथ जू,
श्यामा उर में बसे सकल सुख साथ जू।

ओ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

दोहरा—चैत्र शुक्ल पडिवा बसे, गरभ माहिं जिन मल्लि.

पूजत शुद्ध सु अर्घले, दूरि होत सब सल्लि ।

ओ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

मगसिर सुदि एकादशी, जन्म लीन महाराज,

अर्घ लिये पूजत तिन्हैं, चाहत पुन्य समाज ।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

अगहन सुदि ग्यारसि दिना, केश सुलुंच करन्त,

पूजत तिन पद अर्घसो पातक सकल नसंत ।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय अगहन शुक्लैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

करम मल्लि निरसल्लि करि, दोज पूष वदि माहिं,

लहत नवल केवल लबधि, पूजौं अर्घ चढाहिं ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्णा द्वितीयायां ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

पांचै फाल्गुण शुक्ल की त्यागि समेद पहार,

अष्टकर्म हनि सिद्ध भये, जजौं अर्घले थार ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणकायअर्घ्यम्

छंद भूलना

जय सुधुनि के धनी, सुभग मूरत बनी, माथ नावें गणी रोज तोही.
जानि सुंदर गिरा, असुर नर खग सुरा, लोक की इन्दिराआनिमोही
क्षोभते रक्खते, भजत दुख दूरते, मिलत पद अटल, जो कहत वोही
हे दया गल,मम हाल पै हाल दै करो जेम निष्कर्म आनन्द होही

छंद त्रोटक

जय लोकित लोकअलोक नमो, सब शोषित शोक अशोक नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेववरम् १
जय पोषित आतमधर्म्म नमो, प्रभु नाश किये वसुकर्म्म नमो।जय
जय भवदधितार जहाजनमो, सब राखत हो जन लाज नमो।जय
जय दारिद-भंजन नाथ नमो, सुख वारिधि वर्द्धक साथ नमो।जय
जय ज्ञान कृपाण प्रचंड नमो भट मोह करो शतखण्ड नमो।जय
जय पाप पहार समीर२ नमो जनकी हरिले भवपीर नमो।जय
जय देह महादश ताल३ नमो, करुणाकर नाथ कृपाल नमो।जय
जय नायक भाषत तथ्य४ नमो. सब बातन में समरथ्थ नमो।जय
तुम आतमभूत प्रशस्त नमो. किय भूषित लोकसमस्त नमो।जय
जय काम कलंक निवार नमो, तुम भये भवसागर पार नमो।जय
जय आनन चारि प्रसन्न नमो, अरु दोष अठारह शून्य नमो।जय
जय इन्द्र प्रपूजित पाद नमो, अन-अच्छर निसृत नाद नमो।जय
जय मान-बली-हत वीर नमो, गुणमण्डित है सब धीर नमो।जय
पद दे अपनो जगदीश नमो, मनरंग नवावत शीस नमो।
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव वरम्।

---

१ श्रेष्ठ, २ आंधी, ३ जिन प्रतिमा का लक्षण शिल्प शास्त्रों से (१२ अंगुल-१ ताल) ४ तत्त्व।

रूप सौंदर्य्य की है पताका खरी,
देव थारो शविह मार की मारनी,
रोग सोग व्यथा भव व्यथा टारनी ॥६
लोकते१ जासु के लोक२ होवे नहीं,
लोकको भद्रकारी सुलोको३ कहीं। देव थारी० ॥७
ज्ञानकी राजधानी बखानी वर',
लोक जात प्रवानी४ सुहानी५ गिरा६ । देव० ॥८
दक्ष७ जोकी गहे पक्ष८ प्यारो भले,
चक्रधारी९ तनी लक्ष १० पावैं दलें११ । देव० ॥९
खूब खूबी लसै जो वसै ना कहीं,
जाहि देखे नसे पाप जेते सही । देव थारी० ॥१०
राम केसौ१२ रुशेषौ१३ न लेशौ लहै ।
पार१४ गामे१५ गनेसो१६ कलेसौ१७ वहै१८ । देव० ॥११
पादराजीव१९ जो जीवरा२० जी धरै२१,
सो मिजाजी२२ महामोह माजो २३ करै । देव० ॥१२
जे जना आस तेरी सदाही करैं,
ते शितावी२४ भली मुक्ति वामावरै । देव थारी० ॥१३

---

१ दर्शन, २ संसार, ३ भद्रपुरुषों ने कहा है, ४, पवित्र ५ सुन्दर, ६ जिनवाणी, ७ बुद्धिमान जो कोई, ८ मत, ९ चक्रवर्ति १० लक्ष्मी, ११ लात, मारे, १२ केशव, १३ शेषनाग, १४ जरासी बराबरी नहीं कर, १५ स्तुति करें, १६ गणधर, १७ दुःख, १८ नाश करें, १९ चरणकमल, २० भव्य जीव, २१ मनमें रक्खे, २२ घमण्डी, २३ परास्त, २४ जल्दी.

और झूठी सबै बात तेरे बिना,
रोजजपै[1] महा सो महा जो गिना[2] ॥ देव थारी०॥१५
मंदभागी न जाने तिहारी कथा,
वर्ण वीघर्ण आंधो ल.खे न यथा ॥देव थारी० ॥१६

छन्द—इय जयमाला मुनिसुव्रत की जो भवि पढ़ै त्रिकाल,
ह्वै निरद्वन्द्व बन्ध सब तजि कै जागे ताकर भाल[3]
पराधीन नहिं होय कदाचित पावै आनन्द जाल,
तजि जग भवन[4] भवन सिद्धनकी सो नर परसै[5] हाल[6]

ॐह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि०

दोहा—हे करुणानिधि शर्म निधि. मुनि सुव्रत व्रत सीव[7]
तो प्रसाद भवि जीवसब फूलौ फलौ सदीव। इत्याशीर्वादः॥

"ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय नमः" इति जाप्यं।

२१ श्रीनमिनाथ पूजा

स्थापना गीता छन्द

शुभ बसत मिथिला पुरी जननी नाम विपुला जानिये,
पितु नाम भाख्यो विजयरथ नमिनाथ तिन सुत मानिये।
इक्ष्वाकु वंशी हेम सा तनु कंज[8] चिह्न सुहावने,
दससहस बरष सुआयु पंद्रह चाप[9] ऊंचे ही बने।

---

१ जप करे, २ वह बड़े योगी हों, ३ पशानी किस्मत, ४ संसार, ५ स्पर्श करे, पावे, ६ जल्दी, ७ सीमा, हद, ८ कमल पंखुड़ी, ९ धनुष,

दोहरा— मो परमेश्वर परम गुरू, परमानंद निधान,
कदि करुणा मुझ दीनपे, इहां विराजौ आन।

ओं ह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ओंह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

अथाष्टकी छन्द— मधुर मधुर पयसा[1] शरद चन्द्रासु जैसा[2]
मुनिवर चित जैसा ल्याय पानीय तैसा,
नमि जिनवर केरे कज्ञ आभासु हेरें,
पद कमल घनेरे पूजिये भक्ति प्रेरे,

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा

घसित ले पटीरं[3] शुद्ध जासो शरीरं,
भ्रमत भ्रमत तीरं जो हरै सद्दा पीरं ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

चुनि चुनि सित[4] आने वेश तंदुल बखाने,
परम रुचिर जाने देखि नैना लुभाने ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

सुमन मन पियारे पाक मंदार वारे,
कालेयन कहना रे खूब फूली विथारें ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

---

१ दूध, २ साफ, जैसे शरद पूर्नो की चांदनी, ३ चन्दन ४ उज्ज्वल।

मधुर अनन साजी पक नैवेद्य साजी,
क्षुध दर्जास १ गमाजी२ देखि चंद्राह्न लाजी, ॥ नमि ॥

ओंह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु तिमिर नसावै दीपै उद्योत ल्यावै,
निज परहि लखावै दीप एव बनावै ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दहन करत नीके धूप नाना सुरंगी,
जिहपर बहुभृंगी नृत्यवं होव रंगी ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल शुकप्रिय३ नीके आम्र निंबु न फीके,
दरशन शुभहीके रत्न थारा भरीके, ॥ नमि जिनवर ॥

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गीता छन्द— जलगंध अक्षत सुमनमाला चारु दीप जरायके,
वर धूप नाना मधुर फल ले अर्घ शुद्ध बनायके ।
पद [illegible] आकृति देखि दुखहर पूजिये हरषायके,
जो [illegible] अनुपम इन्द्र पदवी पायके ।

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा— [illegible], [illegible] बदी द्वितिया दिना,
गर्भ [illegible] जिन पद पूजौं अर्घ सौं,

ओंह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय [illegible] कृष्ण द्वितीया गर्भकल्याणअर्घ्यम्

---

१ रोग, २ दूर करने वाली, ३ अमरूद ।

वदि अषाढ़ तिथि वेश, दशमी जन्म लियो प्रभू,
नमत सकल अमरेश, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय आषाढ कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

भये दिगम्बर भेश, वदि अषाढ़ दशमी दिना,
लीनो आतम देश, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय आषाढ कृष्णा दशम्याम् तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

ग्यारसि अगहन श्वेत, ज्ञान भाव उद्योत किये,
जीत अघाती खेत, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

चौदश वदि वैसाख, पर्वत सुभग समेदते,
अष्टकरम करि राख, तिन पद पूजें अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्

त्रिभंगी छंद

जय जय निसनेही मुक्ति सनेही हो निर्मेही कुशल भये,
जय जय सिंहासन ऊपर आसन करि वच भाषन सुरल थये,
जय जय तह केरे सुख बहुतेरे भुगतन मेरे कलुष हरो,
जय जय नमि स्वामी अंतर्यामी मनरंगको निजदास करो,

छन्द

जय मङ्गल रूप प्रताप धरे, करुणारस पूरित देव खरे,
जगजीवन के मन मायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो। १

१ पवित्र,

मन माख न राखत एक रती, परमागम भाषत शुद्ध मती,
सुख इन्द्रिनके नसायक हो, नमिनाथ नमो शिव दायक हो। २

लहि केवल तेरम ठाम ठये, अकलंक भये अरु दोष[1] गये,
सब ज्ञेय पदारथ ज्ञायक हो, नमिनाथ नमो शिवदायक हो। ३

चतुरानन देखत पाप विलै, दश चार रतन नव निद्धि मिलै,
गणनायकके प्रभु नायक हो, नमि नाथ नमो शिव दायक हो। ४

प्रभु मूरति आनन्द रूप बनी, दुति लज्जित कोटि दिनेश तनी,
तुम दीनन के दुख घायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो। ५

समवसृत[2] सार विभूति धनी पदपूजत इन्द्र; नरेंद्र गणी,
जिनराज सदा सब लायक हो, नमिनाथ नमो शिवदायक हो। ६

प्रभु कांति विलोकित मान हनी, दुति चँद सकोच करी अपनी,
यम मारन तीक्षन सायक[3] हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो ७

जग माहि कुतीरथ उथ्थपिता[4] तुम भूरि[5] उधार[6] करे पतिता
प्रभुतीरथ[8] के प्रभु पायक[9] हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो। ८

भव आर्णव[10] पार उतारत भये, प्रभु आप तरे अरु तारन भये,
तिहुँ लोकन माहि सहायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो ९

अरिहंत स्वरूप विशाल लहो, झषकेतन[11] मारन लोभ दहो,
चव घातिय कर्म खपायक हो नमि नाथ नमो शिवदायक हो१०

---

१ द्वेष, २ समवसरण, ३ तीर, ४ कुतीर्थ व कुमत को उठाने या हटानेवाले, ५ बहुत, ६ उद्धार ७ पापी, ८ परमात्मा-पद, ९ पहुँचानेवाले, १० संसार-समुद्र, ११ कामदेव।

प्रभु मागधि भाष खिरे सुखरी, सुनि जीवनकी सब भ्रांति हरी.
चव वेदन१ के प्रभु गायक हो नमि नाथ नमो शिवदायक हो ।११
सिगरा।ज करि कृतकृत्य भये गुण पूरति आनन्द लेत भये,
भट मोह की चाट बचायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो।१२
एक नाथ विना सिगरो कछु ना, तिहिं ते शरणा गहिये अधुना,
ममता हरना निकषायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो ।१३
कविराज थके बुधि मो कितनी, वरणूं कंहलों छवि नाथ तनी,
तुम भाव धरे शुभ सायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो।१४
छंद-श्री नमिनाथ जिनेश कृपाकर की जयमाल महा सुखकारी,
जानि मने निज कंठ धरै नर सो सब सुक्ख करै नित जारी
जाकर हेत चले दिविसे अमराधिप आय करै बहुचारी,
को कहि बात बढ़ावहि जा कहि आपुन आप मिलै शिवनारी,
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

सोरठा-भो नमिनाथ दयाल, ऋद्धिसिद्धि दायक सदा,
तुम प्रसाद जगपाल, आनंद बरतौ भविनकोइत्याशीर्वादः
"ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

:—※—:—※—:

२२ श्री नेमिनाथपूजा



गीता छंद-शुभ नगर द्वारावती राजत समुद्रविजय प्रजापती,
तसु गेह देवी शिवा ताके नेमिचन्द्र भये जती.
तन श्याम वर्ष हजार आयुष धनुष दशकि शोभितम्
यदुवंशकुलमणिवर शीघ्र सगुण घरको तजि भवराजितम्,

१ प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग, २ ओंकार

दोहा—समुद विजयके लाडले, पशुन छुडावन हार,
रजमति रानी त्यागि के, जाय चढे गिरनार।
तहं शुभ आतम ध्यान धरि, पाये केवल ज्ञान
शिव देवी के नंदवर, इहां विराजो आन।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय फाल्गुनशुक्लाष्टादश्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यम्
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

छन्द गीता—शुभ कुंभ कंचनके अजित सुख कलश आकू तक्ये किये
भरवाय तिन मधि अमल पय[1] पयर सम मधुर सुगवा लिये
श्री नेमिचंद जिनेन्द्र के चरणारविंद निहारि के,
करि चित्तचातक[3] चतुर चर्चित अजहू हित धारिके।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

ले श्वेत चंदन कृष्ण अगर कपूर वासित शीतलम्,
तसु गंध वश मधुपावली[4] मदमत्त नृत्यत केकलं। श्री नेमि॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

नहि खंड एको सब अखंडित स्वाय अक्षत पावने।
दिशि विदिशि जिनकी महक करि महकै लखौ मन भावने। श्री नेमि॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनहरन बरनै विकसत फूले कमलकुंद गुलाब ये,
केतुकी चंपा चारु मरुवा पुष्प प्यार झुलावके[5]। श्री नेमि॥

---

१ पानी, २ दूध, ३ ध्यान लगाकर, ४ भिलार भौंरे गुंजार कर रहे हैं, ५ चमक दमक।

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

पक्वान्न पूरित गाय घृत सौ मधुर मेवा वासितम्,
गं.क्षीर मिश्रित थार भरि भरि क्षुधा पीर विनाशितम्। श्री नेमि

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

कँचन कटोरी माहिं बाती धारि के घनसार[1] की,
प्रभुपास धारत मिलत मग[2] भव[3] उदधि के[4] उस पारकी। श्री नेमि

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।

अति उबलत ज्वाला माहिं खेवत धूप धूम्र सुहावनी,
बस गँध भौंरा पुँज तापर करत रव[5] सुख वासिनी। श्री नेमि ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

फल आम्र दाडिम् वर कपित्था लांगली[6] अरु गोस्तनी[7],
खरबूज पिस्ता देवकुसुमा नवल[8] पुँगी[9] पावनी। श्री नेमि ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल गँध अक्षत चारु पुष्प नैवेद्य दीप प्रभाकरम्
वर धूप फल करि अर्घ सुन्दर नाथ आगे ले धरम्। श्री नेमि ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय सर्व सुखप्राप्तये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

छँद मालिनी

कातिक मास सुदी छठि के दिन श्री जिननेमि प्रभू सुखकारी,
गर्भ रहे यदुवंश प्रकाशक भासत भानु समान सम्हारी,

---

१ कपूर, २ डगर मार्ग, ३ संसार, ४ समुद्र, ५ शब्द, ६ नारियल
७ मुनक्का, ८ नई ९ सुपारी

मात शिवा हरषी मन में जनु आज प्रसूत भली महतारी,
सो दिन आज विचार यहां हम पूजन अर्घ सँजोयके भारी,
ॐह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय कार्तिक शुक्ला षष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

श्रावण की शुक्ला छठि के दिन जन्मत पातक दूर पलाने,
जानि सुरेश गयो विधि पूर्वक मात धरे जहँ आनन्द ठाने,
जाय शची धरि बालक दूसर लेय जिनेश्वर होत रवाने
जन्माभिषेक१ कियो उनने हम अर्घ चढावत आनन्द माने,
ओंह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला षष्ठयां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

साजि चले यदुवँश शिरोमणि ब्याहन काज निशान बजाये,
देखि पशू दुखिया बिललात कहो प्रभु ये किहिं काज घिराये,
सारथि के मुखते सुनि बात उदास भये पशुवान छुड़ाये,
योग धरयौ छठि श्रावण की शुकला दिन जानिके अर्घ चढ़ाये,
ओं ह्रींश्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ला षष्ठायां तपकल्याणकाय अर्घम्

लेकरि योग रहे दिन छप्पन लौ छद्मस्थ प्रभू शिवगामी,
क्वारसुदी परिवाके दिना, चव घातिय घातित अन्तर्यामी,
केवल ज्ञान लहो भगवान दिवाकर मान भये जिन स्वामी,
सो दिन आप चितारि यहां हम अर्घ चढावतहू जिननामी,
ॐ ह्रींश्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय आश्विनशुक्ला प्रतिपदायांज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

मास असाढसुदी सतमी गिरिनार पहार ते कीन्ह पयाना,
।जाय बसे शिवमंदिर माझ अनन्त जहां सुख को नहिं माना,

१—अभिषेक ।

जानत मोक्ष कल्याण तबै शचि नाथ समेत सबै गिरवाना[1]
पूजि यथा विधि गे घर सो हम पूजत अर्घ लिये तजिमाना[2]

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ शुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यंम्

छन्द काव्य—जय यादव वर वंश तने शृङ्गार विश्वपति,
जय पुरुषोत्तम कमलनयन प्रभु देत सुगति गति,
जय अनमित वर ज्ञान धरन बैकुण्ठबिहारी,
जय मिथ्या मत तिमिर हरन सूरज हितकारी।

त्रोटक छन्द

जय नेमि सदा गुणवास नमो, जय पूरहु मो मन आस नमो,
जय दीन हितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो।
जय कालिम लोकतनी सगरी, तसु नासन कौं तुम मेघ झरी। जय०
जय काल वृकोदर नासक हो, मत जैन महान प्रकाशक हो। जय०
घनश्याम[3] जिसा तनश्याम लहो, घननाद[4] बरोबरि नाद लहो। जय०
तुम लोक पितामह लोक[5] रही, पितु मात घर कुलचन्द सही। जय०
तुम सोचतसोच न होतकदा, जयमूरित आनन्द जालसदा। जय०
जय ज्ञानरतन तनी क्षिति[6] हो, तुम राजत दासन की मिति हो। जय०
जय नासत हो भव भ्रामरिका[7] तुम खोलि दई शिव पामरिका[8]। जय०
तुम देखत पाप पहार खिले, तुम देखत सज्जन कज खिले। जय०

---

१ देवता, २ मान रहित होके, ३ कृष्णजी, ४ मेघनाद, ५ संसार, ६ क्षिति; पृथ्वी, ७ भूल भुलय्यां, ८ दासी, मुक्ति रूप दासी को आजाद कर दी,.

तुम लोक तने शुभ भूषण हो, जिनराज सदा गत दूषण हो। जय०
तुम नाम जहाज चढ़ै नर जे, तिनि पार भये सुखभाजन जे। जय०
कुसुमायुध मारनहार भले, वसु कर्म्म महान कठोर दले। जय०
तुमसे तुमही नहिं दूसर को, सब छांड़ि ममत्त दया परको। जय०
तुम पाद तनी रज सीस धरै, जन सो शिव कामिनि जाय वरै। जय०
प्रभु नेमि निशाप[1] निसाप[2] करो, मनरंग तनी भव पीर हरो। जय०

घत्ता छन्द–यह शिवानन्द[3] प्रभु नेमिचन्द की गुणगर्भित जयमाल
जो पढ़ै पढ़ावै मन वच तन सौं निज दरसे दरहाल[4]
पातक सब चूरे आनन्द पूरे नासे यम की चाल,
पूरनपद होई लखे न कोई भापत मनरंगलाल।

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि०

सोरठा—समुद विजयके नन्द, नेमिचन्द करुणायतन,
तोरि देउ जगफन्द, जो स्वछन्द वरतै भविक। इत्याशीर्वादः॥
"ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय नमः" इति जाप्यं।

—:—:०:—:—

२३ श्रीपार्श्वनाथ पूजा



गीता छन्द

नगरी बनारसि अश्वसेन सुपिता वामा मात है,
तजि स्वर्ग प्राणत पार्श्व स्वामी लसत नव कर गात[5] है।

---

१ नेमिचन्द्र, २ इन्साफ न्याय, ३ शिवादेवी के नन्दन पुत्र, ४ फौरन,
५ नौ हाथ का शरीर,

इक्ष्वाकु वंशी भुजग लक्षण वर्ष इकशत आव है,
घनश्याम इव तन धरत आभा देखि मो मन चाव है।
दोहा—हे पारस भगवान अब, दयासिंधु गम्भीर,
यहां आय तिष्ठो प्रभो, उसरि जाय भवपीर।
ओंह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द त्रिभंगी

पन्नग ठकुराई सहजै पाई तुम वच सुनि के पवनभखी[1]
तिनकी ठकुराई कहिय न जाई प्रभु प्रभुताई यह सुलखी,
वामा के प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और संवारे शिव दरसों।
ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

सो भुजंग गुसाईं पुनि इत आई फण की छाई करत भली[2]
ताकरि मद हारचौ कमठ विचारचौ प्रभुढिग धारचौ सीस चली
वामाके प्यारे जग उजियारे चन्दन सो थारे पद परसों। जिन०
ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु केवल पावा ऐलविल[3] आवा रुचिर बनावा समवसृतम्,
तामाहि विराजे सूरज लाजे इम छविछाजे कहत श्रुतम,
वामा के प्यारे जग उजियारे अक्षत सो थारे पद परसों। जिन०

---

१ सर्प, २ अच्छी प्रकार, ३ कुबेर,

ओंह्रीं श्री पाश्र्वनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

आसनते सूधे अंगुल ऊंचे चव चव आनन नाथ भये,
तिनते सुख दानी खिरत सुवानी सुनि भवि प्राणी सुगति गये,
वामाके प्यारे जग उजियारे पुष्प सो थारे पद परसों । जिन०

ओंह्रीं श्रीपाश्र्वनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

बहु देशन माहीं प्रभु विहराही भवि जीवन संबोधि दये,
मिथ्या मतभारी तिमिर विदारी जिन मत जारी करत भये,
वामाके प्यारे जग उजयारे चरु सो थारे पद परसों । जिन०

ओंह्रीं श्रीपाश्र्वनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

कछु इच्छा नाही[१] बिन डगधारी होत विहारी[२] परमगुरू,
जिन प्राणिनकेरा तरब[३] सबेरा[४] तितै नाथ मग होत सुरू,
वामाके प्यारे जग उजियारे पैद सो थारे पद परसों । जिन०

ओंह्रीं श्रीपाश्र्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

सो शविह तिहारी आनन्द कारी रोज हमारी पीर हरे,
जाकी दुति भारी जग बिस्तारी दरसत कारी घनिनि दरे,
वामाके प्यारे जग उजियारे धूप सो थारे पद परसों । जिन०

ओंह्रीं श्रीपाश्र्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभ पारसस्वामी अन्तर्यामी हौ बड़ नामी विश्वपती,
थारे गुण गाऊं शीस नवाऊं बलि बलि जाऊं दे सुगती,
वामाके प्यार जग उजियारे फल सो थारे पद परसों । जिन०

---

(१) निरिच्छक हो गये (२) पांव टिलाए बिना, आकाश गमन करते हुए.
(३) तिरना, संसार से पार होना. (४) निकट अर्थात् निकट भव्य.

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल चन्दन शुभ अक्षत पुष्प सुहावने,
दीपक चरू वर धूप फलौघ[१] सुपावने[२],
ये वसु द्रव्य मिलाय अर्घ कीजै महा,
तुम पद जजत निहाल होत औ हित कहा।

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंचकल्याणक—वैशाखवदी दुतियाके दिन गर्भ रहे निज मांके,
वामा उर आनन्द बाढे हम अर्घ चढावत ठाढे।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायवैशाख कृष्णा द्वितीया गर्भकल्याणकायअर्घ्यम्

वदि पूष चतुर्दशि जानो, प्रभु जन्म लिये सुखखानी,
करि अर्घ यहां हम ध्यावें, मनवांछित सुख अब पावें।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पौषकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घम्

(यहां शुद्ध पाठ पौष कृष्णा एकादशी होना चाहिये)

लखि पौष एकादशि कारी, प्रभु ता दिन केश उपारी,
तप काज रहे वनमाहीं. हम यहां पर अर्घ चढ़ाहीं,

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्णैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

तिथि चैत्र चतुर्थी कारी, भये केवल पदके धारी,
इन्द्रादिक सेवन आये, हम हूँ यहां अर्घ चढ़ाये।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा चतुर्थ्याम् ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

सुदि सातैं श्रावणमासा, सम्मेद थकी गुणवासा,
लीन्ही शिव की ठकुराई, पद पूजत अर्घ चढ़ाई।

ओंह्रींश्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला सप्तम्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यम्।

---

१ फलों के ढेर, २ पवित्र

छन्द त्रिभंगी

जय पारस देवा आनन्द देवा सुरपति सेवा करत रहैं,
जयजय अरिहंता देह महंता ध्यावत संता दुख न लहैं।
जय दिगपटधारी[1] गगनविहारी, पापप्रहारी छवि सुथरी,
जयजय कुलमंडन विपति विहंडन दुरमति खंडन मुकतवरी।

छन्द पद्धरि

जय अश्वसेन कुलगगन चन्द, जय वामादेवीके सुनन्द,
जय पासनाह[2] भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जयदुरित[3] तिमिरनासन पतंग[4] जयभविककमल लखिहोतदंग[5]
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल,
जय अजर अमर पद धरनहार, जय दुखी दुःखभंजन विचार। जय०
जय धारि पंचमा अमल[6] ज्ञान, पंचम[7] गति लीन्ही सो महान,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जय पंचभाव धारन महंत, सब भव रोगन को करो अन्त। जय०
जय करत पुनीत पुनीत आप, जय दारिदभंजन नाथ जाप। जय०
जय सिद्धि सिलाके वसनहार, जय ज्ञानमई चेतनप्रकार[8]
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जय चिंतितार्थ फल देत खल, जो ध्यावें ताको खोज खोज। जय०
जय धन्य धन्य स्वामी दयाल, जय दीन बंधु तुम लोकपाल,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।

---

१ दिगम्बर, २ पार्श्वनाथ, ३ संसार का दुःख, ४-सूर्य, ५ हर्षायमान, ६ केवल शुद्ध, ७ मोक्ष, ८ आकार,

जय तुम पदतर की रेणु अंग, जो धरे लहेसो छवि अनंग। जय०
जय तुम कीरति छाई जहान, चहुधा१ छिटकी फूलन समान। जय०
तुम अकथ कहानी कथै जौन, ताकी मती एती है सुकौन। जय०
निति थके शेष२से कथन गाय, नर दीनन को कह कथन आय। जय०
जय करत अरज मनरंगलाल, हम पर किरिपा निधि हो दयाल,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।

छन्द शार्दूल विक्रीडित

या जयमाला पार्श्वनाथ जिनकी आनन्दकारी सदा,
जो धारे निज कंठ भाव धरिके देखे न नीची कदा,
ऊंचे ऊंचे पद लहत नर सो ताकी कहो का कथा,
पाछे भौ दधिपार लेय सुख सो आनन्द पावे जथा।

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

छंद—जेते प्राणी मोहने बांधि डारे, औरोके ते दुःख दीये निवारे,
तेते थारेपादकी आस लावे, जासौ जाकी शृंखला तारि पावे इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

❀:—:❀:—:❀

२४ श्रीवर्द्धमान पूजा



छन्द गीता

शुभ नगर कुण्डलपुर सिद्धारथ राय के त्रिशलातिया,
तजि पुष्प उत्तर तासु कुख्या वीर जिन जन्मन लिया।
कर सात उन्नत कनक सा तनु वंश वर इक्ष्वाकु है,
द्वै अधिक सत्तरि वर्ष आयुष सिंह चिह्न भला कहै।

छन्द मालिनी

सो जिन वीर दया निधिके युग पाद पुनीत करेंगे,
व्याधि मिटाय भवोदधि की गुण गावत गावत पार परेंगे,
जावत मोक्ष न होय हमें शुभ तावत स्थापन रोज करेंगे,
आय विराजहु नाथ इहां हम पूजिके पुण्यभंडार भरेंगे।

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द द्रुत विलम्बित

कनक कुंभसुवारि भराय कै, विमल भाव त्रिशुद्ध[१] लगाय कै,
चरम[२] देव जिनेश्वर वीर के चरण पूजत नासक पीर के.

ओंह्री श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं नि० स्वाहा

परम चंदन शीतल वामना[३], करि सुकेसर मिश्रित पावना,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

धवल अक्षत चाव बढावही, करि सुपुंज महा मन भावही,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहुप माल बनाय हिराय[४] के, जुगति[५] सों प्रभु पास लियायके,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

---

१ मन, वचन, काय की शुद्धि, २ अन्तिम, ३ मलयागर, ४ चुनाय,
५ प्रयत्न से ।

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नवल घेवर बावर लाय के, घृत सुलोलित पूव बनाय के,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर अमोलक रत्न मई दिया, जगत ज्योति उद्योत मई किया,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

उठत धूम घटावलि जासुते, इम सु धूप सुगंधित वासुते,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पनस दाडिम आम्र पके भये, कनक भाजन में भरके लिये,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

अरघ ले शुभ भाव चढाय के, धवल मंगल तूर बजाय के,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्द गाथा

मास अषाढसुदी में, षष्ठी दिन जानि महासुखकारी
त्रिशला गर्भ पधारे, तुम पद जजत अर्घ सिरधारी,

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय आषाढशुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्

चैत्र त्रयोदशि उजयारी, ता दिन जनमे प्रभाव विस्तारी,
अर्घ महाकर धारी, जजत तिहारे चरण हितकारी,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

दशमी अगहन वदि में, लखि सब जग अथिर भये वैरागी,
प्रभू महा व्रत धारे, हम पूजत होत बड़भागी,

ओं ह्रींश्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय अगहनकृष्णा दशम्यांतपकल्याणकाय अर्घ्यम्

केवल ज्ञानी हुवे, दशमी वैसाख सुदी के माही,
सकल सुरासुर पूजे, हम इह पद लखि अर्घ चढाही,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ला दशम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

कार्तिक नष्टकला दिन१ पावा पुर के गहनर२ ते स्वामी,
मुकति तिया परनाई, हम चरन पूजि होत वड नामी,

ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेंद्राय कार्तिकावास्यायां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यम्

छन्द भूलना

वीर जिन धीर धरसिंह पग चिह्न धर तेजतप धरन जया शूरमारी
धर्म्मकी धुराधर अधर३ बिनु गिराधर परम पद धरन जयमदनहारी
दयाधर सीमधर पंचवर नामधर अमलछबि धरणजय सरम४कारी
पंचावर्त की भमणा५ ध्वंसि के अचल पद लहत जय जस विथारी

छन्द त्रोटक

जय आनन्द के घन वीर नमो, जय नाशक हो भवभीर नमो
जय नाथ महा सुख दायक हो जमराज विहंडन लायक हो।२
जय चरम शरीर गम्भीर नमो, जय चर्म तीर्थंकर वीर नमो
जय लोक अलोक प्रकाशक हो, जन्मांतर के दुख नाशक हो।३

---

१ अमावस, २ उद्यान, ३ निरक्षरीभाणी, ४ शर्म आनन्द, ५ पंच परिवर्तनरूप संसार को नाश करके।

जय कर्म्म कुलाचल छेद नमो, जय मोह बिना निरखेद नमो,
जय पूज्य प्रतार सदा सुथिरा, प्रगटी चहुँ ओर प्रशस्त गिरा।
तन सात सुहाथ विशाल नमो, कनकाभ महादश ताल नमो,
शुभ मूरति मो मन मांहि बसी, सिगरी तब ते भवभ्रांत नसी।
जय क्रोध दवानल मेह[१] नमो, जय त्याग करों जग नेह[२] नमो,
जय अम्बरछांडि दिगम्बर भये, गति अम्मरकी धरि अम्मर भये।
जय धारक पंच कल्याण नमो, जय रोज नमे गुणवान नमो,
जयपाद गहे गणराज रहें, शचिनायक सो मुहताज रहें।
जय भवदधि तारन सेत[३] नमो, जय जन्म उधारन हेत नमो,
जय मूरति नाथ भली दरसी, करुणामय शांति सुधाकरसी[४]।
जय सार्थक नाम सुवीर नमो, जय धर्म्म धुरंधर वीर नमो,
जय ध्यान महान तुरी चढ़के, शिव खेत लियो अति ही बढ़िके।
जय पारन वार अधार नमो, जय मात बिना निरधार नमो,
जय रूप रमाधर तो कथनी, कथि पार न पावत नाग धनी।
जय देव महाकृत कृत्य नमो, जय जीव उधारन अत्य[५] नमो,
जय अक्ष बिना सब लोक जई, ममता तुमते प्रभु दूर गई।
जय केवल लब्धि नवीन नमो, सब बातन में परवीन नमो,
जय आत्म महारस पीवन हो, तुम जीवन मूरत जीवन हो।
जय तारन देव सिपारस[६] मो, सुनिलें चितदे इह बारसमो,

---

१ मेघ, २ स्नेह, मोह, ३ पुल, ४ चन्द्रमा, ५ जीव के उद्धार करने का है स्वभाव जिनका, ६ सिफ़ारिश अर्ज़,

दुख दूषित मो मन की मनसा, नहिं होत अराम इकौ छन सा।
तकि तो पद भेषजनाथ भले, तुम पास गरीब निवाज चले,
मनकी मनसा सब पूजन को, तुम ही इहि लायक दूज न को।
इहि कारज के तुम कारण हो, चित लाय सुनो तुम तारण हो,
जग जीवन के रखपाल भले, जब धन्य धन्य किरपाल मिले।
सब मो मनकी मनसा पुजि है, अब और कुदेव नहीं सुजि है,
सुझि है तुमरे गुन गावन की, बुझि है तृष्णा भरमावन की।

छन्द काव्य—पूरण यह जय माल भई अन्तिम जिनकेरी,
पढ़त सुनत मनरंग कहे नसिहै भव फेरी।
वसि है शिव थल मांहि, जहां काया नहिं हेरी,
ज्ञान मई भगवान जाय ह्वै हैं गुण ढेरी।
हरो मोहतम जाल हाल शिव बालनिहारो,
हरो मिथ्या जाल नाल[१] चहु[२] किति[३] पसारो।
सारो कारज वेस लेस सम माल न धारो,
धारो निजगुण चित्त मित्त जिन राज पुकारो।
मरो न एके काल माल विद्या की डारो,
डारो औगुन भार भार दुनिआवी[४] जारो[५]।
जारो नहिं निजरीति पीति दुरगति की मारो,
मारो सन्निधि[६] होय दोह[७] रंचक[८] न विचारो[९]

ॐह्रीं श्री वर्धमान जिनेंद्राय जयमालार्घ्यं नि०।

---

१ जल्दी, २ चौतर्फा, ३ कीर्ति यश, ४ संसारी, ५ जलादो, ६ पास आके
सुरना से, ७ दोष पाप, मोह, ८ जरा भी, ९ फिकर करो,

छन्द छप्पै—

होहू अनंग स्वरूप भूपको पद विस्तारो,
तासें अपन न कुलै[१] भुलै[२] मद माया टारो,
टारहु नहिं निज आनि वानि[३] ममता की गारो[४]
गारौ ना कुलकानि जानि के मदन प्रहारो,
मनरंग कहत धन्यधान्य अरू पुत्र पौत्र करि घर भरो,
श्री वीरचंद जिन राज तें तुमको ये कारज सरो। इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

इति श्रीचतुर्विंशति जिनवर्तमान पूजन संपूर्णम्

छन्द—विषम स्थल सम होय शत्रु मित्रता विचारे,
सुत अर्थी सुतलहे निर्धनी भरे भंडारे।
रोगी होय अरोग शोक की भूमि विदारे,
नीच कुलीकुललहे कुरूपी रूप सम्हारे।
मन वचन काय जो पाठ यह पढ़े पढ़ावे सुने नित,
मनरंगलाल ता पुरुष को देख इन्द्र होवे चकित।

इति शुभम्



---

१ समस्त कुल, २ भुलाकर, ३ आदत, ४ छोड़ दो,

अथ शान्तिपाठः

[शान्तिजिनं शशिनिर्म्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टसहस्रसुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ।१
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरंप्रणमामि ।२
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभि रासन योजन घोषौ,
आतपवारण चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ।३
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्ममरं१ पठते परमां च ।४

वसन्ततिलकावृत्तम्

येऽभ्यर्चितामुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर वंश जगत्प्रदीपा-
स्तीर्थङ्कराः सततशान्तिकराभवन्तु ।५

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्यतपोधनानाम्,
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान्जिनेन्द्रः ।६
क्षेम सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।७
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।

---

१ अरम्—जल्द,

अथेष्टप्रार्थना—

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्य्यैः
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्,
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे
सम्पद्यन्तां मम भव भवे यावदेतेऽपवर्गः ।६
तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्,
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ।१०
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं,
तं खमउ णाणदेव य मज्झविदुक्खक्खयं दितु ।११
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च वोहिलाहोय ।
मम होउ जगतवंधव जिणवर तव चरणसरणेण ।१२

अथ विसर्जनं

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर । १
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्,
विसर्ज्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर । ५
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च,
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्षरक्ष जिनेश्वर ।३
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम्,
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितिम् ।४

इति शुभम्



॥ श्री जिनाय नमः ॥

नित्य-नैमित्तिक-विशेष पूजन-संग्रह

जलधारा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं, ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु, जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि ।

इसको पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।

श्रीमन्मंदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षितैः
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकङ्कणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ।

इसको पढ़कर यज्ञोपवीत तथा सुन्दर आभूषण धारण करना चाहिये ।

सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिन्द्यमाद्यौ ॥
आरोपयामिविबुधेश्वरवृन्दवन्द्य,
पादारविन्दमभि वंद्यजिनोत्तमानाम् ॥

इसको पढ़कर तिलक लगाना चाहिये ।

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागाः प्रभूतबलदर्पयुताः विबोधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामिपुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥

(इति भूमि शुद्धिः)

क्षीरार्णवस्यपयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्धमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥

इति सिंहासन को स्थापन कर प्रक्षालन करना चाहिये ।

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं,
श्रीमंगलोत्तमसर्वजनस्य नित्यं ।
श्रीमत्स्वयं क्षयमयं च विनाशभिन्नं,
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥

इसको पढकर सिंहासन पर 'श्री' लिखे ।

यं पाण्डुकामलशिलागतमादिदेव,
मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्धे ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः,
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बं ॥

(इति बिम्बस्थापनम्)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरौप्य,
ताम्रारकूटघटितान्पयसासुपूर्णान् ।

संवाद्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥

(इति कलशस्थापनं)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी, संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम् ।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै, र्भक्त्याजलैर्जिनपतिंबहुधाऽभिषिञ्चे ॥

(अथाद्यो१ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे .... नगरे ....
मासेशुभे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... जिनमन्दिरे
श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरमस्तकानामुपरिधारादीयते, पूजक
कारकश्रोतृगणमुनिआर्यिकाश्रावकश्राविकाणां कर्मक्षयः भवंतु ।

इति जलधारा

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुःसमाद्यै, रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः ।
मिश्रीकृतेनपयसाजिनपुङ्गवानां, त्रैलोक्यपावनमहंस्नपनंकरोमि अर्घ्यं ।

(इति सुगन्धितजलस्यधारा)

इष्टैर्मनोरथशतैरिवभव्यपुन्सां, पूर्णैःसुवर्णकलशैर्निखिलावसाने ।
संसारसागरविलंघनहेतुसेतु, माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥

(इति चतुःकलशधारा)

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशकम् ।
जिनगन्धोदकं वन्दे अष्टकर्मविनाशकम् ॥

(इति मस्तके गन्धोदकस्वीकरणम्)



---

१ अथ.........मासे आदि सभी जगह पढ़ना चाहिये ।

अथ जलधारा की जयमाला

अन्तमहि जिनेश्वर महिपरमेश्वर इन्द्रन्हवन संजोइयऊ।
तब देख विकम्पयो हियरा जम्पो सुरं परंपर बोलियऊ ॥

पद्धरि छन्द

किम कलश ढुरें बालक जिनेन्द्र, तब मन में जम्पो सुरवरेन्द्र ।
दिट्ठो जिनेन्द्र बालक शरीर, तब मेरु अंगूठा हनो बीर ॥
डगमगो मेरु कम्पो सुरेश, वीराधिवीर जाने जिनेश ॥
सुर साथ सुरेश भये अनन्द, त्रैलोक्यनाथ जहां भुवनचंद ॥२
जय जय बालापन भुवनमन्थ, कन्दर्प दलन निज मुक्तिपंथ ।
सुरनर पति पंजर गुणहरिद्धि, तुम दर्शन स्वामी होउ सिद्धि ॥३
तहां इन्द्र सुन्हवन कराय गत्र, तेतीस कोटि सिर धरें छत्र ॥
ढारें सहस्रह अष्टनीर, क्षीरोदधिसे लाये सुर सुधीर ॥४॥
कुमकुम चन्दन चर्चें शरीर, भवताप दहन नाशन सुधीर ।
जे अन्य विरस गुरुकर विभाव, ते अमरलहे शिवपुरी ठाव ॥५
उज्ज्वल अक्षत आगें धरेहु, अरहंत सिद्ध पुनि पुनि भनेहु ॥
जे नेवज नव विधि बार देहिं, मन वचन सफल काया करेहि ॥६
अंतिम इन्द्र कर चलो शांत, मणि रत्न प्रदीपहिं प्रज्वलांत ।
तहां धूप अगर खेवें सुगन्ध, अवमुक्षय नरधर पट्टग्रन्थ ॥७
फल नारिकेल जिन चढ़न योग्य, कर भाव धरे पुनि लहें भोग्य ।
वसुविधि पूजा कर चलो इन्द्र, दुन्दुभि बाजें सुरभयानन्द ॥८
नर पुहिमिलोय रंजो महेन्द्र, सब विध से भक्ति करी शतेन्द्र ।
केसो बहुनन्दन करहि सेव, किरपाल भजें जिन चरण सेव ॥९

घत्ता—सम्यक्त्व ह‍ढ़ावे ज्ञान बढ़ावे विविध भांति स्तुति करऊ।
जिनवर मन ध्यावे शिवपद पावे भव समुद्र दुस्तर तिरऊ॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्राप्तेभ्यो वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यम् इत्याशीर्वादः।

इति जलधारा संपूर्ण



विनय पाठ



इहि विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ॥१
अनन्त चतुष्टय के धनी तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कन्त तुम तीन भुवन के राज॥२
तिहुँ जग की पीड़ा हरण भवदधि शोषनहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिवसुख के करतार॥३
हरता अघ अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुणराश॥४
धर्मामृत उर जलधिसों ज्ञान भानु तुम रूप॥
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहु जगभूप॥५
मैं वन्दौं जिनदेव को कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने और न कोउ उपाव॥६
भविजन को भवकूप तें तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति आतमगुण भंडार॥७
चिदानन्द निर्मल कियो धोय कर्मरज मैल॥
सरल करी या जगत में भविजन को शिव गैल॥८

तुम पद पंकज पूजते विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं विष निरविषता थाय ॥९
चक्री खग धर इन्द्रपद मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं नेम सकल हनपाप ॥१०
तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११
पतित बहुत पावन किये गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी सो जय जय जय जिनदेव ॥१२
थकी नाव भवदधि विषैं तुम प्रभु! पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु! जय जय जय जिनदेव ॥१३
राग सहित जग में रुले मिले सरागी देव,
वीतराग भेंटो अबै मैंटो राग कुटेव ।१४
कित निगोद कित नारकी कित तिर्यंच अज्ञान,
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ।१५
तुमको पूजें सुरपती अहिपति नरपति देव,
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लगो तुम सेव ।१६
अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार,
मैं डूबत भवसिन्धु में खेओ लगाओ पार ।१७
इन्द्रादिक गणपति थकी तुम विनती भगवान,
विनती अपनी टारिकै कीजे आप समान ।१८
तुमरी नेक सुदृष्टिसों जग उतरत है पार,
हा हा डूबो जात हौं नेक निहारि निकार ।१९

जो मैं कहहूँ और सों तो न मिटे उरझार,
मेरी तो तोसों बनी तातें करत पुकार ।२०
बन्दों पांचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास,
विघन हरन मंगल करन पूरन परम प्रकाश ।२१
चौबीसों जिन पद नमों नमों शारदा माय,
शिवमग साधक साधु नमि रचों पाठ सुखदाय ।२२



मंगलपाठ

—:o:—

मङ्गल मूर्ती परम पद पञ्च धरो नित ध्यान,
हरो अमङ्गल विश्व का मङ्गल मय भगवान ।२३
मङ्गल जिनवर पद नमों मङ्गल अर्हंत देव,
मङ्गलकारी सिद्धपद सो बन्दों स्वयमेव ।२४
मङ्गल आचार्य मुनि मङ्गल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मङ्गल करो बन्दों मन वच काय ।२५
मङ्गल सरस्वति मात का मङ्गल जिनवर धर्म,
मङ्गलमय मङ्गल करो हरो असाता कर्म ।२६
या विधि मङ्गल करन से जग में मङ्गल होत,
मङ्गल नाथूराम यह भवसागर दृढ़ पोत ।२७

इति ।



प्रथम देवशास्त्र गुरुपूजा



ओं जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ॥
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ओं अनादिमूलमंत्रेभ्योनमः। (पुष्पं)

चत्तारि मंगलं। अरिहंत मंगलं। सिद्धमंगलं। साहू मंगलं। केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं। चत्तारिलोगुत्तमा। अरिहंत लोगुत्तमा। सिद्ध लोगुत्तमा। साहूलोगुत्तमा। केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारिसरणं पव्वज्जामि। अरिहंतसरणं पव्वज्जामि। सिद्धसरणं पव्वज्जामि। साहूसरणं पव्वज्जामि। केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि। ओं नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पं)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा,
ध्यायेत् पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा,
यः स्मरेत् परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः,
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगल मतः।
एसो पंच णमो यारो सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ,
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ,
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।

ओं नमोऽर्हते स्वाहा । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

प्रभो भवाङ्गभोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरुकः ,
एषु विज्ञापयामि त्वां शरण्यं करुणार्णवम् ॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रावतरावतर ।
ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रमम सन्निहितानि
भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् ॥

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकै, श्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनाख्याम्यहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ।

मोक्षमार्गस्यनेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारम् विश्वतत्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्रावतरावतर
संवौषट् (आह्वाननं) अत्रतिष्ठतिष्ठठः ठः स्थापनं ।
अत्रममसन्निहितं भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

उदकचन्दनतन्दुल पुष्पकैश्चरु,सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमङ्गलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञानद्रव्यानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगप्रथमानु
योगनामैकादशाङ्गाचतुर्दशपूर्वेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशांसुकृतैकहेतु,
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि ॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय,
स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृंमयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्तिस्वभावपरभावविभासकाय ॥
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपम्,
भावस्यशुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ॥
आलम्बनानिविविधान्यवलंब्य वल्गन,
भूतार्थयज्ञपुरुषस्यकरोमि यज्ञम् ।
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तूनि नूनमखिलान्ययमेकएव ॥
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ,
पुण्यम् समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥

श्रीवृषभोनः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः । श्रीसम्भवः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः। श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः। श्रीसुपार्श्वः

स्वस्ति स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः। श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशीतलः। श्रीश्रेयान् स्वस्ति स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः। श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनन्तः। श्रीधर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशांतिः। श्रीकुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअरनाथः। श्रीमल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः। श्रीनमिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमिनाथः। श्रीपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीवर्धमानः।

ओं ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रेऽपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नित्याप्रकम्पाद्भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं, सम्भिन्नसम्श्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधम् बुद्धिबलम् दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
संस्पर्शनम् संश्रवणं च दूरा, दास्वादनघ्राणविलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्ध दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
जङ्घावलिश्रेणिफलाम्बुतन्तु, प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयोनः॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताःकृतिनोगरिम्नि
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयोनः॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रम्, घोरम् तपो घोरपराक्रमस्थः।

ब्रह्मापरम घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषादृष्टिविषंविषश्च ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोनः ॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो, मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोनः ॥

इति स्वस्तिक्रियाविधानम्



नोट—किसी भी पूजन को करने वाला प्रारम्भ में यह प्रतिज्ञा करे और अन्त में विसर्जन करे ।

अद्याद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ...... देशे ...... नगरे जिन मन्दिरे .... मासे शुभे ...... पक्षे ...... तिथौ ...... वासरे .... पूजनप्रतिज्ञां करोम्यहं ममकर्मक्षयो भवतु ॥



१ अथ देवशास्त्रगुरुपूजा



स्थापना—अडिल्लछन्द ।

प्रथमदेव अरहन्त सुश्रुत सिद्धान्तजू ।
गुरुनिर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुरपन्थजू ॥
तीनरतन जगमांहि सु ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥

दोहा—

पूजों पद अर्हन्त के पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती नितप्रति अष्ट प्रकार ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ।
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टक—गीता छंद

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर वंदनीक सुपद प्रभा,
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल देख छवि मोहित सभा ।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहु विधि नचूं,
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—

मलिन वस्तु हर लेत सब जल स्वभाव मलछीन,
जासों पूजों परमपद देवशास्त्रगुरु तीन ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे त्रिजग उदर मंझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे,
तिन अहित हरन सुवचन जिनके परमशीतलता भरे ।
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं,
अरहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—

चन्दन शीतलता करै तपत वस्तु परवीन,
जासों पूजों परम पद देवशास्त्रगुरु तीन ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा;

यह भवसमुद्र अपारतारण के निमित्त सुविधि ठही,
अति दृढ़ परम पावन यथारथ भक्ति वर नौका सही।
उज्वल अखन्डित शालितंदुल पुंज धरि त्रय गुण सचूं,
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—

तन्दुल शालि सुगंध अति परम अखंडितवीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षतानिर्वपामीति स्वा॰।

जे विनयवन्त सुभव्य उर अम्बुज प्रकाशन भानु हैं।
जे एक मुख चारित्र भापत त्रिजग माहि प्रधान हैं॥
लहि कुन्द कमलादिक पहुप भव भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्तगुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

विविधभांति परिमलसुमन भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद देवशास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनायपुष्पम्‌निर्वपामीतिस्वाहा।

अति सबल मदकन्दर्प जाको क्षुधा उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तास नाशन को सुगरुड़ समान हैं।
उत्तम छहों रस युक्त नित नैवेद्य कर घृत में पचूँ।
अरहन्तश्रुत सिद्धान्तगुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

नाना विध संयुक्तरस व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरुतीन॥

ओं ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोह तिमिर महाबली।
तिहिं कर्म घाती ज्ञान दीप प्रकाश ज्योति प्रभावली॥
इह भांति दीप प्रजाल कन्चन के सुभाजन में खचूं।
अरहन्तश्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—

स्वपर प्रकाशक ज्योति अति दीपक तमकर हीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धता करि सकल परिमलता हँसै॥
इह भांति धूप चढ़ाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रँथ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

अग्निमांहि परिमल दहन चँदनादि गुणलीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरुतीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनायधूपम् निर्वपामीतिस्वाहा ।

लोचन सुरसना घ्राण उर उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं॥

सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन परम अमृत रस सचूँ।
अरहँतश्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

जे प्रधान फल फल विषै पँचकरण रसलीन।
तासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरुतीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि०

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित भविकरत शिवपङ्कति मचूँ।
अरहन्तश्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थनित पूजा रचूँ॥

दोहा—

वसुविधि अर्घ संजोय के अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥

अथ जयमाला—दोहा।

देवशास्त्र गुरु रतनशुभ तीन रतन करतार।
भिन्नभिन्न कहुँ आरती अल्प सुगुण विस्तार॥

पद्धरि छन्द

चउकर्मसुत्रेसठ प्रकृति नाश, जीते अष्टादश दोषराश।
जे परमसुगुण हैं अनन्त धीर, कहवतके छयालिस गुणगम्भीर॥
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीश धार।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दों मन वच तन कर सुसेव॥
जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।

दशअष्टमहाभाषासमेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमूँ बहु प्रीति ल्याय।
गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रत्नत्रयनिधि अगाध।
सँसार देह वैराग्यधार, निरवांछि तपै शिवपद निहार।
गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस, भवतारण तरण जिहाज ईस।
गुरुकी महिमा वरणी न जाय, गुरुनाम जपौं मन वचन काय।

सोरठा—कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोपै दुरित, हरै दुःख संकट, पावै रोग रहित नरदेह,
पुण्य भंडार भरै, जश प्रगटै, मुकति पंथसो जुरै सनेह।
रचै सुहाग देय शोभादिक परभव पहुंचावै सुरगेह,
कुगति पँथ दलमलै 'बनारसि', वीतराग पूजा फल येह।
सुधर्म प्रकाशै पाप विनासै कुगत उथप्पनहार,
मिथ्यामत खँडै कुनयविहँडै मँडै दया अपार।
तृष्णा मद मारै राग विडारै यही जिनागम सार,
जे पूजे ध्यावैं पढ़ैं पढ़ावैं ते जगमांहि उदार।
मिथ्यातदलन सिद्धांत साधक मुकतिमारग जानिये,
करनी अकरनी सुगति दुर्गति पुण्य पाप बखानिये।
संसार सागर तरणतारण गुरु जहाज विशेखिये,
जगमांहि गुरुसम कहैं 'बनारसि' और न दूजो देखिये।

ये पूजा जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते,
त्रैसंध्यं सुविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः ॥
पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्वा तपोभूषणास्
ते भव्याः सकलावबोधरुचिरां सिद्धिं लभंते पराम् ।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति देवशास्त्रगुरुपूजा ॥



देवशास्त्र गुरु पूजा की प्रथम अचरी



बहु तृषा सतायो, अति दुःख पायो, तुम पै आयो, जल लायो ।
उत्तम गंगाजल, शुचि अतिशीतल, प्रासुक निर्मल गुण गायो ॥
प्रभु अन्तरयामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी, दोष हरो ।
यह अर्ज सुनीजे, ढील न कीजे, न्याय करीजे, प्रभु दया करो। जलं १
अघ तपत निरन्तर, अगनि पटन्तर, मो उर अन्तर खेद करो।
ले बावन चन्दन, दाह निकन्दन, तुम पद वन्दन, हरष धरो ॥
प्रभु अन्तरयामी इत्यादि । चन्दनम् ॥२
औगुन दुःखदाता, कह्यो न जाता, मोहिं असाता, बहुत करे ।
तन्दुल गुणमण्डित, अमल अखण्डित, पूजत पण्डित प्रीति धरे ॥
प्रभु अन्तरयामी आदि । अक्षतान् ॥ ३
सुरनर पशुकोदल, काम महाबल, बात कहत छल, मोहलिया ।
ताके शर ल्याऊँ, फूल चढ़ाऊँ, भगति बढ़ाऊँ, खोलहिया ॥
प्रभु अन्तरयामी० पुष्पं ॥४

सब दोषन मांही, या सम नाहीं, भूख सदाही, मो लागे ।
सद् घेवर बावर, लाडू बहुत धर, थार कनक भर, तुम आगे ॥
प्रभु अन्तरयामी त्रिभुवन नामी० । नैवेद्यम् ॥५
अज्ञान महातम, छाय रह्यो मम, ज्ञान ढक्यो हम दुःख पायो ।
तम मेंटनहारा, तेज अपारा, दीप सम्हारा गुण गायो ॥
प्रभु अन्तरयामी० । दीपम् ॥६
यह कर्म महावन, भूल रह्यो जन, शिव मारग नहिं पावत हैं ।
कृष्णागरु धूपं, अमल अनूपम्, सिद्ध स्वरूपम्, ध्यावत हैं ॥
प्रभु अन्तरयामी० धूपम् ॥७
सबतें जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विघन कर डारत हैं।
फल पुञ्ज विविध भर, जपत मनोहर, श्रीजिनवरपद धारत हैं॥
प्रभु अन्तरयामी आदि । फलम् ॥८
आठों दुःखदानी, आठ निशानी, तुम ढिग आन निवारन हो ।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, 'द्यानत' तारन कारण हो ॥
प्रभु अन्तरयामी० अर्घं ॥९



देवशास्त्र गुरुपूजा की द्वितीय अचरी



दोहा—जल स्वभाव निर्मल (उज्ज्वल) करे जन्म जरा नहिं जाय ।
जन्म जरा प्रभु ! तुम हरो यातें पूजों पाय । जलम् ॥१
चन्दन तो शीतल करे भवाताप नहिं जाय ।
भवाताप प्रभु ! तुम हरो यातें पूजों पाय । चन्दनम् ॥२

तन्दुल सों अक्षत कहैं सो वे अक्षत नांहिं ।

अक्षयपद प्रभु ! तुम लियो यातैं पूजों पाय । अक्षतान् ॥३

कामवाण पुष्पम् सजे सो तुम जीते राय ।

यातैं मैं पावन पडूँ मदनव्याधि (वाण) नशिजाय । पुष्पं ॥४

भोजन नानाविधि किये मूल क्षुधा नहिं जाय ।

क्षुधावेदनी तुम हरी यातैं पूजों पाय । नैवेद्यम् ॥५

दीपशिखा जगमैं प्रगटज्ञान(ध्यान)शिखा घटमांहि ।

ढूँढत डोलत जीव को मोह कहूँ छिप जांहि । दीपम् ॥६

जब धूपायन मेलिकर ध्यान अग्नि घर धीर ।

कर्म काष्ठ तहां खेइये त्रिभुवनवास गहीर । धूपम् ॥७

फल फल फलसों कहत हैं जे फल वे फल नांहिं ।

महामोक्षफल तुम लियो यातैं पूजों पाय । फलम् ॥८

जलचन्दन अक्षत पहुप क्या (अरु) वरनो नैवेद ।

दीप धूप फल अरघमों यह पूजा वसु भेद ॥

यह पूजा जिन राज की कीजे शुचि कर अङ्ग ।

नितप्रति पूजा मन धरो कजे अर्घ अभङ्ग । अर्घ्यम् ॥९

देव शास्त्र गुरुपूजा की तृतीय अचरी

खचित मणिमय कनक झारी गंगजल जामें भरो ।

इन्द्र सुर सब साज ले इह भांति पूजन विस्तरो ॥

तेहु करैं मनु हर्ष मन में पूज प्रभु जासे कनें ।

त्रैलोक्यनाथ अनन्तगुणको कहि सकै सुन तहिं बनै । अक्षयं ॥१
केशर कपूर सुगन्ध चन्दन चरण चर्चित अनुसरो।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, चन्दनम् ॥ २
हीरा कणीसी ज्योति जामें अक्षत अखण्ड पुञ्जहिं धरो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, अक्षतान् ॥३
पारिजात के फूल ले सुर आनके वर्षा करो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, पुष्पम् ॥४
मेवा सुमिष्ट कल्पतरु के थार भर आगे धरो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, नैवेद्यम् ॥५
दीप रतनन ज्योति जामें नृत्य कर आरति करैं ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, दीपम् ॥६
धूप दशांगी खेइये वसु कर्म भव भवके जरो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, धूपम् ॥७
षट् ऋतु के फल सर्व लेकर फल भले से अनुसरो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, फलम् ॥८
वसुद्रव्य लै एकत्र यह विधि अर्घ लै मंगल पढ़ो ।
इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, अर्घ्यम् ॥९

इति अञ्जलिका समाप्ता



श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजा

पूर्वापरविदेहेषुविद्यमानजिनेश्वरान् ।
संस्थापयाम्यहमत्र शुद्धसम्यक्त्वहेतवे ॥

ओं ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीविदेहस्थसीमंधरादिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्पूरवासितजलैर्भृतहेमभृङ्गैः धारात्रयंददतुजन्मजरायहान्यै ।
तीर्थंकरं च जिनविंशतिविद्यमानं संचर्चयामिपदपङ्कजशांतिहेतोः ॥

ओं ह्रीं श्रीविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलंनि० ।

काश्मीरचन्दनविलेपितपद्मयुग्म ! संसारतापहर ! दूरीकरोतुनित्यं
तीर्थंकरं च इत्यादि । सुगंधम्

अखंडाक्षतसुगंधैः करोमिपूजामक्षयपदस्यसुखसंपत्प्राप्तिहेतोः ।
तीर्थंकरं च जिनविंशतिविद्यमानं० । अक्षतान् ।

अम्भोजचम्पकसुगन्धसुपारिजातैः कामंविध्वंसनंकुरुत्वंममजिनार्य
तीर्थंकरंजिनविंशति० । पुष्पम् ।

नैवेद्यकैः शुचितरैर्घृतपक्वखंडैर्क्षुधादिरोगहर ! दूरविनाशनायं ।
तीर्थंकरं च जिनविंशति० । नैवेद्यम् ।

दीपैः प्रदीपितजगत्त्रयरश्मितेजः । दूरीकुरुतिमिरमोहविनाशकत्वं
तीर्थंकरं च जिन० । दीपम् ।

कर्पूरकृष्णागरुचन्दनाद्यैर्वन्दे सुगन्धकृतसारमनोहराद्यैः ।
तीर्थंकरं च जिन० । धूपम् ।

नारंग दाडिम मनोज्ञ श्री फलाद्यैः फलैरभीष्ट सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतोः तीर्थं० । फलम्

जलैःसुगंधाक्षतपुष्पचरुभिर्दीपैः सुधूपफलमिश्रितहेमपात्रैः ।
अर्घंकरोमि जिनपूजनशांतिहेतोःसंसारपूर्णंकुरुसेवकानां । अर्घ्यं ।

अथजयमाला—

श्रीवीसजिनेसुर नमत सुरासुर चक्रेश्वरपूजितचरणं ।
जयज्ञानदिवाकरगुणरत्नाकर सेवतनासे विघनघनं ॥

श्रीबीसजिनेश्वरविहरमाण, पणमामिपंचशतधनुप्रमाण।
जेभव्यकमलपड़िबोहयंत, विहरंत विदेहा तम हरंत॥
सीमंधर पणउं जिणवरिन्द, जुग्मंधर वन्दौ दुहदलिन्द।
हौं वन्दौ बाहु सुबाहु स्वामि, जम्बूविदेहजे सिद्धगामि॥
संजात स्वयंप्रभ जिनजयन्ति, ऋषभानन धर्म प्रकाशयन्ति।
तहां अनंतवीर्य सूरप्रभ, वंदौ विशाल वज्रधर नाम॥
चन्द्रानन अष्टम देव वीर, हौं पणउं धातजे भवहितीर।
जे पुष्करार्ध जिनचन्द्रबाहु, भुजंगम ईश्वर जगबाहु।
नेमीश्वर पणउं वीरसेन, महाभद्र भद्रभवितिरइजेन॥
हौं पणउं देव सुजस्सभाव, अरु अजितवीर्य जे मोक्षपाव।
घत्ता—जे वीस जिनेसुर नमत सुरासुर बहिरमाण मैं संथुनई।
जे पूजैं ध्यावैं पढ़ैं पढ़ावैं ते पावैं शिवपरमगई॥ अर्घ्यं
इत्याशीर्वादः। इति श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजा॥



अथविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजाकी अष्टलिका

भव अटवी भ्रमत, बहु जनम धरत, अतिमरण करत, लहि जरा की त्रिपत, अति दुःख पायो। तातैं जल लायो, तुम ढिंग आयो, शांत सुधारस अब पायो॥ श्रीबीस जिनेसुर दयानिधेसुर जगतमहेसुर मेरी विपत हरो। भवसंकट खंडो, आनन्द मंडो, मोह निजातम शुद्ध करो॥ जलं १

पर चाह अनल, मोह दहत सतत, अति दुःख सहत, भव त्रिपत भरत, तुम ढिंग आयो। तातैं ले बावन, तुम अतिपावन, दाह मिटावनो सुखदाय, श्रीबीसजिनेसुर०॥ चंदनम् २

फिर जनम धरत, फिर मरण करत, भव भमरी भ्रमत, बहु नाटक नटत, अति थकित भयो। तातैं शुभ अक्षत, तुम पद अरचत, भव भय तरजत अति सुखति भयो, श्रीवीसजिनेसुर०॥ अक्षतान् ३

मोह काम ने सतायो, चारुवामा उर लायौ, सुध बुध बिसरायौ, बहु विपत गहायौ, नानाविधि की। तातैं धर फूलं, तुम निरशूलं मोह विशूलं कर अबकी, श्रीवीस०॥ पुष्पं ४

मोह क्षुधा ने सतायो, तब अशन बढ़ायो, बहु याचना करायो, तहु पेट न भरायो, अति दुःख परसो। तातैं चरुधारी, तुम निरहारी, मोह निराकुल पद बकसो, श्रीवीस०॥ नैवेद्यम् ५

मोह तमकी चपेट, तातैं भयो हूँ अचेत, कियो जड़हींसे हेत, भूलो आपा पर भेद, तुम शरण गही। दीपक उजयारो, तुम ढिग धारो, स्वपर प्रकाशो नाथ सही, श्रीवीसजिनेसुर०॥ दीपं ६

कर्म इंधन है भारी, मोकों कियो है दुःखारी, ताकी विपत गहाई, नेक सुधहू न धारी तुम चरण नमें। तातैं वरधूपं तुम निजरूपं कर शिव भूपं, नाथ हमें, श्रीवीसजिनेसुर०॥ धूपम् ७

अन्तराय दुःखदाई, मेरी शकती छिपाई, मोसों दीनता कराई, मोकों अति दुःखदाई, भयो आजलों प्रभू। तातैं फल लायो, तुम ढिग आयो, मोक्ष महाफल देवप्रभू, श्रीवीस०॥ फलम् ८

आठों कर्मों ने सतायो, मोकों दुःख उपजायो मोसों नाचहू नचायो, भाग तुम पास आयो अब बच जाऊं। वसु द्रव्य सम्हारी, तुम ढिगधारी, हे भवतारी, शिव पाऊं, श्रीवीस०॥ अर्घ्यम् ९॥इति॥



कृत्रिमाकृत्रिम जिन बिम्बों का अर्घ



दोहा—स्थापना

कृत्याकृत्रिम जिन भवन तिनमें बिम्ब अनेक ॥
तिन सब कों स्थाप के पूजा करहुँ विशेष ॥

ओंह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीं गतान् ॥
वन्दे भावन व्यंतरान्द्युतिवरकल्पामरानवासगान् ॥
सद्गंधाक्षतपुष्पदाम चरुकै सद्दीपधूपै फलैः ॥
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥
सात करोड़ बहत्तर लाख सुभवन जिन पाताल में ॥
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन ते जजों अघ मल टाल के ॥
अब लख चौरासी सहस सत्यानव अधिक तेईसरु कहे ॥
बिन संख ज्योतिष व्यंतरालय ते जजो सब मन वच ठहे ॥

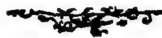
ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिंबेभ्योऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ॥
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुङ्गवानाम् ॥
अवनि तलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां वनभवनगतानाम् दिव्य वैमानिकानाम् । इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां जिनरनिवल यानां भावतोऽहं स्मरामि ॥

जम्बूधातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाः,
चन्द्राम्भोजशिखण्डिकण्ठकनकप्रावृड्घनाभा जिनाः।
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धना,
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुण्डले मानुषांके ॥
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भवने महितले यानि चैत्यानि तानि ॥
द्वौ कुन्देन्दुतुषारहारधवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ,
द्वौ बंधूकसमप्रभौजिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडषजन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभास्,
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥
नौकोडिसया पणवीसा तेपणलक्खाण सहस सत्ताईसा।
नौसेदे अडताला जिणपडिमाऽकिट्टिमा वन्दे ॥
ओं ह्रीं त्रिलोकसंबंध्यकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



अकृत्रिम चैत्यालय पूजा



चौपाई—

आठ किरोड़ रु छप्पन लाख, सहस सत्याणव चतुशत भाख।
जोड़ इक्यासी जिनवर आन, तीन लोक आह्वान करान ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिमकृत्रिम चैत्यालयानि ! अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

छन्द त्रिभंगी

क्षीरोदधि नीरं, उज्वल सीरं, छान सुचीरं, भरि झारी ।
अति मधुर लखावन, परम सुपावन, तृषाबुझावन गुणभारी ॥
वसुकोटि सु छप्पन लाख सत्तानव सहस चारशत इक्यासी ।
जिन गेह अकीर्तम तिहुं जग भीतर पूजत पद ले अविनाशी ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र चतुःशतैकाशीतिमकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योजलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिर पावन, चन्दन बावन, ताप बुझावन घसिलीनो । धरि कनककटोरी, द्वै करजोरी, तुम पद ओरी चित दीनो ॥ वसु० चंदनं
बहु भांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे हम लीने । धरि कंचनथाली, तुम गुणमाली, पुञ्जविशाली करदीने ॥ वसु० अक्षतान्
शुभ पुष्प सुजाती, है बहु भांती, अलि लिपटांती लेय वरं । धरि कनक रकेवी, कर गहिलेवी तुम पद जुगकी भेंट धरं ॥ वसु० पुष्पं
खुरमाजुगिंदौड़ा, बरफी पेड़ा, घेवर मोदक भरथारी । विधिपूर्वक कीने, घृत पय भीने खंड में लीने सुखकारी ॥ वसु० नैवेद्यं
मिथ्यात महातम छाय रह्यो हम, निज भव परणति नहिं सूझै । इह कारणपाकैं दीप सजाकैं थाल धराकें हम पूजैं ॥ वसु० दीपम्
दशगन्ध कुटाके धूप बनाकैं निजकर लेकै धरि ज्वाला । तसु धूम उड़ाइ दश दिशि छाइ बहु महकाइ अति आला ॥ वसु० धूपं

बादाम छुहारे श्रीफल धारे पिस्ता प्यारे दाखवरं। इन आदि अनोखे लखि निर्दोखे थाल पजोखे भेंट धरं॥ वसु० फलं

जलचन्दन तन्दुल कुसुम रु नेवज दीप धूप फल थाल रचों। जय घोप कराऊं बीन बजाऊं अर्घ चढ़ाऊं खूब नचों॥ वसु० अर्घ्यम्

चौपाई—अधोलोक जिन आगम साख, सात कोड़ि अरु बहत्तर लाख। श्रीजिनभवन महाछबि देय, तेसब पूजों वसुविधि लेय॥

ओं ह्रीं अधोलोकसम्बन्धीसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०।

मध्यलोक जिन मन्दिर ठाठ, साढ़े चार शतक अरु आठ।
ते सब पूजों अर्घ चढ़ाय, मन वच तन त्रय जोग मिलाय॥

ओं ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धीचतुःशताष्टपंचाशत्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यम्।

अडिल्ल—उर्ध्वलोक के मांहि भवन जिन जानिये।
लाख चौरासी सहस सत्याणव मानिये॥
तापै धरि तेईस जजौं सिर नायकैं।
कंचन थाल मंझार जलादिक लायकैं॥

ओं ह्रीं ऊर्ध्वलोकसम्बन्धिचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यम् नि० स्वाहा।

गीता छन्द—वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर सहससत्यानवे मानिये,
शत चारपै गिनले इक्यासी भवन जिनवर जानिये।
तिहुंलोक भीतर शास्वते सुरअसुर नर पूजा करैं,
तिन भवन को हम अर्घ लेकैं पूजि हैं भव दुःख हरैं॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धी ८५६९७४८१ श्रीअकृत्रिमजिनालयेभ्योपूर्णार्घ्यम्।

अथ जयमाला—दोहा

अब वरणों जयमालिका सुनो भव्य चितलाय।
जिन मन्दिर तिहुंलोक के देहुं सकल दरशाय॥१॥

पद्धरि छन्द—जय अमल अनादि अनन्त जान, अनिमित जु अकीर्तम अचलमान, जय अजय अखण्ड अरूपधार, षड्द्रव्य नहीं दीसै लगार ॥२॥ जयनिराकार अविकार होय, राजत अनन्त परदेश सोय, जय शुद्ध सुगुण अवगाहपाय, दशदिशा मांहि इह विधि लखाय ॥३॥ यह भेद अलोकाकाश जान, तामध्य लोक नभतीन मान, स्वयमेव बन्यौ अविचल अनन्त, अविनाशि अनादि जु कहत सन्त ॥४॥ पुरुषाकार ठाड़ो निहार, कटि हाथ धारि द्वै पग पसार, दच्छिण उत्तर दिशि सर्व ठौर, राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥ जय पूर्वअपर दिशि घाट बाधि, सुन कथन कहूँ ताको जु साधि, लखिश्वभ्रतलें राजू जु सात, मधिलोक एक राजू कहात ॥६॥ फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच। भू सिद्ध एक राजू जु सांच, दशचार ऊंच राजू गिनाय, षड्द्रव्य लये चतुकोन पाय ॥७॥ तसु बात बलय लपटाय तीन इह निराधार लखियो प्रवीन त्रसनाड़ी तामध जान खास चतुकौन एक राजू जु व्यास ॥८॥ राजू उतङ्ग चौदह प्रमान, लखि स्वयं सिद्धरचना महान, तामध्य जीव त्रस आदि देय, निजथान पाय तिष्ठे भलेय ॥९॥ लखि अधोभाग में श्वभ्रथान, गिन सात कहे आगम प्रमान, षट् थानमांहि नारकि बसेय, इक श्वभ्रभाग करि तीन भेय ॥१०॥ तसु अधोभाग नारकि रहाय, फिर ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय, बस रहे भवन व्यंतर जु देव, पुर हर्म्य छजै रचनास्वमेव ॥११॥ तिह थान गेह जिनराज भाख, गिन सात कोटि बहत्तर जु लाख, ते भवन नमों मनवचनकाय, गति श्वभ्रहरन हारे लखाय ॥१२॥

पुनि मध्य लोक गोला अकार, लखि दीप उदधि रचना विचार,
गिन असंख्यात भाखे जु संत, लखिस्वयंभुरमनसबके जु अन्त ॥१३॥
इक राजुव्यास में सर्व जान, मधि लोक तनो यह कथन मान,
सब मध्यदीप जम्बू गनेय त्रयदशम रुचकवर नामलेय ॥१४॥
इन तेरह में जिन धाम जान, शतचार अठावन हैं प्रमान,
खगदेव असुर नर आय आय, पद पूज जांय शिर नाय नाय ॥१५॥
जय ऊर्ध्वलोकसुर कल्पवास, तिहथान छजैं जिन भवन खास,
जय लाख चौरासी पै लखेय, जय सहससत्यानव और ठेय ॥१६॥
जय वीसतीनपुनि जोड़ देय, जिन भवन अकीर्तम जान लेय,
प्रतिभवन एक रचना कहाय, जिन बिम्ब एकशत आठ पाय ॥१७॥
शतपञ्च धनुष उन्नत लसाय, पद्मासनजुत वर ध्यान लाय,
शिर तीन छत्र शोभितविशाल, त्रयपादपीठ मणिजड़ितलाल ॥१८॥
भामण्डल की छवि कौन गाय, पुनि चंवर ढुरत चौंसठि लखाय,
जय दुन्दुभिरव अद्भुत सुनाय, जय पुष्प वृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥
जय तरु अशोक शोभा भलेय, मंगलविभूति राजत अनेय,
घटतूप छजे मणिलाल पाय, घट धूम्रधूम्र दिग् सर्व छाय ॥२०॥
जय केतु पंक्ति सोहै महान, गंधर्व देव गुन करत गान,
सुरजनम लेत लखिअवधिपाय, तिसथान प्रथमपूजन कराय ॥२१॥
जिन गेहतणा वरनन अपार, हम तुच्छ बुद्धि किम लहत पार,
जय देव जिनेसुर जगत भूप, नमि 'नेमि' मंगै निज देहुरूप ॥२२॥
दोहा—तीन लोक में सास्वते, श्रीजिन भवन विचार,
मनवचतन करि शुद्धता, पूजों अरघ उतार ॥२३॥
ओं ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धी ८५६९७४८१ अकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।

तिहुं जग भीतर श्रीजिन मन्दिर, बने अकीर्तम अति सुखदाय,
नर सुर खगकरि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय,
धनधान्यादिक सम्पति तिनके, पुत्र पौत्र सुख होत भलाय,
चक्रीसुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपुर सुखथाय ॥२४॥

इत्याशीर्वादः । इति अकृत्रिमजिन चैत्यालय पूजा ।



अथ सिद्धपूजा भावाष्टक व अंचलिका सहित ।



स्थापना—ऊर्ध्वाधो रयुतं सविन्दुसपरंब्रह्मस्वरावेष्टितं,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अन्तः पत्रतटेऽश्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं,
देवंध्यायति यः स मुक्तिसुभगोवैरीभकण्ठीरवः ।

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन् !
अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयं,
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ।

इति सिद्धयन्त्र स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सिद्धौनिवासमनुगं परमात्मगम्यंहीनादिभावरहितंभववीतकायं,
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां नीरैर्यजेकलशगैर्वरसिद्धचक्रं ।

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैक सुधारसधारया,
सकलबोधकलारमणीयकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—देत तृषा दुःख मोह सो तुमने जीती प्रभू,
जलसों पूजों मैं तोह मेरो रोग मिटाइयो (निवारियो)

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं, सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीजम्,
सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ।
सहजकर्मकलङ्कविनाशनै, रमलभावसुभापितचंदनैः,
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—इम भव आतापन माह तुम न्यारे संसारसों,
कीजे शीतल छांह, चन्दन से पूजा करों । चन्दनम्

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठ, सिद्धं स्वरूपनिपुणंकमलंविशालं,
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानां, पुञ्जैर्यजेशशिनिभैर्वरसिद्धचक्रं,
सह [illegible]
अनु नित्यं स्वदेह परिमाण मनादिसंज्ञं द्रव्यानपेक्ष ममृतं मरणाद्यतीतम्,
सोरठ मंदार कुंद कमलादि वनस्पतीनां पुष्पैर्यजे शुभ तमैर्वरसिद्ध चक्रम् ॥
समय सार सुपुष्प सुमालया सहज कर्म करेण विशोधया ।
परमयोग बलेन वशीकृतं सहज सिद्ध महं परिपूजये ॥
ऊर्ध्व सोरठा— काम अग्नितन मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
क्षीर फूल चढ़ाऊं मैं तोहि, सेवक की बाधा हरो ॥ पुष्पं ॥
अकृतबोधसुदव्यनवद्यक, विहत जन्मजरामरणान्तकः,
निरवधि प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—हमें क्षुधा दुःख भूरि ज्ञान खड्ग कॉर तुम हती,
मेरी भव बाधा चूरि, नेवज्ञ से पूजा करों ॥नैवेद्यम्॥

अतंक शोक भयरोगमदप्रशान्त निर्द्वन्द्वभावधरणंमहिमानिवेशम्,
कर्पूरवर्तिबहुभिःकनकावदातै, र्दीपैर्यजेरुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम्,
सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः, रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः,
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनं, सहज सिद्धमहं परिपूजये।

सोरठा—मोह तिमिर हम पास, तुम चेतन मइ ज्योति हो।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तिमिर निवारियो ॥दीपं॥

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं, त्रैकाल्यवस्तुविषयेनिबिडप्रदीपम्,
सद्द्रव्यगन्धघनसारविनिश्रितानां, धूपैर्यजेपरिमलैर्वरसिद्धचक्रम्,

सोरठा—सकल कर्मवन जाल, मुक्तिमांहि सब सुख करें,
खेऊं धूप रसाल, ममतकार वन जारियो ॥ धूपम् ॥

१० वां पाठ के बाद यह धूप का पाठ पढ़िये :—
निज गुणाक्षय रूप सुधूपनैः स्वगुण घाति मल प्रविनाशनैः।
विशद बोध सुदीर्घ सुखात्मकं सहजसिद्ध महं परिपूजये ॥

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै, र्ध्येयं शिवंसकल भव्यजनैःसुवंद्यम्
नारिंगपूगकदलीफलनारिकेलैः, सोऽहंयजेवरफलैर्वरसिद्धचक्रम्,
परम भाव फलावलि सम्पदा, सहजभावकुभावविशोधया,
निजगुणास्फुरणात्म निरञ्जनं, सहजसिद्धमहंपरिपूजये।

सोरठा—अन्तराय दुःखटार, तुम अनन्त थिरता लही,
पूजों फल धरसार विघनटार शिवसुख करो ॥फलम्॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रतगणैः संगंवरम् चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम्,
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानांयुगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम्,

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यंतबोधायवै,
वार्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः,
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरम, ज्ञानात्मकैरर्चयेत्,
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं संचर्चयामो वयम् ।

सोरठा—हम में आठों दोष, भजो अर्घले सिद्ध जी,
दीजे वसुगुण मोष, कर जोड़ें द्यानत खड़े ।

चार ज्ञान धर ना लखे हम देखे सरधावन्त,
जाने माने अनुभवे, तुम राखो पास महन्त ।
आज हमारे आनन्द हैं, मैं पूजों आठों द्रव्य सें,
तुम सिद्ध महा सुखदाय, आठों कर्म विनाश कें ।
लहि आठ सुगुण समुदाय, आज हमारे आनन्द हैं,
हम पाये मङ्गलचार, एही उत्तम लोक में ।
इनही को शरणाधार आज हमारे आनन्द हैं,
स्वामी आनन्द दौलतराम के, मोहि भव भव होहु सहाय ।
आज हमारे आनन्द हैं ॥ अर्घ्यम् ॥

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्मं स्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम्
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं वन्दे सदा निरुपमंवरसिद्धचक्रम्

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतयेसिद्धपरमेष्ठिनेमहार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथजयमाला ।

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः, प्रापुः श्रियंशाश्वतीम्,
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः, सन्तोऽपि तीर्थकराः ।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाव्याबाधताद्यैर्गुणैः,
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं, सिद्धान् विशुद्धो दयान् ।

विराग सनातन शांत निरंश निरामय निर्भय निर्मल हंस,
सुधाम विबोध निधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥१
विदूरितसंसृतिभाव निरङ्ग, समामृतपूरितदेव विसङ्ग ।
अबन्धकषायविहीनविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥२
निवारित दुष्कृतकर्मविपास, सदामल केवल केलि निवास,
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३
अनन्तसुखामृतसागर धीर, कलङ्क रजो मल भूरिसमीर,
विखण्डितकामविराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४
विकार विवर्जित तर्जितशोक, विबोध सुनेत्रविलोकितलोक,
विहार विराववि रंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥५
रजोमलखेद विमुक्त विगात्र, निरन्तर नित्य सुखामृत पात्र,
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥६
नरामरवंदित निर्मल भाव, अनन्त मुनीश्वर पूज्य विहाव,
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥७
विदम्भ वितृष्ण विदोह विनिद्र, परापरसङ्कर सारवितन्द्र,
विकोप विरूपविशङ्क विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥८
जरामरणोज्झित वीत विहार, विचिन्तित निर्मल निरहङ्कार,
अचिन्त्यचरित्र विदर्पविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥९
विवर्ण विगन्ध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्दविशोभ
अनाकुल केवल सार्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०

घत्ता—असमयसमयसारं चारु चैतन्यचिह्नं परपरणतिमुक्तं पद्म
नंदीन्द्रवंद्यं, निखिलगुणनिकेतम् सिद्धचक्रं विशुद्धं स्मरति

नमतियोवास्तौतिसोऽभ्येति मुक्तिम् ॥ महार्घ्यम् ॥

अडिल्ल छन्द—अविनाशी अविकार परमरस धामहो, समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो। शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो, जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवन्त हो। ध्यान अगनिकर कर्म कलङ्क सबै दहे, नित्य निरञ्जन देव सरूपी ह्वै रहे। ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्वनिवारकैं, सो परमातम सिद्ध नमू सिर नायकें।

दोहा—अविचल ज्ञान प्रकाशतें, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरे सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥
इत्याशीर्वादः ॥ पुष्पम् ॥

मत्तगयन्द छन्द

ध्यानहुताशन में अरि ईंधन झोंक दियो रिपु रोक निवारी,
शोक हरो भविलोकन को वर केवल ज्ञान मयूख उघारी।
लोक अलोक विलोक भये शिव जन्मजरामृत पङ्क पखारी,
सिद्धनथोक बसें शिवलोक तिन्हें पगधोक त्रिकाल हमारी ॥
तीरथनाथ प्रणाम करें तिनके, गुणवर्णन में बुध हारी
मोम गयो गलि मूसमंझार रह्यो तहं व्योम त दाकृति धारी।
लोक गहीर नदी पति नीर, गये तिर तीर भये अविकारी,
सिद्धनथोक बसें शिवलोक तिन्हें पगधोक त्रिकाल हमारी ॥

इति सिद्ध पूजा।

(पूजा के अन्त में यह समुच्चय अर्घ चढ़ाकर शांति पाठ पढ़ना चाहिये)

उदक चन्दन तन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल मङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहंयजे ॥

ओं ह्रीं भगवज्जिनसहस्राष्टनामदेवशास्त्रगुरुसमूह, विद्यमानविंशति तीर्थंकर, कृत्रिमाकृत्रिम जिन बिम्ब, सिद्धपरमेष्ठी, पंचपरमेष्ठी, चतुर्विंशतितीर्थंकर, सर्वनिर्वाणक्षेत्र, सर्व अतिशय क्षेत्र, सर्वक्षेत्र सप्तर्षि, प्रथमानुयोग, करणानुयोगचरणानुयोगादि द्वादशांग तत्त्वार्थसूत्रादिमहाशास्त्र, रत्नत्रय, पंचमेरु, दशलक्षण, षोड़सकारणनन्दीश्वरेत्यादि सर्वव्रत-विधान, गोम्मटस्वामी, शान्ति सागराद्याचार्य इत्यादि सर्वेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि०



अथ रविव्रत पूजा



स्थापना—अडिल्ल छन्द

यह भविजन हितकार सु रविव्रत जिन कही।
करहु भव्यजन सर्व सुमन देकें सही॥
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र त्रियोग लगायकें।
मिटै सकल सन्ताप मिलै निधि आयकें॥
मति सागर इक सेठ सुग्रन्थन में कही।
उन्हीं ने यह पूजा कर आनन्द लही॥
तातें रविव्रतसार सो भविजन कीजिये।
सुख सम्पति सन्तान अतुल निधि लीजिये॥

दोहा—प्रणमो पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ शिरनाय।
पर भव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय॥
ऐतवार व्रत के दिना, एही पूजन ठान।
ता फल सम्पति को लहैं, निश्चय लीजे मान॥

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक

उज्वल जल भरकें अतिलायो रतन कटोरन मांहीं ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत जन्म जरा मिट जांहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत के दिन भाई ।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगलदाई ॥

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् ।

मलयागिरि केशर अति सुन्दर कुम कुम रङ्ग बनाई, धार देत जिन चरनन आगेभव आतापनशाई ॥ पारस०,पारसनाथ, चन्दनम्

मोती सम अति उज्वल तन्दुल लावो नीर परवारो, अक्षय पद के हेतु भाव सों श्रीजिनवर ढिग धारो ॥ पारस०, अक्षतान्,

वेला अरु मचकुन्द चमेली पारिजात के ल्यावो, चुन चुन श्रीजिन अग्र चढ़ाऊं मनवांछित फल पावो ॥ पारस०, पुष्पम् ।

बावरफैनी गोजा आदिक घृत में लेत पकाई, कंचन थार मनोहर भर के चरनन देत चढ़ाई ॥ पारस०, नैवेद्यम् ।

मणिमय दीप रतन मय लेकर जगमग जोति जगाई, जिनके आगे आरति करके मोहतिमिर नश जाई ॥ पारस०, दीपम् ।

चूरनकर मलयागिर चन्दन धूप दशांग बनाई, तटपावक में खेयभावसों कर्मनाश हो जाई ॥ पारस०, धूपम् ।

श्रीफल आदि बदाम सुपारी भांति भांति के लावो, श्रीजिन चरन चढ़ाय हरषकर तातें शिवफल पावो ॥ पारस०, फलम् ।

जल गंधोदिक अष्ट द्रव्य ले अर्घ बनावो भाई, नाचत गावत हर्ष भाव सों कंचनथार भराई ॥ पारस०, अर्घ्यं ।

गीतका छन्द

मन वचन काय त्रिशुद्ध करके पार्श्वनाथ सुपूजिये,
जल आदि अर्घ बनाय भविजन भक्तिवन्त सुहूजिये,
पूज्य पारसनाथ जिनवर सकल सुखदातार जी,
जे करत हैं नर नारि पूजा लहत सुख अपार जी ॥ पूर्णार्घ्यं ।

अथ जयमाला—दोहा

यह जग में विख्यात हैं, पारसनाथ महान ।
जिन गुण की जयमालिका, भाषा करौं बखान ॥

पद्धरि छन्द—

जय जय प्रणमों श्रीपार्श्व देव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव,
जय जय सु बनारस जन्मलीन, तिहुं लोक विषे उद्योतकीन ॥१
जय जिनके पितु श्रीविश्वसैन, तिनके घर भये सुखचैन ऐन,
जय वामा देवी माय जान, तिनके उपजे पारस महान ॥२
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भये ऐन,
जय जिनने प्रभु का शरन लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ॥३
जय नाग नागनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन,
तजि के सो देह स्वर्ग सु जाय, धरणेन्द्र पद्मावति भये आय ४॥
जय चोर अञ्जना अधम जान, चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान,
जय मृत्यु भये स्वर्ग सु जाय, ऋद्धि अनेक उनने सो पाय ॥५
जय मति सागर इक सेठ जान, जिन रविव्रत पूजा करी ठान,
तिनके सुत थे परदेश मांहि, जिन अशुभ कर्म काटे सुताहि ॥६

जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सब से भई भेंट,
जिन जिन ने प्रभुका शरन लीन, तिन रिद्धिसिद्धि पाई नवीन ॥७
जे रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सुख अनन्तानन्त लेय,
धरणेन्द्र पद्मावति हुय सहाय, प्रभु भक्त जान तत्काल आय ॥८
पूजा विधान इहि विधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय,
जो भक्तिभाव जयमाल गाय, सोही सुख सम्पति अतुल पाय ॥९
बाजत मृदङ्ग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार,
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सो लेत ॥१०
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय,
जे करहिं निरत इहि भांत भांत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात ॥११

दोहा—रविव्रत पूजा पार्श्व की, करै भविक जन कोय।
सुख सम्पत इह भवलहे तुरत सुरग पद होय॥ अर्घ्यं

अडिल्ल—रविव्रत पार्श्वजिनेन्द्र पूज्य भव मन धरें,
भव भव के आताप सकल छिन में टरें।
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहैं,
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहै।
फेर सर्व विधि पाय भक्ति प्रभु अनुसरें,
नानाविधि सुख भोग बहुरि शिवत्रिय वरें॥ इत्याशीर्वादः
इति रविव्रतपूजा।



श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा



स्थापना

अडिल्ल—विष्णुकुमार महामुनि को ऋद्धि भई।
नाम विक्रिया तासु सकल आनन्द ठई॥
सो मुनि आये हथिनापुर के बीच में।
मुनि बचाये रक्षाकर वन बीच में॥ १
तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो।
जिमि चिन्तामणि रत्न रंक पायो मनो॥
सब पुर जयजयकार शब्द उचरत भये।
मुनि को देय अहार आप करते भये॥ २

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमार महामुने! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक–चाल–सोलहकारण पूजा की।

गङ्गाजल सम उज्ज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर,
दयानिधि होय, जय जग बन्धु दयानिधि होय।
सप्त सैकड़ा मुनिवरजान, रक्षा करी विष्णु[१] भगवान्,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दया निधि होय।

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमार महामुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्०।

मलयागिर चन्दन शुभ सार, पूजों श्रीगुरुवर निरधार,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु०, सप्तसैकड़ा०, चन्दनम्

---

१ विष्णुकुमार भगवान् अर्थात् विष्णुकुमार महामुनि।

श्वेत अखण्डित अक्षत लाय, पूजों श्रीमुनिवर के पांय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, अक्षतान् ।
कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो कामवाण दुखदाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, पुष्पं ।
लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढ़ाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा, नैवेद्यम् ।
घृत कपूर का दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावे खोय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, दीपम् ।
अगर कपूर सुधूप बनाय, जारैं अष्ट कर्म दुखदाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, धूपम् ।
लौंग इलायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुखदातार,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय । फलम्
जल फल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों होय,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु गुणखान,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय । अर्घ्यं

अथ जयमाला ।

दोहा—श्रावण सुदी सुपूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ॥ १

चाल–छन्द–भुजङ्ग प्रयात ।

श्री विष्णु देवा करूं चर्ण सेवा,
हरो जग की बाधा सुनो टेर देवा,

गजपुर पधारे महा सुख कारी,
धरो रूप वामन सु मन में विचारी ॥ २
गये पास बलि के हुवा वो प्रसन्ना,
जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना,
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै,
दइ तीन ततक्षन सु नहि ढील थापै ॥३
कर विक्रिया मुनि सुकाया बढ़ाई,
जगह सारी लेली सु डग दो के मांहीं,
धरी तीसरी डग बली पीठ मांहीं,
सु मांगी क्षमा तब बली ने बनाई ॥ ४
जल की सु वृष्टि करी सुक्खकारी,
सर्व अग्नि क्षण में भइ भस्म सारी,
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से,
भइ जय जय कारा सर्वत्रम ही से ॥ ५

चौपाई छन्द

फिर राजा के हुक्म प्रमान, रक्षा बन्धन बंधी सुजान,
मुनिवर घर घर किये विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार ॥६
जा घर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सु लोय,
स्थापन कर तिन दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार ॥७
तब से नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्योहार,
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म बढ़े सु अतीव ॥८

धर्म पदारथ जग में सार, धर्म बिना झूंठो संसार,
सावन सुदि पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजे लोय ॥९
सब भाइन को दो समझाय, रक्षा बन्धन कथा सुनाय,
मुनि का निज घर कियो अकार, मुनि समान तिन देहु अहार ॥१०
सब के रक्षा बन्धन बांध, जैन मुनिन की रक्षा साध,
इस विधि से मानों त्योहार, नाम सलूना है संसार ॥११

पद्धरि छन्द

यह पूजन अब रचे न कोय, यदि रचे तो देखें न कोय,
यासे यह पूजन रचे सार, हो भूल चूक लीनो सम्हार ॥१२
श्री विष्णु गुरु के चर्ण दोय, 'रघु सुत बाबू' वंदे संजोय,
नगले स्वरूपवासी जु दास, मुनि चर्ण सेवकी करत आश ॥१३
घत्ता—मुनि दीनदयाला, सब दुख टाला, आनंदमाला दुःखहारी,
रघुसुत नित वंदै, आनंद कंदै, सुखवासंदै हितकारी ॥१४॥ महार्घ्यं।
दोहा—विष्णुकुमार मुनि चरण कों, जो पूजे धर प्रीत।
रघुसुत पावै स्वर्ग पद, लहै पुन्य नवनीत ॥ इत्याशीर्वादः

इति श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा।



श्री अकंपनाचार्यादि सात सौ मुनि पूजा



स्थापना—अडिल्ल छन्द

श्री अकम्पन मुनि आदि सब सात सै,
कर विहार हथिनापुर आये सात सै,

तहां भयो उपसर्ग बड़ो दुःखकार जू,
शांत भाव से सहन कियो मुनिराज जू ॥ १
मिती जु पन्द्रस सावन शुकल प्रमानिये,
ध्यानारूढ़ सुतिष्ट सर्व मुनि मानिये,
हुओ उपसर्ग जु दूर धन्य घड़ी आज जी,
तिन प्रति शीश नवाय पूज मुनिराज जी ॥ २
तिन की पूजा रचूं भाव अरु भक्ति से,
दिवस सलूना भयो इसी यह युक्ति से,
आह्वाहन स्थापन सन्निधिकरण जी,
तिष्ठ गुरु इत आय करूं पद सेव जी ॥ ३

ओं ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत मुनि समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् ।

अथाष्टक—चाल जोगीरासाकी ।

शीतल प्रासुक उज्ज्वल जल ले कंचन भारी लाऊं,
जन्म जरामृत नाश करन को, तुमरे चरण चढ़ाऊं,
श्रीअकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सै जानो,
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघहानो।

ओं ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत महामुनिभ्यो जन्म जरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर मिश्रित करके नीको चन्दन लाऊं,
भव आताप जु दूर करन को गुरु के चर्ण चढ़ाऊं ॥ ओं०, चन्दनम्

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल अक्षत भाव भक्ति से लीने,
पुञ्ज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख सरधाकर जु करीने ॥ श्री०, अक्षतान्
बेल चमेली श्रीगुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊं,
काम बाण के नाश करन को श्री गुरु चर्ण चढ़ाऊं ॥ श्री० पुष्पम्
गूझा फेनी मोदक लाडू ताजे तुरत बनाऊं,
श्री गुरुवर के चर्ण चढ़ाकर हर्ष हर्ष गुणगाऊं ॥ श्री०, नैवेद्यम्
घृत कपूर की उत्तम जोति सु स्वर्ण कटोरी धारूं,
श्री मुनिवर की करूं आरती मोह कर्म को जारूं ॥ श्री०, दीपम्
धूप सुगन्ध सुवासित लेकर धूपायन में खेऊं,
अष्ट कर्म के नाश करन को आनन्द मङ्गल देऊं ॥ श्री०, धूपम्
लौंग इलायची श्रीफल पिस्ता अरु बादाम मंगाऊं,
सेव सन्तरा खट्टा मिट्ठा श्री गुरु चरण चढ़ाऊं ॥ श्री०, फलम्
जल फल आठों द्रव्य मिलाकर भाव भक्ति से लाया,
हे गुरु हमको भव से तारो तातें चरण चढ़ाया ॥ श्री०, अर्घ्यं

अथ जयमाला

दोहा—अकम्पन मुनि आदि सब, सप्त सैकड़ा जान,
तिनकी यह जयमाल सुन, भाषा करूं बखान ॥१

चौपाई छन्द

जीव दया पालें गुरु स्वामी, दें धर्मोपदेश बहु नामी,
छहों काम की रक्षा पालें, तप कर आठ कर्म को टालें ॥२
झूंठ न रंच मात्र मुख बोलें, जो मन होय वचन सो खोलें,
महासत्यव्रत के मुनिधारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥३

तृण जल भी अदत्त नहीं लेवें, धन कंचन सम तृण समझें वे,
महा अचौर्य व्रत के गुरु धारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥४
अठारह सहस शील के भेदा, निर्भेद धारत हो सु अखेदा,
शील महाव्रत के मुनिधारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥५
चौविस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग वनवास कराये,
परिग्रह त्याग महाव्रत धारी, तिनके पायन धोक हमार ॥६

पद्धरि छन्द

सु भावत बारह भावन चित्त, विचारत धर्म सदा सुपवित्त।
जय ग्यारह अङ्ग सु पढ़त पाठ, संसार भोग का त्याग ठाठ॥७
पंचेन्द्रिय दमन करें महान, मन वचन कायकर शुद्ध ध्यान।
जय मुनिवर वन्दू शान्ति चित्त, संसार देह भोगनि विरत्त ॥८
जय मौन धार मुनि तप करन्त, तब कर्म काठ सब ही जरन्त,
जय आनन्द कन्द विधान रूप, जय ध्यावत गुरु आतम स्वरूप॥९
संसार कष्ट काटौ मुनिन्द्र, तुम चरणन में सब देव इन्द्र,
जय मुनिवर वन्दू कर्म काट, शिव नारि चरण का करत ठाट॥१०
मैं अल्पमती अज्ञान बुद्धि, प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्ध,
रघुवर सुत वन्दत शीस नाय, श्री गुरु के गुण गाये बनाय ॥११
घत्ता—मुनि सब गुण धारं, जग उपकारं, कर भवपारं सुखकारं,
कर कर्म जु नाशा, आतम शासा, सुख पर काशा दातारं॥१२महार्घ्यं
दोहा—भक्ति भाव मन लाय कर, पूजे वांचे जोय।
बाबूलाल सु स्वर्ग पद, निश्चय ताको होय ॥ इत्याशीर्वादः

समाप्तोयं पूजा।



अथ बाहुबली गोम्मट स्वामी पूजा



स्थापना—अडिल्ल छन्द।

आदीश्वर के द्वितीय पुत्र बाहूबली।
कामदेव भये प्रथम श्री बाहूबली॥
नयेन मस्तक युद्ध कियो बाहूबली।
चक्री अरु विधि जीत जजूं बाहूबली॥

ओं ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिन्! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक—छन्द।

पंचम उदधितनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरूं।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, बाहू बलि पद धार करूं॥१

ओं ह्रीं श्रीमद्बाहूबलि स्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

केशर सङ्ग घिसूं मलयागिर, चन्दन अधिक सुगन्ध रचूं।
भव आताप विनाशन कारन, श्री बाहुबलि पद चरचूं॥२ चंदनं
उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर कन्चन थाल भरूं।
अक्षय पदके हेतु विनय से, बाहूबलि ढिग पुञ्ज धरूं॥३ अक्षतान्
कमल केतकी चम्प चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरूं।
मदनवान निरवारन कारन, बाहूबलि को भेंट धरूं॥४ पुष्पम्
नाना विधि पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट्रस मय।
क्षुधा रोग विध्वंस करन को, जजूं बाहूबलि चरण उभय॥५ नैवेद्यं

संजों दीप घृत वा कपूर का, जासों दशदिक तम भागे।
नाशन अन्तर तम को आरति, करूं बाहुबलि प्रभु आगे ॥६ दीपम्
अगर तगर कर्पूर धूप दश, अङ्गी अगनी में खेऊं।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करन को, श्री बाहूबलि पद सेऊं ॥७ धूपम्
आम अनार जाम नारङ्गी, पुङ्गी खारक श्रीफल को।
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पण करूं बाहुबलि को ॥८ फलम्
ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भर के लाऊं।
पद अनर्घ के प्राप्ति हेतु मैं, श्री बाहूबलि गुण गाऊं ॥ ६ अर्घ्यं

जयमाला

दोहा—बाहूबलि निज बाहुबल, हरे शत्रु बलवान।
जये नये नहिं सिद्ध भये, पोदनपुर उद्यान ॥१

पद्धरि छन्द

श्री आदीश्वर के सुत सुजान, हैं प्रथम भरत चक्री महान,
दूजे बाहूबलि बल अपार, पुनि एक ऊन शत हैं कुमार ॥२
सब ही हैं चर्म शरीर सोय, सब ही पहुंचे शिव कर्म खोय,
तिन में बाहूबलि द्वितीय पुत्र, रतिपति तिनको सुनिये चरित्र ॥३
जब ऋषभ ऋषिपद धरो सार, तब राजभाग कीने विचार,
अरु दिये यथाविधि नृपन दान, सब करें प्रजा पालन सुजान ॥४
तिन में श्री बाहूबलि कुमार, पायो पोदनपुर राज्य सार,
अरु भरत अवधपुर भये नरेश, सुख भोगे बहुविधि ही सुरेश ॥५
जब उदय चक्रि पद भयो आय, षट्खंड साधने गये भरतराय,
अरु किये बहुल नृप निजाधीन, फिर लौटे रजधानी प्रवीन ॥६

पर चक्रकरो नहिं पुर प्रवेश, तब निमिती भाष्यो सुन नरेश,
तुम भ्रात पोदनपुर नरेन्द्र, नहिं आज्ञा माने तुम्ह नृपेन्द्र ॥७
सुन भरत तबहिं पाती लिखाय, पोदनपुर दूत दियो पठाय,
आ नमों भेंट युत विनयधार, या हो जावो रण को तयार ॥८
वैसांदर जिमि घृत परे आय, तिमि कोपो भुजबलि पत्र पाय,
फिर फाड़ पत्र कहे सुनहु दूत, हम और भरत द्वय ऋषभपूत ॥९
हम भोगें पितु को दियो राज, भरतहि शिर नावें कौन काज,
यदि भरत अधिक कर है गरूर, तो करहों रण में चूर चूर ॥१०
सुनि भग्यो दूत गयो भरत पास, कह दीनों सब वृत्तान्त खास,
तब सजी सैन्य लख उभय ओर, मंत्री गण सोचे हिय बहोर ॥११
ये उभयबली अरु चरम देह, लड़ व्यर्थ सैन्य को क्षय करेह,
इमि सोच गये वे नृपति पास, विनती सुनिये प्रभु करहिं दास ॥१२
तुम उभयबली अरु स्वयं बुद्ध, नहिं सैन्य मरे कीजै सुयुद्ध,
तब नेत्र१ मल्ल२ जल३ तीन युद्ध, कीने द्वय भ्रात स्वयंप्रबुद्ध ॥१३
तीनों में हारे भरत राय, तब कोपि चक्र दीनों चलाय,
सो चक्र करो नहिं गोत्र घात, चक्री इम सब विधि खाई मात ॥१४
यह देख चरित भुजबलि कुमार, उपजो हिय दृढ़ वैराग्य सार,
अरु त्याग राज तृणवत असार, कर क्षमा महाव्रत धरे सार ॥१५
तप एकासन कीनो महान, पर उपजो नहिं केवल सुज्ञान,
इक शल्य लग रही इह प्रकार, मैं खड़ा भरत पृथ्वी मंझार ॥१६
तब शल्य दूर की भरतराय, नहिं वसुधापति कोइ जग बनाय,
यह आदि अन्त बिन जग महान, बहुत भये हैं हैं मुझ समान ॥१७

इमि सुनत शल्य हनि घाति चार, उपजायो केवल ज्ञान सार,
फिर पोदनपुर के वन मंझार, पंचमगति लहि कर कर्म छार ।।१८
तिन प्रतिमा अतिशय युत अपार, है श्रवण बेल गोला मंझार,
गोम्मट स्वामी तिहिं कहत सोय, नहिं छाया ताकी पड़त कोय ।।१६
अरु तुङ्ग हाथ छब्बीस धार, निराधार खड़ी पर्वत मंझार,
यात्रा आवें वन्दन अपार, दर्शन कर पातक करें छार ।।२०
इत्यादि और अतिशय अपार, कथि 'दीपचंद' नहिं लहे पार, पूर्णार्घ्यं
घत्ता—सब विधि सुखकारी, महिमा भारी भुजबलि धारी अपरम्पार
सुन विनय हमारी, शिव सुखकारी, हे त्रिपुरारी, अचल अपार,
इत्याशीर्वादः । इति पूजा ।



षोडषकारण पूजा



अडिल्ल—सोलहकारण पाय जे तीर्थंकर भये ।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये ।।
पूजा कर निज धन्य लख्यौ बहु चाव सौं ।
हमहू षोडपकारण भावें भाव सौं ।।१

ओंह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडषकारणसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टक छन्द

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गम्भीर,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु होय,

दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ परम गुरु होय ॥१

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडषकारणेभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय,
परम गुरु होय, जय जय०, दरश विशुद्धि० ॥ २ चन्दनम्
तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप पूजौं जिनवर तिहुंजग भूप,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश विशु० ॥ ३ अक्षतान्
फूल सुगन्ध मधुप गुञ्जार, पूजौं जिनवर जग आधार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश विशु० ॥ ४ पुष्पम्
सद नेवज बहु विधि पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश० ॥ ५ नैवेद्यम्
दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजौं श्री जिन केवल धार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश० ॥ ६ दीपम्
अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ, दरश० ॥ ७ धूपम्
श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजौं जिन वांछित दातार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ, दरश० ॥ ८
जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानतवरत करो मनलाय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश०, ॥ ९ अर्घ्यम्

जयमाला

दोहा—षोडषकारण गुण करै, हरै चतुर्गतिवास ।
पाप पुण्य सब नाश कै, ज्ञान भानु परकाश ॥१

चौपाई १६ मात्रा

दरश विशुद्धि धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारै जो प्रानी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥२
शील सदा दिढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मनमांही, ताके मोह महातम नांही ॥३
जो संवेगभाव विस्तारै, सुरग मुकति पद आप निहारै।
दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस पर भव सुर देखे ॥४
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरै करम शिखर गुरुभाषा।
साधु समाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै॥५
निशि दिन वैयावृत्त्य करैया, सो निहचै भवनीर तिरैया।
जो अरहन्त भगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै॥६
जो आचारज भक्ति करै है, सो निर्मल आचार धरै है।
बहुश्रुतवन्त भगति जो करई, सो नर संपूर्ण श्रुत धरई ॥ ७
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद दाता,
षट् आवश्य काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ॥ ८
धरम प्रभाव करैं जे ज्ञानी, तिन शिवमारग रीति पिछानी।
वत्सल अङ्ग सदा जो ध्यावे, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥ ६

दोहा—एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय।
देव इन्द्र नर वंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय ॥१०

पूर्णार्घ्यं। इत्याशीर्वादः।



पंचमेरु पूजा



गीता—छन्द ।

तीर्थंकरों के न्हवनजलतैं भये तीरथ सर्वदा ।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगण पंचमेरन की सदा ॥
दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनतमूल विराजही ।
पूजों असी जिन धाम प्रतिमा होहि सुख, दुःख भाजही ॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसंबंधि चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टक चौपाई आंचलीबद्ध १५ मात्रा

शीतलमिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाजी कों करौं प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधयशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जलं नि० स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय, गंध सों पूजों श्रीजिनराय,
महा सुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महासुख०, चंदनं
अमल अखण्ड सुगन्ध सुहाय, अच्छत सों पूजो श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, अक्षतान्
वरन अनेक रहे महकाय, फूलन सों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखेनाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, पुष्पम्

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, नैवेद्यम
तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, दीपम्
खेऊं अगर परिमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, धूपम्
सुरस सुवर्ण सुगन्ध सुभाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, फलम्
आठ दरबमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, अर्घ्यं

अथ जयमाला—सोरठा

प्रथम सुदर्शन स्वाम, विजय अचल मन्दर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रगट ॥१

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै, चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वचतन कर वंदना हमारी, ॥२॥ ऊपर पांच शतक पर सोहै, नन्दनवन देखत मन मोहै, चैत्यालय ॥३॥ साढ़े बासठसहस ऊंचाई, वन सोमनस शोभै अधिकाई, चैत्यालय ॥४॥ ऊंचो योजन सहसछत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरिसीसं, चैत्यालय॥५॥ चारों मेरु समान बखानो, भूपर भद्रशाल चहुं जानो, चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन कर वन्दना हमारी ॥६॥ ऊंचे पांच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे, चैत्यालय सोलह ॥७॥

साढ़े पचपन सहस उतङ्गा, वन सौमनस चार बहुरङ्गा, चैत्यालय सोलह० ॥७॥ उच अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये, चैत्यालय सोलह० ॥६॥ सुरनर चारन वन्दन आवें, सो शोभा हम किहिं मुख गावें, चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन कर वन्दना हमारी ॥१०॥

दोहा—पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ॥११॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधय शीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा, इत्याशीर्वादः।

इति पंचमेरु पूजा



अथ दशलक्षण धर्म पूजा



अडिल्ल—उत्तम छमा मार्दव आर्जव भाव हैं,
सत्यशौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिन्चन ब्रह्मचर्य धर्म दश सार हैं,
चहुं गति दुःखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्म समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम, सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा—हेमाचलकी धार मुनि चित सम शीतल सुरभि।
भवआताप निवार दशलक्षण पूजों सदा ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्मेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०

चन्दन केशर गार होय सुवास दशों दिशा, भवआताप० ।।२ चंदनं

अमल अखंडितसार तन्दुल चन्द समान शुभ, भवआ० ।।३ अक्षतान्

फूल अनेक प्रकार महकैं ऊरधलोकलौं, भवआ० ।। ४ पुष्पम्

नेवज विविध प्रकार उत्तम षट्रस संजुगत, भवआ० ।।५ नैवेद्यं

बाति कपूर सुधार दीपक जोति सुहावनी, भवआ० ।। ६ दीपम्

अगर धू० विस्तार फैले सर्व सुगन्धता, भवआ० ।। ७ धूपम्

फल की जाति अपार घ्राण नयन मनमोहने, भवआ० ।। ८ फलम्

आठों दरब सम्हार 'द्यानत' अधिक उछाह सों, भव० ।।९ अर्घ्यं

अङ्गपूजा

सोरठा—पीड़ैं दुष्ट अनेक बांधमार बहुविधि करैं,

धरिये छमा विवेक कोप न कीजे प्रीतमा ।।१

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

उत्तम छिमा गहोरे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई ।

गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो ।।

कहि है अयानो वस्तु छीने, बांध मार बहु विधि करै,

घरतैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहां धरै,

तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा,

अति क्रोध अगनि बुझाय, प्रानी साम्य जल ले सीयरा।

ओं ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

मान महाविषरूप करहिं नीचगति जगत में,

कोमल सुधा अनूप सुख पावैं प्रानी सदा।

उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद मांहि तैं आया, दमरी रूंकन भाग बिकाया॥
रूंकन विकाया भाग वशतैं, देव इक इन्द्री भया,
उत्तम मुवा चांडाल हुआ, भूप कीड़ों में गया,
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल बुदबुदा,
करि विनय बहु गुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावे उदा।

ओं ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना वसै,
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में है सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये॥
करिये सरल तिहुं जोग अपने देख निर्मल आरसी,
मुख करै जैसा लखै तैसा कपट प्रीति अंगारसी,
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि करमबन्ध विशेषता,
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै आपदा नहिं देखता।

ओं ह्रीं उत्तमार्जव धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

कठिन वचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज,
सांच जवाहर खोल सत्यवादी जग में सुखी,
उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को दरब सब दीजिये,
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा सांच गुन लख लीजिये,

ऊंचे सिंहासन बैठि वसु नृप धर्म का भूपति भया,
वच झूठ सेती नरक पहुंचा स्वर्ग में नारद गया।

ओं ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में॥

उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पाप को बाप बखानो।
आशा पास महा दुःखदानी, सुख पावे सन्तोषी प्रानी॥

प्रानी सदा शुचि शील जप तप ज्ञान ध्यान प्रभावतें,
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये अशुचि दोष स्वभावतें,
ऊपर अमलमल भरयो भीतर कौन विधि घर शुचि कहैं,
बहु देह मैली सुगुन थैली शौच गुन साधू लहैं।

ओं ह्रीं उत्तमशौच धर्मांकायार्घ्यं नि० स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल पंचेन्द्री मन वश करो,
संजम रतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं।

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव भवके भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरक पशु गति में नाहीं, आलस हरन करन सुखठांही॥

ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुणा धरो,
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वशि करो,
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीच में,
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम मुख बीच में।

ओं ह्रीं उत्तम संयम-धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय करम शिखरको वज्र है,

द्वादश विधि सुखदाय क्यों न करै निज शकति सम।

उत्तम तप सब मांहि बखाना, करम शिखर को वज्र समाना।

बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशु तन धारा॥

धारा मनुष्यतन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता,

श्रीजैनवानी तत्त्व ज्ञानी, भई विषय पयोगता,

अति महादुर्लभ त्याग विषय कषाय जो तप आदरै,

नरभव अनूपम कनक घरपर मणिमयी कलसा धरै।

ओं ह्रीं उत्तम तपोधर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

दान चार परकार चार संघ को दीजिये,

धन बिजुली उनहार नरभव लाहो लीजिये।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।

निहचै राग द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै॥

दोनों संभारै कूप जल सम दरब घर में परनया,

निज हाथ दीजे साथ लीजे खाय खोया बह गया,

धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया त्याग राग विरोधको,

बिन दान श्रावक साधु दोनों लहैं नाहीं बोध को।

ओं ह्रीं उत्तम त्यागधर्मांगायानर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं०।

परिग्रह चौबिस भेद त्याग करैं मुनिराजजी,

तृष्णाभाव उछेद घटती जान घटाइये।

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।

फांस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै॥

भालै न समता सुख कभी नर बिना मुनि मुद्रा धरै,
धनि नगन पर तन नगन ठाढ़े सुर असुर पायनि परैं,
घरमाँहि तिसना जो घटावै रुचि नहीं संसार सों,
बहुधन बुराहू भला कहिये लीन पर उपगार सों।

ओं ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगायार्घ्यं।

शीलबाड़ि नौ राखि ब्रह्मभाव अन्तर लखो,
करिदोनों अभिलाख करहु सफल नर भव सदा।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान वर्षा बहु सूरे, टिकैं न नैन बान लखि कूरे॥

कूरे तिया के अशुचितन में काम रोगी रति करैं,
बहुमृतक सड़हिं मसानमाहीं काक ज्यों चोंचैं भरैं,
संसार में विषवेल नारी तजि गये जोगीश्वरा,
'द्यानत'धरमदश पैंड चढ़िके शिवमहलमें पगधरा।

ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा

जयमाला—दोहा।

दश लच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय।
कहौं आरती भारती, हम पर होहु सहाय॥ १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई,
उत्तम मार्दव विनय प्रकाशै, नाना भेद ज्ञान सब भासै॥२

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै,
उत्तम सत्य वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै॥३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, सन्तोषी गुणरतन भन्डारी,
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम शत्रु को टालै,
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोग भूमि सुर शिव सुख होई ॥५
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विस्तारै,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर सुर सहित मुक्ति फल पावै ॥६

दोहा—करै करम की निर्जरा, भव पींजरा विनाशि ।
अजर अमर पद को लहै, द्यानत सुख की राशि ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्मेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा ।

इति दशलक्षण पूजा ।



अथ रत्नत्रय पूजा



दोहा—चहुं गति फणि विष हरन मणि, दुःख पावक जलधार ।
शिव सुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्रावतरावतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

सोरठा—क्षीरोदधि उनहार उज्ज्वल जल अति सोहना ।
जनम रोग निरवार ~~[illegible]~~ सम्यक रत्नत्रय भजौं ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गारि, होय सुवास दशों दिशा, जन्म०, चन्दनम्,
तन्दुल अमल चितार, वासमती सुखदास के, जन्म०, अक्षतान्
महकै फूल अपार, अलिगुञ्जै ज्यों थिति करै, जन्म०, पुष्पम्
लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्ध युत, जन्म०, नैवेद्यम्
दीप रतनमय सार, जोति प्रकाशै जगत मैं, जन्म०, दीपम्
धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की, जन्म०, धूपम्
फल शोभा अधिकार, लौंग छुहारे जायफल, जन्म०, फलम्
आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये, जन्म०, अर्घ्यं

सम्यग्दर्शन ज्ञान व्रत, शिवमग तीनों मयी।
पार उतारन जान 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।



सम्यग्दर्शन पूजा



दोहा—सिद्ध अष्ट गुनमय प्रकट, मुक्त जीव सो पान।
जिह बिन ज्ञान चरित अफल, सम्यक् दर्श प्रधान ॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—नीर सुगन्ध अपार तृषा हरै मल क्षय करै।
सम्यक् दर्शनसार आठ अङ्ग पूजों सदा ॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।

जल केशर घनसार ताप हरै शीतल करै, सम्यक०, चन्दनम्
अछत अनूप निहार दारिद नाशै सुख भरै, सम्यक०, अक्षतान्
पुहुप सुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्यक०, पुष्पम्
नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्यक०, नैवेद्यम्
दीप ज्योति तम हार घट पट परकाशै महा, सम्यक०, दीपम्
धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड़ता हरै, सम्यक०, धूपम्
श्रीफल आदि विथार निहचै सुरशिव फल करै, सम्यक०, फलम्
जल गंधाक्षत चारु दीप धूपफल फूल चरु, सम्यक०, अर्घ्यं

जयमाला—दोहा।

आप आप निहचै लखै, तत्वप्रीति व्यौहार।
रहित दोष पचीस है, सहित अष्ट गुन सार ॥१

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यग्दर्शन रतन गहीजे, जिन वच में सन्देह न कीजे।
इहभव विभवचाह दुःखदानी, परभव भोग चहै मत प्रानी ॥
प्रानी गिलानन करि अशुचि लखि धरमगुरु प्रभु परखिये।
परदोष ढकिये धरमचिगते को सुथिर कर हरखिये ॥
चउ संघ को वात्सल्य कीजे धरम की परभावना।
गुण आठसों गुण आठ लहि कैं इहां फेर न आवना ॥२

ॐ ह्रीं अष्ट अंग सहित पंचविंशति दोष रहिताय सम्यग्दर्शनायार्घ्यं।



सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा—पंचभेद जाके प्रकट ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह तपनहर चन्द्रमा सोइ सम्यक्ज्ञान ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्रावतरावतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

सोरठा—नीर सुगन्ध अपार तृषा हरै मलछय करै,
सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजों सदा ।

ओं ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् नि० ।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै, सम्यग्ज्ञान०, चन्दनम्
अछत अनूप निहार दारिद नाशै सुख भरै, सम्यग्ज्ञान०, अक्षतान्
पुहुपसुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्यग्ज्ञान०, पुष्पं
नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्यग्ज्ञान०, नैवेद्यं
दीपज्योति तमहार घटपट परकाशै महा, सम्यग्ज्ञान०, दीपं
धूप घ्रान सुखकार रोग विघ्न जड़ता हरै, सम्यग्ज्ञान०, धूपं
श्रीफल आदि विथार निहचै सुर शिव फल करै, सम्यग्ज्ञान०, फलं
जल गन्धाछत चारु दीप धूप फल फूल चरु, सम्यग्ज्ञान०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

आप आप जानै नियत ग्रन्थ पठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन अष्ट अङ्ग गुनकार ॥

चौपाई मिश्रित गीता छंद—

सम्यग्ज्ञान रतनमय भाया, आगमतीजा नैन बताया।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय सङ्ग जानो।

आनो सुकाल पठन जिनागम नाम गुरु न छिपाइये।
तपरीति गहि बहुमान देके विनय गुन चित लाईये।
ये आठभेद करम उछेदक ज्ञान दर्पन देखना।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा और सब पटपेखना।

ओं ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा

अथ सम्यक्चारित्र पूजा



दोहा—विषय रोग औषधि महा दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाकों धरैं सम्यक्चारित सार॥

ओं ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक्चारित्र ! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—नीर सुगंध अपार तृषा हरै मल क्षय करै,
सम्यक्चारित धार तेरहविध पूजों सदा।

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०स्वाहा।

जल केशर घनसार ताप हरै शीतल करै, सम्य०, चन्दनम्
अक्षत अनूप निहार दारिद्र नाशै सुख भरै, सम्य०, अक्षतान्
पुहुप सुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्य०, पुष्पं
नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्य०, नैवेद्यं
दीप ज्योति तमहार घटपट परकाशै महा, सम्य० दीपं
धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड़ता हरै, सम्य०, धूपं
श्रीफल आदि विथार निश्चय सुर शिव फल करै, सम्य०, फलं
जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फल फूल चरु, सम्य०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

आप आप थिर नियत नय तप संजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये तेरह विधि दुःखहार॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यकचारित रतन संभालो, पांच पाप तजिकें व्रतपालो।
पंच समिति त्रय गुपति गहीजे, नरभव सफल करहु तन छीजे॥
छीजे सदा तनको जतन यह एक संजर्म पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांही कषाय विषयनि टालिये॥
शुभ करम जोग सुघाट आया पार हो दिन जात है।
द्यानत धरम की नाव बैठो शिवपुरी कुशलात है॥ पूर्णार्घ्यं

समुच्चय जयमाला

सम्यकदर्शनज्ञान व्रत इन बिन मुकति न होय,
अंध पंगु अरु आलसी जुदे जले दव लोय।

चौपाई १६ मात्रा

तापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम बन्ध कट जावै।
तासौं शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
ताकौं चहुँ गति के दुःख नाहीं, सो न परै भव सागर माहीं।
जनम जरामृतु दोष मिटावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
सोइ दशलच्छण को साधै, सो सोलह कारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
सोइ शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥

सोई लोकालोक निहारैं, परमानन्द दशा विसतारैं।
आप तिरैं औरन तिरवावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै ॥

दोहा—एक स्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब 'द्यानत' को सुखदाय ॥

ओं ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय महार्घ्यम् नि० स्वाहा।

इति रत्नत्रय पूजा



अथ नंदीश्वरद्वीप (अष्टान्हिका पर्व की) पूजा



अडिल्ल—सरब परब में बड़ो अठाई परब है,
नन्दीसुर सुर जांय लिये वसु दरब है।
हमैं शकति सो नांहि इहां करि थापना,
पूजौं जिन गृह प्रतिमा है हित आपना ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिण दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

कंचन मणिमय भृङ्गार तीरथ नीर भरा,
तिहुँ धार दई निरवार जामन मरन जरा।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम बावन पुंज करों,
वसु दिन प्रतिमैं अभिराम आनन्द भाव धरौं ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

भव तप हर शीतलवास सो चन्दन नांही,
प्रभु यह गुन कीजे सांच आयो तुम ठांही, नन्दी०, चंदनम्
उत्तम अक्षत जिनराज पुञ्ज धरे सो हैं,
सब जीते अक्ष समाज तुम सम अरुको है, नन्दी०,अक्षताव्
तुम काम विनाशक देव ध्याऊं मैं फूलन सों,
लहुं शील लक्ष्मी एव छूटूं शूलन सों, नन्दी०, पुष्पम्
नेवज इन्द्रिय बलकार सो तुमने चूरा,
चरु तुम ढिग सोहै सार अचरज है पूरा, नन्दी०, नैवेद्यं
दीपक की ज्योति प्रकाश तुम तन मांहि लसे,
टूटे करमन की राशा ज्ञानकणी दरशै, नन्दी०, दीपम्
कृष्णागरु धूप सुवास दश दिशि नारि वरै,
अति हरषभाव परकाश मानों नृत्य करैं, नन्दी०, धूपम्
बहुविध फल ले तिहुंकाल आनन्द राचत हैं,
तुम शिवफल देहु दयाल तो हम जांचत हैं, नन्दी०, फलम्
यह अरघ कियो निज हेत तुमको अरपत हों,
'द्यानत' कीनो शिव खेत भूप समरपत हों, नन्दी०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

कार्तिक फाल्गुन षाढ़ के अंत आठ दिन मांहि ।
नंदीसुर सुर जात हैं, हम पूजत इह ठांहि ॥१

छन्द—एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजनमहा, लाख चौरासिया एक दिश में लहा, आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं, भवन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥ चार दिशि चार अन्जनगिरी राजही,

सहस चोरासिया एक दिश छाजहीं, ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरम्, भवन बावन० ॥३॥ एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी, एक इक लाख योजन अमल जल भरी, चहुं दिशा चार वन लाख जोजन वरं, भवन बावन० ॥४॥ सोलवापीन मधि सोलगिरि दधि मुखं, सहस दश महायोजन लखत ही सुखं, बावरी कौन दो मांहि दो रति करं, भवन बावन० ॥५॥ शैल बत्तीस इक सहस योजन कहे, चार सोलै मिले सर्व बावन लहे, एक इक शीश पर एक जिन मन्दिरं, भवन बावन० ॥६॥ बिंब अठ एक सौ रत्न मइ सोहही, देव देवी सरब नयन मन मोहहीं पांच सै धनुष तन पद्म आसन परं, भवन बावन० ॥७॥ लाल मुख नख, नयन श्याम अरु श्वेत हैं, श्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं, वचन बोलत मनों हंसत कालुषहरं, भवन बावन० ॥८॥ कोटि शशि भानुदुति तेज छिप जात हैं, महा वैराग्य परिणाम ठहरात हैं, वचन नहिं कहैं लखि होत सम्यक्धरं, भवन बावन० ॥९॥

सोरठा—नन्दीश्वर जिन धाम, प्रतिमा महिमा को कहै।

'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति सब सुख करै॥ पूर्णार्घ्यं

इत्याशीर्वादः।



चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा



सोरठा—परम पूज्य चौबीस, जिहिं जिहिं थानक शिव गये।

सिद्ध भूमि निशदीस मनवचतन पूजा करौं॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

गीता—शुचि क्षीर दधि सम नीर निरमल कनक झारी में भरौं,
संसार पार उतार स्वामी जोर कर विनती करौं,
सम्मेदगिरि गिरिनार चम्पा, पावापुर कैलाश कौं,
पूजौं सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवासकौं ।

ओं ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन सलिल शीतल विस्तरौं,
भव पाप को सन्ताप मेंटो जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, चंदनं
मोती समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं,
औगुन हरो गुन करो मोकों, जोरकर विनतीकरौं, सम्मेद०, अक्षतान्
शुभ फूल राश सुवासवासित खेद सब मनके हरौं,
दुःख धाम काम विनाश मेरो जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, पुष्पं
नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भव परिहरौं,
यह भूखदूषन टार प्रभुजी जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, नैवेद्यम्
दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल तिमिर सेती नहिं डरौं
संशय विमोह विभर्म तमहर जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, दीपम्
शुभ धूप परम अनूप पावन भाव पावन आचरौं,
सब करम पुञ्ज जलाय दीजे जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, धूपम्
बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम चारगति सों निरवरौं,
निहचै मुक्तिफल देहु मोको जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, फलम्

जल गन्ध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरों,
'द्यानत' करो निर्भय जगततैं जोरकर विनती करों, सम्मेद०, अर्घ्यं

जयमाला—सोरठा।

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

चौपाई—१६ मात्रा।

नमों रिषभ कैलाश पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं ॥२
वन्दों अजित अजित पददाता, वन्दों सम्भव भव दुःखघाता।
वन्दों अभिनन्दन गुणनायक, वन्दों सुमति सुमति के दायक ॥३
वन्दों पदम मुकति पदमाकर, वन्दों सुपार्श्व आश पाशहर।
वन्दों चन्द्रप्रभ प्रभुचन्दा, वन्दों सुविधि सुविधि निधि कंदा ॥४
वन्दों शीतल अघतप शीतल, वन्दों श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वन्दों विमल विमल उपयोगी, वन्दों अनंत अनंत सुखभोगी ॥५
वन्दों धर्म धर्म विस्तारा, वन्दों शांति शांति मन धारा।
वन्दों कुन्थु कुन्थु रखवालं, वन्दों अर अरिहर गुणमालं ॥६
वन्दों मल्लि काम मल्ल चूरन, वन्दों मुनि सुव्रत व्रत पूरन।
वन्दों नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दों पास पास भ्रम जगहर ॥७
बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भू पर।
एकबार वन्दे जो कोइ, ताहि नरक पशु गति नहिं होइ ॥८
नरगति नृप सुर शक्र कहावे, तिहुं जग भोग भोगि शिव पावे।
विघन विनाशक मंगलकारी, गुण विशाल वन्दे नरनारी ॥९

घत्ता—जो तीरथ जावे पाप मिटावे, ध्यावे गावे भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै ॥१०

ओं ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि० । इत्याशीर्वादः ।



समुच्चय चौबीसी पूजा



वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व जिनराय
चंद्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि वासुपूज्य पूजित सुरराय।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल शांति कुन्थु अरमल्लि मनाय,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु वर्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति वर्तमान जिन समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

मुनि मन सम उज्ज्वल नीर प्रासुक गंध भरा,
भरि कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा।
चौबीसों श्री जिनचंद आनन्द कंद सही,
पद जजत हरत भव फन्द पावत मोक्ष मही ॥

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

गोशीर कपूर मिलाय केशर रंग भरी,
जिन चरनन देत चढ़ाय भव आताप हरी, चौबीसों०, चंदनं
तन्दुल सित सोम समान सुन्दर अनियारे,
मुकता फल की उनमान पुञ्ज धरौं प्यारे, चौबीसौं०, अक्षतान्

बर कंज कदम्ब कुरंड सुमन सुगन्ध भरे,
जिन अग्र धरों गुनमण्ड काम कलंक हरे, चौबीसौं०, पुष्पम्
मन मोदन मोदक आदि सुन्दर सद्य बने,
रस पूरित प्रासुक स्वाद जजत क्षुधादि हने, चौबीसों०, नैवेद्यं
तम खण्डन दीप जगाय धारों तुम आगे,
सब तिमिर मोह क्षय जाय ज्ञानकला जागे, चौबीसौं०, दीपं
दश गन्ध हुताशन मांहि हे प्रभु खेवत हों,
मिस धूम कर्म जर जांहि तुम पद सेवत हों, चौबीसों०, धूपं
शुचि पक्क सुरस फल सार सब ऋतु के लायो,
देखत दृग मन को प्यार पूजत सुख पायो, चौबीसौं०, फलं
जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार भवतरि मोक्ष वरों, चौबीसौं०, अर्घ्यं

जयमाला—दोहा।

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊं गुण माला अबै, अजर अमर पद देत ॥१

घत्ता—जय भव तम भंजन जनमनकंजन रंजन दिन मनि स्वच्छकरा
शिव मग परकाशक अरिगननाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥२

पद्धरि छन्द।

जय रिषभदेव रिषिगन नमन्त, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय सम्भव भव भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्दपूर ॥३
जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युति तन रसाल,
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद्र चंद्र द्युति तन प्रकाश ॥४

जय पुष्पदंत द्युति दंत सेत, जय शीतल शीतल गुण निकेत,
जय श्रेयनाथ नुत सहस भुज्ज, जय वासव पूजित वासु पुज्ज ॥५
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनन्त गुन गन अपार,
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥६
जय कुंथु कुंथु आदिक रखेय, जय अरजिन वसु अरिक्षय करेय,
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्ल दल्ल ॥७
जय नमिनित वासव नुत सप्रेम, जय नेमिनाथ वृष चक्र नेम,
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्धमान शिवनगर साथ ॥८

घत्ता—चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, पाप निकंदा सुखकारी,
तिन पद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव वंदा हितधारी ॥९

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं नि० ।

सोरठा—भुक्ति मुक्तिदातार, चौबीसों जिनराजवर ।
तिन पद मन वच धार जो पूजै सो शिवलहै ॥१०
इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ सप्त ऋषि पूजा

छप्पय—प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्व सुन्दर चौथो वर ॥
पंचम श्री जयवान विनय लालस षष्ठम भनि ।
सप्तम जय मित्राख्य सर्व चारित्र धाम गनि ॥
ये सातों चारण ऋद्धिधर करूं तासु पदथापना ।
मैं पूजूं मनवचकाय करि जो सुख चाहूँ आपना ॥

ओं ह्रीं चारणर्द्धिधर सप्तर्षिसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

गीता—शुभतीर्थ उद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं,
भवतृषा कन्द निकन्द कारण शुद्ध घट भरवायकैं ।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक मुनिन की पूजा करूं,
ता करें पातक हरें सारे सकल आनन्द विस्तरूं ॥१

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

श्रीखण्ड कदली नन्द केशर मन्द मन्द घिसाय के,
तसुगंध प्रसरत दिग दिगंतर भर कटोरी लायके, मन्वादि०, चंदनं
अति धवल अक्षत खण्डवर्जित मिष्ट राजन भोग के,
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनतशुभ उपयोग के, मन्वादि०, अक्षतान्
बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे अमल कमल गुलाब के,
केतकी चम्पा चारु मरुवा चुने निजकर चावके, मन्वादि०, पुष्पम्
पकवान नाना भांति चातुर रचित शुद्ध नये नये,
सद्मिष्ट लाडू आदि भर बहु पुरट के थारा लये, मन्वादि०, नैवेद्यं
कलधौत दीपक जड़ित नाना भरित गो घृत सारसों,
अतिज्वलित जगमग ज्योति जाकी तिमिर नाशनहारसों, मन्वा०, दीपं
दिकचक्र गंधित होत जाकर धूप दश अङ्गी कही,
सो लाय मनवचकाय शुद्ध लगायकर खेऊं सही, मन्वादि०, धूपम्
वर दाख खारक अमित प्यारे मिष्ट पुष्ट चुनाय के,
द्रावडी दाड़िम चारु पुङ्गी थाल भर भर लायके, मन्वादि०, फलं
जल गंध अक्षत पुष्प चरु वरदीप धूप सुलावना,
फलललित आठों द्रव्यमिश्रित अर्घकीजे पावना, मन्वादि०, अर्घं

जयमाला—

वन्दूं ऋषिराजा धर्मजहाजा, निज परकाजा करत भले ।
करुणा के धारी गगनविहारी, दुःख अपहारी भरम दले ॥
काटत जम फंदा भविजन वृन्दा, करत अनन्दा चरणन में ।
जो पूजें ध्यावें मंगल गावें, फेर न आवें भव वन में ॥

पद्धरि छन्द ।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावर की रक्षा करंत,
जय मिथ्यातम नाशक पतङ्ग, करुणारस पूरित अंग अंग ॥१
जय श्री स्वरमनु अकलंकरूप, पद सेव करत नित अमर भूप,
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन समान ॥२
जय निचय सप्त तत्वार्थ भास, तप रतन मनो तन में प्रकाश,
जय विषय रोध संबोधभान, परणति के नाशन अचल ध्यान ॥३
जय जयहिं सर्व सुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगतजाल,
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणति में पायो विराम ॥४
जय आनंदघन कल्याण रूप, कल्याण करत सबको अनूप,
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विचरत करत सेव ॥५
जय जेय विनेयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान,
जय कृशितकाय तप के प्रभाव, छबि छटा उड़ति आनंददाय ॥६
जय मित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधमकीने पवित्र,
जय चन्द्रवदन राजीवनयन, कबहूँ विकथा बोलत न वयन ॥७
जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन गमन करते अभंग,
जय आये मथुरापुर मंझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार ॥८

जय जय तिन चरणों के प्रसाद, सब मरी देवकृत भई बाद,
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा तिन जोरिहस्त ॥६
जय ग्रीषम ऋतु पर्वत मंझार, नित करत अतापन योग सार,
जय तृषा परीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहिं मन सुमेर ॥१०
जय मूल अठाइस गुणनसार, तप उग्र तपत आनन्दकार,
जय वर्षाऋतु में वृक्ष तीर, तहं अति शीतल झेलत समीर ॥११
जय शीतकाल चौपट संझार, कै नदी सरोवर तट विचार,
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१२
जय मृतकासन वज्रासनीय, गो दोहन इत्यादिक गनीय,
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१३
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय,
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्रतनो दुःख होय चार ॥१४
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईतिभीति सब नशत सांच,
जय तुम सुमिरत सुखलहत लोक, सुर असुर नमतपद देत धोक ॥१५

रोला—ये सातों मुनिराज, महातप लक्ष्मी धारी,
परमपूज्य पद धरें, सकल जगके हितकारी।
जो मन वच तन शुद्ध, होय सबै औ ध्यावे,
सो जन मनरंगलाल अष्ट ऋद्धिनको पावे ॥१६ पूर्णार्घ्यं

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तन निर्तें निरवारो ऋषिराज॥ इत्याशीर्वादः।

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यः पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।



अथ जिनवाणी पूजा



स्थापना-दोहा—जनम जरामृतु छय करै, हरै कुनय जड़ रीत ।
भव सागर सों ले तिरै, पूजै जिनवच प्रीत ॥

ओं ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वति वाग्वादिनि ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

त्रिभङ्गी—

छीरोदधि गङ्गा विमलतरङ्गा, सलिल अभंङ्गा सुखसङ्गा ।
भरि कंचन भारी धार निकारी, तृषा निवारी हित चङ्गा ॥
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि अंग रचे चुनि ज्ञान मई ।
सो जिनवर वानी शिव सुखदानी त्रिभुवनमानी पूज्य भई ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत सरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् नि० ।

करपूर मंगाया चन्दन आया केशर लाया रंग भरी,
शारदपद वन्दौं मन अभिनंदौं पापनिकंदौं दाह हरी, तीर्थं०, चंदनं
सुखदास कमोदं धारक मोदं अति अनुमोदं चन्द्रसमं,
बहुभक्ति बढ़ाई कीरति गाई होहु सहाई मात ममं, तीर्थं०, अक्षतान्
बहु फूल सुवासं विमल प्रकाशं आनंदराशं लाय धरे,
मनकाम मिटाओ शीलबढ़ायो सुख उपजायो दोपहरे, तीर्थं०, पुष्पं
पकवान बनाया बहु घृत लाया सब विध भाया मिष्ट महा,
पूजूं थुति गाऊं प्रीति बढ़ाऊं छुधा नसाऊं हर्ष लहा, तीर्थं०, नैवेद्यं
करि दीपक ज्योतं तम छय होतं जोति उदोतं तुमहिं चढ़ै,
तुमहो परकाशक भरमविनाशक हमघटभासक ज्ञानबढ़े, तीर्थं०, दीपं

शुभ गन्ध दशाँकर पावक में धर धूप मनोहर खेवत हैं,
सब पाप जलावें पुण्य कमावें दास कहावें सेवत हैं, तीर्थं०, धूपम्
बादाम छुहारी लौंग सुपारी श्रीफल भारी ल्यावत हैं.
मनवांछितदाता मेंटिअसाता तुम गुनमाता ध्यावत हैं, तीर्थं०, फलं
नयननि सुखकारी मृदुगुनधारी उज्ज्वलभारी मोल धरै,
शुभगंधसम्हारा वसननिहारा तुमतरधारा ज्ञान धरै, तीर्थं०, वस्त्रं
जल चन्दन अक्षत फूल चरु चत दीप धूप अतिफल लावै,
पूजा को ठानत जो तुम जानत सो नर द्यानत सुखपावै, तीर्थं०, अर्घ्यं

सोरठा—ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

वेसरी—छन्द।

पहिला आचाराङ्ग बखानों, पद अष्टा दश सहस प्रमानो।
दूजा सूत्रकृत अभिलाषम्, पद छत्तीस सहस गुरुभाषम्॥
तीजा ठाना अङ्ग सुजानम्, सहस छियालिस पद सरधानम्।
चौथा समवायांग निहारम्, चौसठ सहस लाख इक धारम्॥
पंचम व्याख्या प्रगपति दरशम्, दोयलाख अट्ठाइस सहसम्।
छट्टा ज्ञातृकथा विस्तारम्, पांच लाख छप्पन हजारम्॥
सप्तम उपासकाध्ययनांगम, सत्तर सहस ग्यारलखि भंगम्।
अष्टम अन्तकृतं दश ईशम्, सहस अठाईस लाख तेईसम्॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालम्, लाख बानवै सहस चवालम्।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारम्, लाख तिरानव सोल हजारम्॥
ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखम्, एक कोडि चौरासी लाखम्।

चारकोडि अरु बन्द्रह लाखम, दो हजार सब पदगुरु शाखम् ॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदम, इकसौ आठ कोडि पनवेदम् ।
अडसठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्याहन हैं ॥
इकसौ बारह कोडि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अङ्ग सर्व पद माने ॥
कोडि इकावन आठहि लाखम्, सहस चुरासी छहसौ भाखम् ।
साढ़े इकीस शिलोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥

दोहा—जा बानी के ज्ञान में, सूझे लोका लोक ।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हौं धोक ॥ पूर्णार्घ्यं ।



अथ गुरु पूजा



दोहा—चहुँगति दुःख सागर विषैं तारन तरन जिहाज ।
रत्नत्रयनिधि नगनतन, धन्य महामुनिराज ॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु गुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

शुचिनीर निरमल छीरदधि सम सुगुरुचरण चढ़ाइया ।
तिहुँधार तिहुँ गद टार स्वामी अति उछाह बढ़ाइया ॥
भव भोग तन वैराग धार निहार शिव तप तपत हैं ।
तिहुँ जगतनाथ अराध साधु सुपूज नित गुण जपत हैं ॥

करपूर चन्दन सलिलसों घसि सुगुरुपद पूजा करौं,
सब पाप ताप मिटाय स्वामी धरम शीतल विस्तरों, भव०, चंदनं
तन्दुल कमोद सुवास उज्ज्वल सुगुरु पगतर धरत हैं,
गुनकार औगुनहार स्वामी वन्दना हम करत हैं, भव०, अक्षतान्
शुभ फूलराश प्रकाश परिमल सुगुरुपांयन परत हौं,
निरवार मार उपाधि स्वामी शील दृढ़ उर धरत हौं, भव०, पुष्पं
पकवान मिष्ट सलौन सुन्दर सुगुरु पांयन प्रीत सों,
कर क्षुधारोग विनाश स्वामी सुथिर कीजे रीतसों, भव०, नैवेद्यं
दीपक उदोत सजोत जगमग सुगुरु पद पूजों सदा,
तमनाश ज्ञान उजास स्वामी माहि मोह न हो कदा, भव०, दीपं
बहु अगर आदि सुगन्ध खेऊं सुगुण पद पद्महिं खरे,
दुःख पुञ्ज काठ जलाय स्वामी गुण अछयं चितमें धरे, भव०, धूपं
भर थार पूग बदाम बहुविधि सुगुरुक्रम आगे धरों,
मंगल महाफल करो स्वामी जोड़ कर विनती करों, भव०, फलं
जल गन्ध अक्षत फूल नेवज दीप धूप फलावली,
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी हमहिं तार उतावली, भव०, अर्घ्यं

दोहा—कनककामनी विषय वश दीसै सब संसार।
त्यागी वैरागी महा साधु सुगुन भण्डार ॥१
तीन घाट नवकोड़ि सब बन्दों सीस नवाय,
गुन तिन अट्ठाईस लों कहूँ आरती गाय ॥२

एक दया पालैं मुनिराजा राग द्वेष द्वै हरनपरं,
तीनों लोक प्रकट सब देखैं चारों आराधन निकरं।

पंच महाव्रत दुद्धर धारैं छहों दरब जानैं सुहितं,
सातभङ्गवानी मन लावैं पावैं आठ रिद्ध उचितं ॥३
नवों पदारथ विधिसों भाखैं बंध दशों चूरन करनं,
ग्यारह शङ्कर जानै मानै उत्तम बारह व्रत धरनं।
तेरह भेद काठिया चूरे चौदह गुणथानक लखियं,
महाप्रमाद पंचदश नाशे शील कषाय सबै नखियं ॥४
बन्धादिक सत्रह सब चूरे ठारह जन्मन मरन मुनं,
एक समय उनईस परीषह बीस प्ररूपनि में निपुनं।
भावउदीक इकीसों जाने बाईस अभखन त्याग कर,
अहमिंदर तेईसों वंदे इन्द्र सुरग चौईसवरं ॥५
पच्चीसों भावन नित भावै छब्बिस अंग उपंग पढ़ै,
सत्ताईसों विषय विनाशै अट्ठाईसों गुण सुबढ़ै।
शीतसमय सर चौपटवासी ग्रीषम गिरिशिर जोग धरैं।
वर्षा वृक्षतरैं थिर ठाड़े आठ करम हनि सिद्धि वरं ॥६

दोहा—कहौं कहालों भेद मैं बुध थोरी गुण भूर।
हेमराज सेवक हृदय भक्ति भरो भरपूर ॥ अर्घ्यं०पूर्णार्घ्यं०

अथ अनंतव्रत पूजा

अडिल्ल—श्री जिनराज चतुर्दश जग में जयकरा,
कर्मनाश भवसार लही सुख शिवधरा।
संवौषट् ठः ठः सुवषट् यह उचरूं,
आह्वानन स्थापन मम सन्निधिकरूं ॥

ओं ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्र समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीताछंद—

गङ्गादि तीरथ को सुजल भर कनकमय भृङ्गारमें,
चउदश जिनेश्वर चरण जुग पर धार डारों सारमैं ।
श्रीवृषभादि अनंतजिन पर्यंत पूजों ध्यायके,
करि अनन्तव्रत तपकर्म हनि के लहों शिवसुख जायके ॥

ओं ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो जन्म०, जलं० ।

चन्दन अगर घनसार आदि सुगन्ध द्रव्य घसायके,
सहजही सुगन्ध जिनेन्द्र के पद चर्च हों सुखदायके,श्रीवृष०, चंदनं
तन्दुल अखंडित अति सुगन्ध सुमिष्ट लेके करधरों ।
जिनराज तुम चरनन निकट भविपाय पूजों शुभ धरों, श्रीवृ०अक्ष०
चम्पा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लायके ।
केवड़ो कमल गुलाब गेंदा जुही सुमाल बनायके, श्रीवृष०, पुष्पं०
लाडू कलाकंद सेव घेवर और मोनीचूर ले ।
गूझा सुपेड़ा खीर व्यंजन थाल में भरपूर ले, श्रीवृष० नैवेद्यं
ले रत्न जड़ित सुआरती ता मांहि दीप संजोयके ।
जिनराज तुम पद आरतीकर मिथ्यातिमिर सु खोयके, श्रीवृष०, दीपं
चंदन अगर तर शिलारस करपूर की कर धूप को ।
तागंधतें मधु चकित सो खेऊं निकट जिन भूप को, श्रीवृष०,धूपं
नारंग केला दाख दाड़िम बीजपूर मंगाय के,
पुनि आम्र और बदाम श्रीफल कनकथार भरायके, श्रीवृष०, फलं

जल सुचन्दन अखत पुष्प सुगंध बहुविध लायके,
नैवेद्य दीप सुधूप फल इनको जु अर्घ बनायके, श्रीवृष०, अर्घ्यं

जयमाला—पद्धरि छन्द

जय वृषभनाथ वृष को प्रकाश, भविजन को तारे पाप नाश।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदे सुमर्म ॥१
जय संभव जग सुखके निधान, जग सुख करता तुम दियो ज्ञान।
जय अभिनंदन पद धरो ध्यान, तासों प्रगटे शुभ ज्ञान भान ॥२
जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरे भव उदधि पार,
जय पद्म पद्म पदकमल तोहि, भविजन अति सेवें मगन होहि ॥३
जय जय सुपार्श्व तुय नमत पांय, क्षय होत पाप बहु पुण्य थाय।
जय चन्द्रप्रभ शशिकोटिभान, जगका मिथ्यातम हरो जान ॥४
जय पुष्पदन्त जगमांहि सार, पुष्पकको मार्यो अति सुमार।
करि धर्म प्रभाव जग में प्रकाश, हर पापतिमिरदियो मुक्तिवास ॥५
जय शीतल जिन हरभव प्रवीन, हरि पाप ताप जग सुखीकीन।
श्रेयांस कियो जगको कल्यान, दे धर्म दुःखित तारे सुजान ॥६
जय वासु पूज्य जिन नमों तोहि, सुर नर मुनि पूजत गर्व खोहि।
जयविमल बिमल गुणलीन मेय, भविकरे आपसम सुगुणदेय ॥७
जय अनन्तनाथ करि अनन्तवीर्य, हरि घातिकर्म धरि अनंतधीर्य।
उपजायो केवल ज्ञान भान, प्रभु लखे चराचर सब सुजान ॥८

दोहा—यह चतुर्दश जिन जगत में मङ्गल करन प्रवीन।
पाप हरन बहु सुख करन सेवक सुखमय कीन ॥पूर्णार्घ्यं



अथ स्वयंभूस्तोत्र भाषा

चौपाई

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्यागि भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, वंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१
इन्द्र क्षीर सागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुख करतार, बंदौं अजित अजित पदकार ॥२
शुकल ध्यान करि कर्म विनाश, घाति अघाति सकल दुःखराश।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बन्दौं संभव भव दुःखटार ॥३
माता पश्चिम रयन मझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूंछि फल सुनि हरषाय, बन्दौं अभिनन्दन मनलाय ॥४
सब कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवाद धुनि सार।
जैन धरम परकाशक स्वाम, सुमति देवपद करहुँ प्रणाम ॥५
गर्भ अगाऊ धनपत आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदम प्रभु सुखकी राश ॥६
इन्द्र फनिंद्र नरिन्द्र त्रिकालज्ञानी, सुनि सुनि होंहि खुशाल।
द्वादश सभा ज्ञान दातार, नमौं सुपारसनाथ निहार ॥७
सुगुन छियालिस हैं तुम मांहि, दोष अठारह कोइ नाहिं।
मोह महातम नाशक दीप, नमौं चन्द्रप्रभ राख समीप ॥८
द्वादश विधि तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छक दान, बंदौं पहुपदंत मन आन ॥९
भवि सुखदाय सुरगतें आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय,
आप समान सबनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्म सनेह ॥१०

समता सुधा कोप विषनाश, द्वादशांग बानी परकाश।
चार संघ आनंद दातार, नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११
रतनत्रय चिर मुकुट विशाल, शोभै कंठ सुगुन मणिमाल,
मुक्ति नार भरता भगवान, वसुपूज्य वंदौं धरि ध्यान ॥१२
परम समाधि सरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश,
कर्म नाशि शिव सुख विलसंत, वंदौं विमलनाथ भगवंत ॥१३
अंतर बाहिर परिग्रह डार, परम दिगम्बर व्रत को धार,
सर्व जीव हित राह दिखाय, नमों अनंत वचन मन लाय ॥१४
सात तत्व पंचासतिकाय, अरथ नवौं छदरव बहु भाय,
लोक अलोक सकल परकाश, वंदौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५
पंचम चक्रवर्ति निधि भोग, काम देव द्वादशम मनोग,
शांति करन सोलम जिनराय, शांति नाथ वंदौं हरषाय ॥१६
बहुथुति करै हरष नहिं होय, निंदै दोष गहै नहिं कोय,
शीलमान परब्रह्म स्वरूप, वंदौं कुंथुनाथ शिव भूप ॥१७
द्वादशगण पूजे सुखदाय, थुति वंदना करै अधिकाय,
जाकी निज थुति कबहुं न होय, वंदौं अरजिनवर पद दोय ॥१८
परभव रतनत्रय अनुराग, इह भव ब्याहसमय वैराग,
बालब्रह्म पूरनव्रत धार, वंदौं मल्लिनाथ जिन सार ॥१९
विन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लौकांत करैं पगलाग,
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०
श्रावक विद्यावंत निहार, भगति भावसों दियो आहार,
बरषी रतनराशि तत्काल, वंदौं नमि प्रभु दीनदयाल

सब जीवन की बंदी छोर, राग द्वेष द्वै बंधन तोर,
रजमति तजि शिवतियसौं मिले, नेमिनाथ बंदौं सुखनिले ॥२२
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फणधार,
गयो कमठ शठ मुखकर श्याम, नमौं मेरु सम पारसस्वाम ॥२३
भवसागरतें जीव अपार, धरमपोत में धरे निहार,
डूबत काढ़े दया विचार, वर्धमान बंदौं बहुवार ॥२४
दोहा—चौबीसों पदकमल, जुग बंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥२५



श्री महावीर जिन पूजा



मत्तगयंद—

श्रीमत वीर हरै भवपीर भरै सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक नये हरिपंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इतथापतु हौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधन धारक देव इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ओं ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छीरो दधि सम शुचि नीर कञ्चन भृङ्ग भरौं,
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करौं।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो ॥१ जलं

मलयागिर चन्दन सार, केसर संग घिसौं,
प्रभु भवआताप निवार पूजत हिय हुलसौं, श्रीवीर०, चन्दनम् ॥२
तन्दुल सित शशि सम शुद्ध लीनै थार भरी,
तसु पुंज धरौं अविरुद्ध पाऊं शिवनगरी, श्रीवीर०, अक्षतान् ॥३
सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे,
सो मन्मथ भञ्जन हेत पूजौं पद थारे, श्रीवीर०, पुष्पम् ॥४
रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी,
पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी, श्रीवीर०, नैवेद्यम् ॥५
तम खण्डित मण्डित नेह दीपक जोवत हौं,
तुम पदतर हे सुख गेह भ्रमतम खोवत हौं, श्रीवीर०, दीपम् ॥६
हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा,
तुम पदतर खेवत भूर आठों कर्म जरा, श्रीवीर०, धूपम् ॥७
रितु फल कलवर्जित लाय कञ्चन थार भरौं,
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिग भेंट धरौं, श्रीवीर०, फलम् ॥८
जल फल वसु सजि हिम थार तन मन मोद धरौं,
गुण गाऊं भवदधि पार पूजत पाप हरौं, श्रीवीर०, अर्घ्यम् ॥९

पंच कल्याणक—राग टप्पा ।

मोहि राखो हो शरना, श्री वर्धमान जिनरायजी, मोहि०
गरभ साढ़ सित छट्ट लियो तिथि, त्रिशलाउर अघहरना,
सुर सुरपति तित सेवकरी नित, मैं पूजौं भवतरना, मोहि०
ओं ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठ्यां गर्भ मंगल मंडिताय……अर्घ्यं ।
जनम चैतसित तेरस के दिन कुण्डलपुर कनवरना,

सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भव हरना मोहि०

ओं ह्रीं चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय...अर्घ्यं ।

मगसिर असित मनोहर दशमी ता दिन तप आचरना,

नृपकुमार घर पारण कीनो मैं पूजों तुम चरना मोहि०

ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्रायार्घ्यं० ।

शुक्ल दशैं वैशाख दिवस अरि घाति चतुक क्षय करना,

केवल लहि भवि भवसर तारे जजों चरन सुखभरना मोहि०

ओं ह्रीं वैशाखशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानमंडिताय ज्ञानकल्याणक प्राप्तायार्घ्यं० ।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय पावापुर तैं परना,

गणफणिवृन्द जजैं तित बहुविध मैं पूजों भय हरना, मोहि०

ओं ह्रीं कार्तिक कृष्णामावास्यायां मोक्षकल्याणक मंडिताय श्रीमहावीर जिनायार्घ्यं० ।

जयमाला छन्द । हरिगीता । २८ मात्रा ।

गनधर अशनिधर चक्रधर हर धर गदाधर वरवदा ।

अरु चाप धर विद्यासुधर त्रिसूल धर सेवहिं सदा ॥

दुःख हरन आनंद भरन तारन तरन चरन रसाल है ।

सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल की जयमाल है ॥१

घत्ता—जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चन्दवरं,

भवतापनिकन्दन तनकनमन्दन रहित सपन्दन नयन धरं ॥२

त्रोटक छन्द ।

जय केवल भानुकला सदनं, भवि कोक विकाशन कंजवनं ।

जग जीत महारिपु मोह हरं, रज ज्ञान दृगां वर चूर करं ॥१

गर्भादिक मङ्गल मण्डित हो, दुःख दारिद को नित खण्डित हो ।

जगमांहि तुम्हीं सत पण्डित हो, तुमही भव भावविहण्डित हो ॥२

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुमही कवि हो।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलों सोइ मारग राजतियो ॥३
पुनि आप बने गुनमांहि सही, सुरमग्न रहे जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं, लय तानजि सों मन भावत हैं ॥४
पुनि नाचत रङ्ग उमङ्ग भरी, तुव भक्ति विषैं पग प्रेम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं ॥५
घननं घननं घन घण्ट बजै दम दम दम दम मिरदङ्ग सजै।
गगनांगन गर्भ गता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमैं ॥७
कइ नारि सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जल गावति हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥८
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभु जी तुम्हरी,
तुम ही जगजीवन के पितु हो, तुमही बिनकारन के हितु हो ॥९
तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुम ही निज आनंद भासन हो,
तुमही चित चिंतित दायक हो, जग मांहि तुम्हीं सब लायक हो ॥१०
तुमरे पन मङ्गल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही,
हम तो तुमरी शरनागत हैं, तुमरे गुन में मन पागत हैं ॥११
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लौं बसु कर्म नहीं नसिये,
तब लों तुम ध्यान हिये बरतो, तबलौं श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥१२
तब लों व्रत चारित चाहत हों, तब लों शुभ भाव सुगाहतु हों,
तब लों सत सङ्गति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो ॥१३

जब लौं नहिं नाश करौं अरिको, शिवनारि वरौं समता धरिकौं,
यह द्यो तब लौं हम को जिनजी, हम जांचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४
घत्ता—श्रीवीर जिनेशा, नमत सुरेशा, नाग नरेशा, भगति भरा,
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै, शर्मवरा ॥ महार्घं
श्रीसनमति के जुगलपद जो पूजै धरि प्रीत,
'वृन्दावन' सो चतुर नर लहै मुक्ति नवनीत ॥ इत्याशीर्वादः



अथ निर्वाण काण्ड भाषा



दोहा—वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित शिरनाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥१

चौपाई १५ मात्रा ।

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चम्पापुर नामी ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव भगति उरधार ॥२
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुर स्वामी महावीर,
शिखर सम्मेद जिनेश्वर बीस, भाव सहित वन्दौं जगदीस ॥३
वरदत्तराय रु इन्द मुनिंद, सायरदत्त आदि गुण वृन्द,
नगरतारवर मुनि उठ कोड़ि, वन्दौं भाव सहित कर जोड़ि ॥४
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात,
शम्बु प्रद्युम्नकुमार द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय ॥५
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाड़ नरिन्द आदि गुणधीर,
पांच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिर वन्दौं निरधार ॥६

पांडव तीन द्रविड़ राजान, आठ कोडि मुनि मुक्ति पयान,
श्रीशत्रुंजयगिरि के शीश, भाव सहित वन्दौं निशदीस ॥७
जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहिं भये,
श्रीगजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ॥८
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवगवाख्य नील महानील,
कोड़ि निन्यानवे मुक्ति पयान, तुङ्गीगिर वन्दौं धरि ध्यान ॥६
नङ्ग अनङ्ग कुमार सुजान, पंच कोड़ि अरु अर्ध प्रमाण,
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवन पति ईश ॥१०
रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवा तट सार,
कोड़ि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास ॥११
रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट,
द्वै चक्री दश काम कुमार, ऊठ कोड़ि वन्दौं भव पार ॥१२
वड़वानी बड़नयर सुचङ्ग, दक्षिण दिशा गिरि चूल उतङ्ग,
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव सायर तर्ण ॥१३
सुवर्ण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरवर शिखर मंझार,
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥१४
फल होड़ी वर ग्राम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप,
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वन्दौं नित तहां ॥१५
व्याल महाव्याल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय,
श्रीअष्टापद मुकति मंझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार ॥१६
अचलापुर की दिशा ईशान, तहां मेंढ़गिरि नाम प्रधान,
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ॥१७

वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय,
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८
दशरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे,
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करौं जोर जुग पान ॥१९
समव शरण श्री पार्श्व जिनेन्द्र, रेसिंदीगिर नयनानंद,
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जहाज ॥२०
तीनलोक के तीरथ जहां, नित प्रति वन्दन कीजे तहां,
मनवचकाय सहित शिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥२१
सम्वत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल,
भैया वन्दन करहिं त्रिकाल, जयनिर्वाण काण्ड गुणमाल ॥२२

इति निर्वाणकाण्ड भाषा।



यज्ञोपवीत (जनेऊ) बदलने का मंत्र



ओं नमः परमशांताय शांतितीर्थंकरायार्हं स्वाहा। अर्हं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु।

अथवा—अति निर्मल मुक्ताफललतिवं यज्ञोपवीतमतिपूतम्।
रत्नत्रयमिति मत्वा करोमि कलुषापहरणमाभरणम् ॥

इति यज्ञोपवीतसंधारणम् ॥

नोट—५ अस्तिकाय ६ द्रव्य ७ तत्व ९ पदार्थ की सब सत्ताईस लड़ें होती हैं। रत्नत्रय की तीन गांठें होती हैं।

श्री सिद्ध चक्र पूजा



दोहा—ऊर्ध्व अधः रकार युत, बिंदी सहित हकार।
सिद्धचक्र पूजों सदा, अरि करि हर हरिसार॥

ओं ह्रीं अनादि असिआउसा सिद्धचक्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मोह महारिपु नाश के वर पायो सम्यक सार,
यासे पूजों नीर से, मिथ्यात्व तृषा निरवार,
आज हमारे आनंद हैं, मैं पूजों आठों द्रव्य से।
तुम सिद्ध महा सुखदाय, आठों कर्म विनाश के,
लहि आठ सुगुण समुदाय, आज हमारे आनंद हैं,
हम पाये मङ्गलचार। येही उत्तम लोक में।
इनही का शरणाधार, आज हमारे आनंद हैं॥ जलं

ज्ञानावरणी जीत के प्रगटोवर केवल ज्ञान, चंदन से पूजा करों अज्ञान तपन की हान। आज हमारे०, मैं पूजों आठों०, सुगंधं
दरशन आवरणी हतो भयो दरश अनंतअपार, पूजोंअक्षत लायके औगुण तमहर गुणकार। आज हमारे०, मैंपूजों आठों०, अक्षतान्
अन्तराय को घातिके उपजो अनंत बलसार, फूलन से पूजा करों प्रभु काम के वाण निवार। आज हमारे०, मैं पूजों आठों०, पुष्पं
कर्म वेदनी मिटगयो निरबाधा बाधाहीन, अब छहों रससौं जजों मेरा रोग क्षुधा कर छीन। आज हमारे०, मैं पूजों०, नैवेद्यं

आयु कर्म को क्षय करो, अवगाह अचल परकाश, पूजौं दीप चढ़ायके, करो भर्म तिमिरको नाश। आजहमारे०, मैं पूजौं०, दीपं नाम प्रकृति सब चूरके, भये अमल अमूरति देव, धूप सुगंधी खेयके सब कर्म जलें स्वयमेव। आज हमारे०, मैं पूजौं०, धूपं गोत्र कर्म सब तोड़ के, प्रभु भये अगुरु लघुसार, फल धर पूजौं भाव से लहों मनवांछित फलसार। आज हमारे०, मैं पूजौं०, फलं अर्घ करों उत्साह से, नमों आठों अंग नवाय, आनंद दौलतराम के प्रभु भव भव होउ सहाय। आज हमारे०, मैं पूजौं०, अर्घं० चार ज्ञानधर ना लखैं, हम देखें श्रद्धावन्त, जाने माने अनुभवें तुम राखो पास महंत। आज हमारे०, मैं पूजौं०, पूर्णार्घ्यं०।

अथ जयमाला—दोहा।

आठ कर्म दृढ़ बन्ध से, नख शिख बन्धो जहान।
बन्ध रहित वसु गुण सहित नमो सिद्ध भगवान ॥

त्रोटक छन्द।

सम्यग्दर्शन वरज्ञान धरं, बल अगुरु लघु अरु बाध हरं,
अवगाह अमूरति नायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥१
अमलं अचलं अतुलं अटलं, अमनं अमलं अतलं अकलं,
अजरं अमरं अघ क्षायक हो। सब० ॥२
निरभोग स्वभोग अराग परं, निरयोग अयोग वियोग हरं,
अरसं सुरसं सुखदायक हो। सब० ॥३
सब कर्म कलंक अटंक अजं, नरनाथ सुरेश समूह जजं,
मुनि ध्यावत सज्जन ज्ञायक हो। सब० ॥४

अविरुद्ध विशुद्ध प्रबोध मयं, सब जानत से कालोक मयं,
परमं धरमं शिवदायक हो। सब० ॥५
निरबंध अबंध अगंध परं, निर्भय निरजय निर्णय अधरं,
निर रूप अनूप अकायक हो। सब० ॥६
निरभेद अखेद अछेद लहा, निरद्वन्द्व सुछंद अफंद महा,
अक्षुधा अतृषा अकषायक हो। सब० ॥७
अयमं अतमं अगमं कहियं, अगमं सुगमं सुसुखं लहियं,
यमराज की चोट बचायक हो। सब० ॥८
निरधाम स्वधाम सुबोध युतं, अपहार निहार अहारचुतं,
भयनाशन तीक्ष्ण सायक हो। सब० ॥९
निरवर्ण अकर्ण दशा धरतं, अगतं अमतं अचतं अरतं,
अति उत्तम भाव सुदायक हो। सब० ॥१०
विन रंग असंग अभंग सदा, अतयें अवयं अजयं सुखदा,
अमरं अगमं गुणदायक हो। सब० ॥११
अविषाद अनाद अबाद वरं, भगवंत अनन्तानन्त तरं,
तुम देव महारवि ध्यायक हो। सब० ॥१२
निःदेह अनेह अगेह सुखी, निरमोह अकोह अलोह तुषी,
तिहुं लोक के नायक पायक हो। सब० ॥१३
चन्द्रहसौ भाग महान बसे, नवलाख के भाग जघन्य लसे,
तनुवात के अन्त सहायक हो। सब० ॥१४
दोहा—वसुविधि चूर्ण कर लिये, वसुगुण शुचि व्यवहार।
ऐसे सिद्ध समूह को, नमों त्रियोग सम्हार। अर्घ्यं, इत्याशीर्वादः।



अथ श्री गर्भ कल्याणक मंगल



पणविवि पंच परम गुरु गुरु जिन शासनो,
सकल सिद्धि दातार सु विघन विनासनो ।
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो,
मंगल कर चउसंघहि, पाप पणासनो ॥
पापहिं पणासन गुणहि गरवा दोष अष्टादश रहे,
धरि ध्यान कर्म विनाशि केवलज्ञान अविचल जिन लहे ।
प्रभु पंचकल्याणक विराजित सकल सुर नर ध्यावहीं,
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥
जाके गरभ कल्याणक धनपति आइयो,
अवधिज्ञान परवान सुइन्द्र पठाइयो ।
रचि नव बारह योजन नयरि सुहावनी,
कनकरयण मणिमण्डित मन्दिर अतिबनी ॥
अतिबनी पौरि पगारि परिखा सुवन उपवन सोहिये,
नर नारि सुन्दर चतुर भेष सु देख जनमन मोहिये ।
तहां जनक गृह छहमास प्रथमहि रतन धारा बरषियो,
पुनिरुचिक वासिनि जननि सेवा करहिं सबविधि हरषियो ॥
सुर कुन्जर सम कुन्जर धवल धुरन्धरो,
केहरि केशर शोभित नख शिख सुन्दरो ।
कमला कलश हवन दुइ दाम सुहावनी,
रवि शशि मण्डल मधुर मीन जुग पावनी ॥

पावनी कनक घटयुगम पूरण कमलकलित सरोवरो,
कल्लोल माला कुलित सागर सिंह पीठ मनोहरो।
रमणीक अमरविमान फणिपति भुवन भुवि छवि छाजहीं,
रुचि रतनराशि दिपन्त दहन सु तेज पुञ्ज विराजहीं॥
ये सखि सोलह सुपने सोती शयन में,
देखे माय मनोहर पश्चिम रयन में।
उठि प्रभात पिय पूछियो अवधि प्रकाशियो,
त्रिभुवन पति सुत होसी फल तिहिं भासियो॥
भासियो फलतिहिं चिंति दम्पति परम आनंदित भये,
छहमास परिनवमास बीते रयन दिन सुखसों गये।
गर्भावतार महन्त महिमा सुनत सब सुख पावहीं,
भनि 'रूपचन्द्र' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं॥
भगवान के गुण गावहीं। इति गर्भकल्याणक पाठ भाषा॥



अथ जन्म कल्याणक मंगल



मतिश्रुत अवधि विराजित जिन जब जनमियो,
तिहुँ लोक भयो छोभित सुरगण भरमियो।
कल्पवासि घर घंट अनाहद बज्जियो,
ज्योतिष घर हरिनाद सहज गल गज्जियो॥
गज्जियो सहजहिं संख भावन भवन शब्द सुहावने,
व्यंतरनिलय पटु पटह बज्जिय कहत महिमा क्यों बने।

कंपित सुरासन अवधिबल जिन जन्म निहचै जांनियौं;
धनराज तब गजराज मायामई निर्मय आनियो ॥
योजन लाख गयंन्द वदन सौ निरमये,
वदन वदन वसु दन्त दन्त सर संठये ।
सर सर सौपम बीस कमलनी छाजहीं,
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं ॥
राजहीं कमलिनि कमल अठोतरसो मनोहर दल बनें;
दल दलहिं अपछर नटहिं नवरस हाव भाव सुहावने ।
मणि कनककङ्कण वर विचित्र सु अमर मंडप सोहये,
घन घण्ट चमंर धवजा पताका देख त्रिभुवन मोहये ॥
तिहिं करि हरि चढ़ि आयउ सुर परिवारसौं,
पुरहिं प्रदच्छन देत सुजिन जयकार सों ।
गुप्त जाय जिन जननिहिं सुख निद्रारची;
मायामयी शिशु राखि तौ जिन आन्योशची ॥
आन्योशचौ जिनरूप निरखत नयन तृप्त न हूजियें,
तब परम हरषित हृदय हरि नें सहसलोचन पूजियें ।
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इन्द्र उछंग धरि प्रभुलीनऊ;
ईशान इन्द्र सुचंद्र छवि शिर छत्र प्रभु के दीनऊ ॥
सनतकुमार महेन्द्र चमर दुइ ढार हीं;
शेष शक्र जयकार शब्द उचार ही ।
उच्छव सहित चतुर्विध सुर हर्षित भयें,
योजन सहस निन्यानवे गगन उलंघि गयें ॥

लंघि गये सुरगिरि जहां पांडुक वन विचित्र विराजहीं,
पांडुकशिला तहं अर्धचन्द्र समान मणि छवि छाजहीं।
योजन पचास विशाल दुगुणायाम वसु ऊंचा गनी,
वर अष्ट मंगल कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥
रचि मणि मण्डप शोभित मध्य सिंहासनो,
थाप्यो पूरब मुख तहां प्रभु कमलासनो ।
बाजहिं ताल मृदङ्ग वेणु वीणा घने,
दुन्दुभि प्रमुख मधुर ध्वनि और जु बाजने ॥
बाजने बाजहिं शची सब मिल धवल मंगल गावहीं,
कर करहिं नृत्य सुरांगना सब देव कौतुक ध्यावहीं।
भरि क्षीर सागर जल जु हाथहिं हाथ सुरगिरि ल्यावहीं,
सौ धर्म अरु ईशान इन्द्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं ॥
बदन उदर अवगाह कलश गत जानिये,
एक चार वसु योजन मान प्रमानिये ।
सहस अठोतर कलशा प्रभु जी के शिर ढरे,
पुनि शृङ्गार प्रमुख आचार सबै करे ॥
करि प्रगट महिमा मनोच्छव आनि पुनि मातहिं दयो,
धनपतहिं सेवा राखि सुरपति आप सुरलोकहिं गयो।
जनमाभिषेक महंत महिमा सुनत सब सुख पावहीं,
भनि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥
जिनराज के गुण गावहीं। इति जन्मकल्याणक ॥



श्री नवग्रह अरिष्ट निवारक

समुच्चय पूजा



दोहा—अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु।
केतु ग्रह रिष्ट नाशने, श्रीजिन पूज रचाहु ॥

ओं ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भववषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक गीता—छन्द।

क्षीर सिंधु समान उज्ज्वल, नीर निर्मल लीजिए,
चौबीस श्री जिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिए।
रवि सोम भूमज सौम्यगुरु कार्य, शनि तमो पूत केतवै,
पूजिए चौबीस जिन ग्रहरिष्ट नाशन हेतवै ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंच कल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कुम कुम हिम सुमिश्रित, घिसों मन करि चावसों,
चौबीस श्री जिनराज अघहर, चरण चरचों भावसों।
रवि सोम०, ओं ह्रीं सर्व....चन्दनम् ॥

अक्षत अखण्डित सालि तन्दुल, पुञ्ज मुक्ताफल समं,
चौबीस श्री जिन चरण पूजन, नाश है नव ग्रह भ्रमं।
रवि सोम०, ओं ह्रीं....अक्षतं निर्वपा०

कुन्द कमल गुलाब केतकी, मालती जाही जुही,
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…पुष्पं ॥

फैनी सुहारी पुवा पापर लेऊ मोदक घेवरं,
शत छिद्र आदिक विविध व्यंजन, क्षुधाहर बहु सुखकरं ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…नैवेद्यं ॥

मणि दीप जग मग जोत तमहर, प्रभु आगे लाइये,
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमर नसाइये ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…दीपं ॥

कृष्णा अगरु घनसार मिश्रित, लौंग चन्दन लाइये,
ग्रहरिष्ट नाशन हेतु भवि जन, धूप जिनपद खेइये ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…धूपं ॥

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच नींबू सद फलं,
चौबीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभ फलं ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…फलं ॥

जल गंध सुमन अखण्ड तंदुल, चरु सुदीप सुधूपक,
फल द्रव्य दूध दही सुमिश्रित अर्घ देय अनूपकं ।
रवि सोम०, ओं ह्रीं…अर्घ्यं ॥

जयमाला—दोहा ।

श्रीजिनवर पूजा किये, ग्रह अरिष्ट मिट जांय ।
पंच ज्योतिषी देव सब, मिल सेवें प्रभु पांय ॥

पद्धरि छन्द ।

जयजय जिनआदि महन्तदेव, जयअजित जिनेश्वर करहिं सेव।
जयजय संभव भव भय निवार, जय जय अभिनंदन जगततार ॥
जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्म प्रभु लख पदम लेष ।
जयजय सुपार्श्व हर कर्म फास, जय जय चंद्रप्रभु सुखनिवास ॥
जय पुष्प दंत कर कर्म अंत, जय शीतल जिन शीतल करन्त ।
जय श्रेय करन श्रेयांश देव, जय वासुपूज्य पूजत स्वयमेव ॥
जय विमलविमल कर जगतजीव, जयर अनंत सुख अतिसदीव ।
जय धर्म धुरंधर धर्म नाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ ॥
जय कुंथुनाथ शिवसुखनिधान, जय अरह जिनेश्वर मुक्ति स्थान।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकास ॥
जय जय नमिदेव दयालसन्त, जय नेमनाथ तसुगुण अनन्त ।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्द्धमान आनन्दकार ॥
नवग्रह अरिष्ट जब होय आय, तब पूजे श्रीजिनदेव पाय ।
सन बच तन मन सुखसिन्धु होय, ग्रह शांतरीत यह कही जोय ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबीसों जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार ॥

इत्याशीर्वादः ।



प्रातःकाल की आरती (पूजा के समय की)

तुम भव दधि तारण सेत श्रीजिनदेव हो, आरति तुम्हारी मैं करूं, जिनदेव हो। निज आरति निवारण हेत, श्री जिनदेव हो ॥१॥ दीप किया भ्रम नाशने. जिनदेव हो। मग दृष्टि पड़े शिवखेत, श्रीजिनदेव हो ॥२॥ नृत्य करों इस हेत से, श्रीजिनदेव हो। भव भ्रमण दुःख देत, श्रीजिनदेव हो ॥३॥ गावत गुण तुम्हरे प्रभू श्रीजिनदेव हो। भव फदन हरो कर चेत श्रीजिनदेव हो ॥४॥ नाथूराम शिववास को श्रीजिनदेव हो। करैं आरति भक्ति समेत श्रीजिनदेव हो ॥५॥ इति।

संध्याकाल की आरती

सांझ समय जिन बन्दौं भविजन सांझ समय जिन बन्दौं, बन्दत होत अनन्दो, भविजन, सांझ समय जिन बन्दौं॥१॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर, बन्दत पापनिकन्दो, भवि जन०, बन्दत०, भविजन॥२॥ कंचन दीप कपूर की बाती खेवत धूप दशाङ्गो, भविजन०, बन्दत०, भविजन० ॥३॥ लेकर दीपक आगे प्रजालों, बाजत ताल मृदङ्गों, भविजन०, बन्दत, भविजन० ॥४॥ जाप (पुष्प) माल धरि ध्यान लगावौं कटत कर्म के फन्दो, भविजन०, बन्दत०, भविजन० ॥५॥ कहैं जिनदास आश चरनन की सेवहु नाभि के नन्दो, भविजन० बन्दत०, भविजन०, ॥६॥ इति।

भाव आरती

मङ्गल आरति आतमराम, तन मन्दिर मन उत्तम ठाम, मङ्गल० समरस जल चन्दन आनन्द, तन्दुल तत्व स्वरूप अमन्द मङ्गल ॥१॥ समयसार फूलन की माल, अनुभव सुख नेवज भरिथाल, मङ्गल० ॥२॥ दीपक ज्ञान ध्यान को धूप, निरमल भाव महाफल रूप, मङ्गल० ॥३॥ सुगुण भविकजन इकरंग लीन, निहचै नवधा भक्ति प्रवीन, मङ्गल० ॥४॥ धुनि उत्साह सु अद्भुत ज्ञान, परम समाधि निरत परधान, मङ्गल० ॥५॥ बाहिज आतम भाव बहावै, अन्तर ह्वै परमातम ध्यावै, मङ्गल० ॥६॥ साहिब सेवक भेद मिटाय, 'द्यानत' एकमेक होजाय, मङ्गल० ॥७॥

इति ।



प्रभाती

बन्दों जिनदेव सदा चरण कमल तेरे ॥टेक
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन गुण केरे ।
सुमति पद्म श्री सुपार्श्व चंदा प्रभु तेरे ॥ टेक
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांश गुन घनेरे ।
वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म जग उजेरे ॥टेक॥
शांति कुन्थु अरह मल्ल मुनिसुव्रत केरे ।
नमि नेम पार्श्वनाथ वीर धीर हेरे ॥टेक॥
लेत नाम अष्ट जाम छूटत भ्रम केरे ।
जन्म पाय जाऊँ गाय चरनन के चेरे ॥टेक॥

इतिशुभम्भूयात् ।

जाप्य दर्पण

सोलहकारणव्रत की जापें

समुच्चय जाप

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि
षोडषकारणेभ्यो नमः

—०—

प्रत्येक दिन की जापें

१ ओंह्रींदर्शनविशुद्धयादिनमः
२ " विनयसंपन्नताये "
३ " निरतिचारशीलव्रताय "
४ "अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय "
५ " संवेगाय "
६ " शक्तितस्त्यागाय "
७ " शक्तितस्तपसे "
८ " साधु समाधये नमः "
९ " वैयावृत्त्यकरणाय "
१० " अर्हद्भक्त्ये "
११ " आचार्यभक्त्ये "
१२ " बहुश्रुत भक्त्ये "
१३ " प्रवचनभक्त्ये "
१४ " आवश्यकापरिहाण्ये "
१५ " सन्मार्गप्रभावनाये "
१६ " प्रवचनवत्सलत्वाय "

पुष्पांजलिव्रत की जापें

समुच्चय

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधि
जिनालयेभ्यो नमः

—०—

प्रत्येक दिन की जापें

१ ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुस्थ जिना-
लयेभ्योनमः
२. " विजयमेरुस्थ जिना-
लयेभ्योनमः
३ " अचलमेरुस्थ जिना-
लयेभ्योनमः
४ " मंदरमेरुस्थ जिना-
लयेभ्योनमः
५ " विद्युत्मालीमेरुस्थ
जिनालयेभ्योनमः

—०—

रविव्रत की जाप

ओं नमः भगवते चिंतामणि-
पार्श्वनाथाय सप्तफण मंडिताय
ओं ह्रीं पद्मावती सहिताय मम
ऋद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा

दशलक्षणव्रत की जापें

समुच्चाय जाप

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्योनमः

—::०::—

प्रत्येक दिन की जाप

१ ओंह्रींउत्तमक्षमाधर्मांगायनमः
२ " उत्तममार्दव धर्मांगाय "
३ " उत्तमार्जव धर्मांगाय "
४ " उत्तमसत्य धर्मांगाय "
५ " उत्तमशौच धर्मांगाय "
६ " उत्तमसंयम धर्मांगाय "
७ " उत्तमतपो धर्मांगाय "
८ " उत्तमत्याग धर्मांगाय "
९ " उत्तमाकिञ्चन्यधर्मांगाय "
१०" उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय"

—::०::—

रत्नत्रय की जाप

समुच्चयजाप

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्रेभ्योनमः

रत्नत्रयव्रत की जापें

१ ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः
२ " सम्यग्ज्ञानाय "
३ " सम्यक्चारित्राय"

—::०::—

अष्टाह्निकाव्रत की जापें

प्रत्येक जाप

समुच्चयजाप—ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपस्थद्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो नमः

—::०::—

प्रत्येक दिन की जाप

१ ओं ह्रीं नंदीश्वरसंज्ञा नमः
२ " अष्टमहाद्विश्रुतसंज्ञाय "
३ " चतुर्मुखसंज्ञाय "
४ " पंचमहालक्षणसंज्ञाय "
५ " स्वर्गसोपानसंज्ञाय "
६ " स्वर्गसंपत्तिसंज्ञाय "
७ " इन्द्रध्वजसंज्ञाय "
८ " त्रिलोकसारसंज्ञाय "

प्रतिदिन समुच्चय व प्रत्येक जाप तीन बार देना चाहिये।



❋ पंचकल्याण तिथिदर्पण ❋

मासक्रम से (इसी चौबीसी पूजा के अनुसार)

श्रावण कृष्णा—
२ श्री मुनि सुव्रतका गर्भ
१० ,, कुन्थुनाथ का गर्भ

श्रावण शुक्ला—
२ श्री सुमतिनाथ का गर्भ
६ ,,नेमिनाथका जन्म व तप
७ ,, पार्श्वनाथ का मोक्ष
१५ ,, श्रेयांसनाथ का मोक्ष

भाद्रपद कृष्णा—
७ श्री शान्तिनाथ का गर्भ

भाद्रपद शुक्ला—
६ श्री सुपार्श्वनाथ का गर्भ
८ ,, पुष्पदंत का मोक्ष
१४ ,, वासुपूज्य का मोक्ष

आश्विन (कुंवार) कृष्णा—
२ श्री नमिनाथ का गर्भ

आश्विन (कुंवार) शुक्ला
१ श्री नेमिनाथ का ज्ञान
८ ,, शीतलनाथ का मोक्ष

कार्तिक कृष्णा—
१ श्री अनंतनाथ का गर्भ
४ ,, संभवनाथ का ज्ञान
१३ ,, पद्मप्रभका जन्म व तप
१४-३० श्रीमहावीर का मोक्ष

कार्तिक शुक्ला—
२ श्री पुष्पदंत का ज्ञान
३ ,, नेमिनाथ का ज्ञान
१२ ,, अरनाथका ज्ञान
१५ ,, संभवनाथ का ज्ञान

अगहन कृष्णा—
१० श्री महावीर का तप

अगहन शुक्ला—
१ श्रीपुष्पदंत का जन्म व तप
१० ,, अरनाथ का तप
११ ,, मल्लिनाथका जन्म व तप
११ ,, नेमिनाथ का ज्ञान
१४ श्री अरनाथ का जन्म
१५ ,, संभवनाथ का तप

पौष कृष्णा—
२ ,, मल्लिनाथ का ज्ञान
११ ,, चंद्रप्रभ का जन्म व तप
११ ,, पार्श्वनाथ का तप
१४ ,, शीतलनाथ का ज्ञान
१४ ,, पार्श्वनाथ का जन्म
(यहां पौष वदी ११ चाहिये)

पौष शुक्ला—
११ श्री अजितनाथ का ज्ञान
११ ,, शान्तिनाथ का ज्ञान
(पौषसुदी १० होना चाहिये)
१४ श्री अभिनन्दन का ज्ञान
१५ ,, धर्मनाथ का ज्ञान

माघ कृष्णा—
४ श्री विमलनाथ का तप
(यहां माघ सुदी ४ चाहिये)
६ श्री पद्मप्रभ का गर्भ
६ ,, विमलनाथ का ज्ञान
(यहां माघ सुदी ६ चाहिये)
१० श्री अजितनाथ का तप
(माघ सुदी १० पाठ शुद्ध है)
१० श्री अजितनाथका तप
(माघ सुदी ९ शुद्ध पाठ है)
१२श्रीशीतलनाथकाजन्मवतप
१२ ,, विमलनाथ का जन्म
(माघ सुदी ४ चाहिये)
१५ श्री आदिनाथ का मोक्ष
३० ,, श्रेयांसनाथका ज्ञान

माघ शुक्ला—
२ श्री वासुपूज्य का ज्ञान
६ ,, संभवनाथ का मोक्ष
१२ ,, अभिनन्दन का तप
१३ ,, धर्मनाथका जन्म व तप
१४ ,, अभिनन्दन का जन्म

फाल्गुन कृष्णा—
६ श्री सुपार्श्वनाथ का ज्ञान
७ ,, पद्मप्रभ का मोक्ष
(फाल्गुन वदी ४ चाहिये)
७ ,, सुपार्श्वनाथ का मोक्ष
८ ,, संभवनाथका गर्भ
(फागुन सुदी ८ चाहिये)
९ ,, चंद्र प्रभ का ज्ञान
(फागुन वदी ७ चाहिये)
९ ,, पुष्पदन्त का गर्भ
११ ,, आदिनाथ का ज्ञान
११ ,, श्रेयांसनाथ का जन्म व तप
१२ ,, मुनिसुव्रत का मोक्ष

फाल्गुन शुक्ला—
३ श्री अरनाथ का जन्म
५ ,, मल्लिनाथका मोक्ष
७ ,, चन्द्रप्रभ का मोक्ष
(फाल्गुन वदी ७ चाहिये)
१४ श्रीवासुपूज्यका जन्म व तप

चैत्र कृष्णा—
३ श्री कुन्थुनाथ का ज्ञान
४ ,, पार्श्वनाथ का ज्ञान
१५ ,, चन्द्रप्रभ का गर्भ
८ ,, शीतलनाथका गर्भ
९ ,, आदिनाथकाजन्म व तप
३० ,, अनन्तनाथ का ज्ञान व मोक्ष
३० ,, अरनाथ का मोक्ष

चैत्र शुक्ला—
१ ,, मल्लिनाथ का गर्भ
५ ,, अजितनाथ का मोक्ष
११ ,, सुमतिनाथका जन्म ज्ञान व मोक्ष
१३ ,, महावीर का जन्म
१५ ,, पद्मप्रभ का ज्ञान

वैशाख कृष्णा—
२ श्री पार्श्वनाथ का गर्भ
९ ,, मुनिसुव्रतका ज्ञान
१० ,, ,, जन्म व तप
१४ ,, नमिनाथ का मोक्ष

वैशाख शुक्ला—
१ ,, कुन्थुनाथ का जन्म तप व मोक्ष
६ ,, अभिनन्दन का मोक्ष
८ ,, ,, गर्भ
(वैशाख सुदी ६ चाहिये)
९ ,, सुमतिनाथ का तप
१० ,, महावीर का ज्ञान
१३ ,, धर्मनाथ का गर्भ
(वैशाख वदी १३ चाहिये)

ज्येष्ठ कृष्णा—
६ ,, श्रेयांसनाथ का गर्भ
१० ,, विमलनाथ का गर्भ
१२ ,, अनन्तनाथका जन्म व तप
१४ ,, शांतिनाथ का जन्म तप व मोक्ष
३० ,, सुमतिनाथ का गर्भ

ज्येष्ठ शुक्ला—
४ ,, धर्मनाथ का मोक्ष
१२ ,, सुपार्श्वनाथ का जन्म व तप

आषाढ़ कृष्णा—
२ ,, आदिनाथ का गर्भ
६ ,, वासुपूज्य का गर्भ
८ ,, विमलनाथ का मोक्ष
१० ,, नमिनाथका जन्म व तप

आषाढ़ शुक्ला—
६ ,, महावीर का गर्भ
७ ,, नेमिनाथ का मोक्ष

तीर्थंकरों के ज्ञातव्य विषय



नं०	नाम	चिह्न	जन्मनगरी	ऊंचाई	पिता	माता	आयु
१	आदिनाथ	वृषभ	अयोध्या	५००धनुष	नाभिराजा	मरुदेवी	८४ लाखपूर्व
२	अजितनाथ	गज	,,	४५० ध.	जितशत्रु	विजयसेना	७२ ,,
३	संभवनाथ	घोड़ा	श्रीवस्ती	४०० ध.	जितारि	सुसेना	६० ,,
४	अभिनंदन	बंदर	अयोध्या	३५० ध	संवर	सिद्धार्थी	५० ,,
५	सुमतिनाथ	चकवा	,,	३०० ध.	मेघप्रभ	मंगला	४० ,,
६	पद्मप्रभ	कमल	कौशांबी	२५० ध.	धारण	सुसीमा	३० ,,
७	सुपार्श्वनाथ	साथिया	बनारस	२०० ध.	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	२० ,,
८	चंद्रप्रभ	चंद्रमा	चन्द्रपुरी	१५० ध.	महासेन	सुलक्षणा	१० ,,
९	पुष्पदन्त	मगर	काकन्दी	१०० ध.	सुग्रीव	रमा	२ ,,
१०	शीतलनाथ	श्रीवृक्ष	भद्दिलपुर	९० ध.	दृढ़रथ	सुनंदा	१ ,,
११	श्रेयांसनाथ	गेंडा	सिंहपुर	८० ध.	विमल	विमला	८४ लाखवर्ष
१२	वासुपूज्य	भैंसा	चम्पापुरी	७० ध.	वसुपूज्य	विजया	७२ ,,
१३	विमलनाथ	शूकर	कपिला	६० ध.	सुकृतवर्मा	श्यामा	६० ,,
१४	अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	५० ध.	हरिषेण	सुरजा	५० ,,
१५	धर्मनाथ	वज्र	रत्नपुर	४५ ध.	भानु	सुव्रता	१० ,,
१६	शान्तिनाथ	मृग	हस्तिनापुर	४० ध.	विश्वसेन	ऐरा	१ ,,
१७	कुन्थुनाथ	बकरा	,,	३५ ध.	शूरराजा	श्रीमती	९५००० वर्ष
१८	अरहनाथ	मीन	,,	३० ध.	सुदर्शन	मित्रा	८०००० ,,
१९	मल्लिनाथ	कलश	मिथला	२५ ध.	कुम्भ	प्रजावती	५५००० ,,
२०	मुनिसुव्रत	कछवा	राजगृही	२० ध.	सुमंत्र	श्यामा	३०००० ,,
२१	नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	१५ ध.	विजयरथ	विपुला	१०००० ,,
२२	नेमिनाथ	शंख	द्वारिका	१० ध.	समुद्रविजय	शिवा	१००० ,,
२३	पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	९ हाथ	अश्वसेन	वामा	१०० ,,
२४	महावीर	सिंह	पावापुरी	७ हाथ	सिद्धाथ	त्रिशला	७२ ,,

नोट:—ये सब विषय इन्हीं पूजा के स्थापना में से लिखे गये हैं।

नं. १२, १९, २२, २३, २४ के बालब्रह्मचारी की हैं।

नं ६ के लालवर्ण, ७, २० के हरितवर्ण, ८, ९ के शुक्लवर्ण, २२, २३ के श्यामवर्ण व शेष सब स्वर्ण वर्ण हैं।

नं. १६, १७, १८ के कुरुवंशी २०, २२ के हरिवंशी व शेष सब इक्ष्वाकुवंशी हैं।

नं. १ कैलास से, पद्मासन से, १२ के चम्पापुरी से, पद्मासन से, २२ के गिरनार से, पद्मासन से और नं. २४ के पावापुरी से व शेष सब सम्मेद शिखर से, खड्गासन से मुक्ति पधारे हैं।

सावित्र प्रेस, जबलपुर ।